

Holy Bible

Aionian Edition®

उर्दू بائیبل، دےواناگری

**Urdu Bible, Devanagari
Gospel Primer**

फहरीस्त

तास्फ

पैदाइश 1-4

यूहन्ना 1-21

मुकाशफा 19-22

66 Verses

रीडर्स गाईड

लगत

नक्शे

मुकर्रर

मिसाल, Doré

Welcome to the *Gospel Primer*. The Aionian Bible invites you to review popular Christian understanding. Is it possible that the most well-known verse in the Bible is mistranslated, John 3:16? Are the destinies of Heaven and Hell really the whole story? And are misunderstandings of this magnitude even possible? First, know that the Aionian Bible does not abandon Christian heritage. We have much to learn from godly people throughout all ages. Yet, this booklet is a new primer to the truly good news of Jesus Christ, the savior of all mankind.

Holy Bible Aionian Edition ®

उर्दू बाइबिल, देवनागरी

Urdu Bible, Devanagari
Gospel Primer

Creative Commons Attribution ShareAlike 4.0 International, 2018-2025

Source text: eBible.org

Source version: 12/28/2024

Source copyright: Creative Commons Attribution ShareAlike 4.0.
Bridge Connectivity Solutions, 2017

Formatted by Speedata Publisher 4.21.5 (Pro) on 1/28/2025

100% Free to Copy and Print

TOR Anonymously

<https://AionianBible.org>

Published by Nainoia Inc, <https://Nainoia-Inc.signedon.net>

All profits are given to <https://CoolCup.org>

We pray for a modern Creative Commons translation in every language
Translator resources at <https://AionianBible.org/Third-Party-Publisher-Resources>

Report content and format concerns to Nainoia Inc

Volunteer help is welcome and appreciated!

તारुक

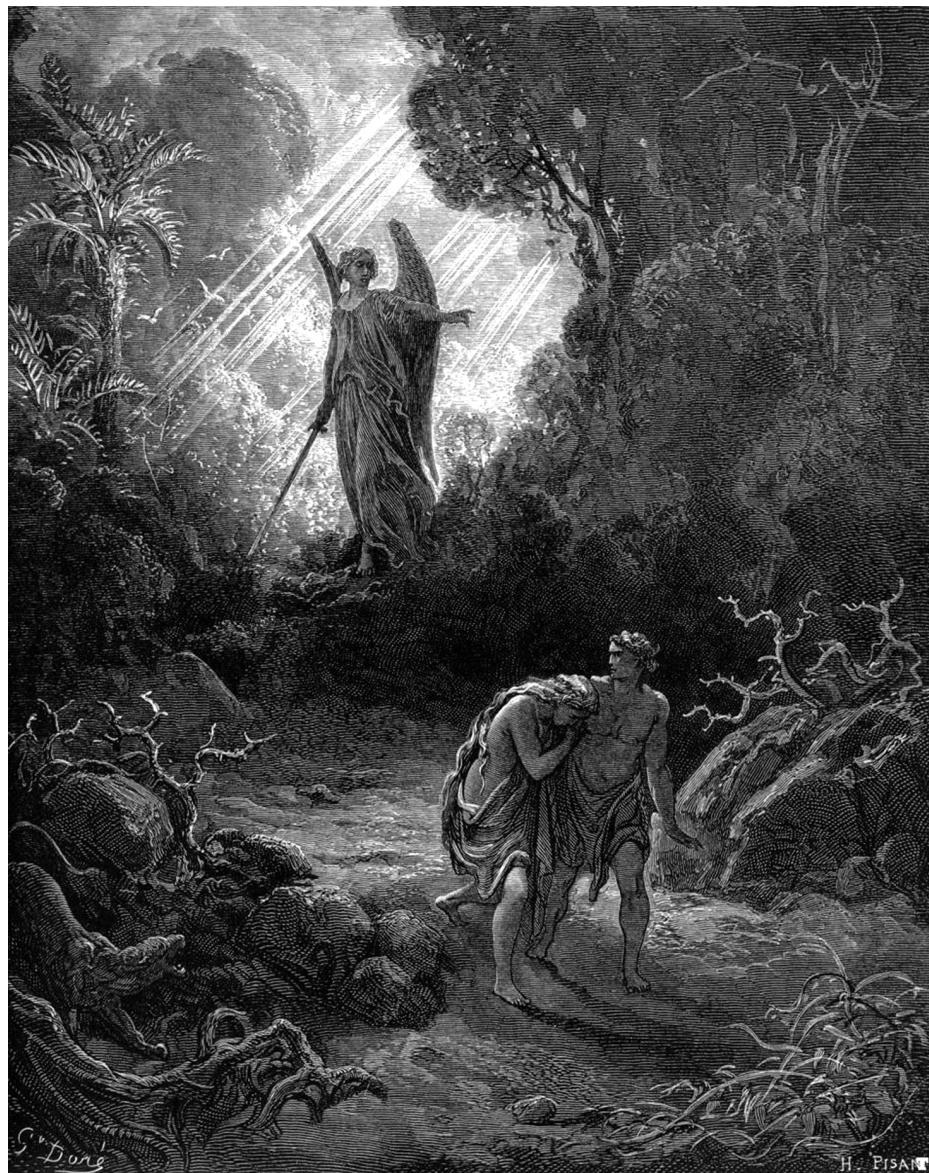
उद्दृत at AionianBible.org/Preface

The *Holy Bible Aionian Edition* ® is the world's first Bible *un-translation!* What is an *un-translation?* Bibles are translated into each of our languages from the original Hebrew, Aramaic, and Koine Greek. Occasionally, the best word translation cannot be found and these words are transliterated letter by letter. Four well known transliterations are *Christ*, *baptism*, *angel*, and *apostle*. The meaning is then preserved more accurately through context and a dictionary. The Aionian Bible un-translates and instead transliterates eleven additional Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and all mankind, and the nature of afterlife destinies.

The first three words are *aiōn*, *aiōnios*, and *aīdios*, typically translated as *eternal* and also *world* or *eon*. The Aionian Bible is named after an alternative spelling of *aiōnios*. Consider that researchers question if *aiōn* and *aiōnios* actually mean *eternal*. Translating *aiōn* as *eternal* in Matthew 28:20 makes no sense, as all agree. The Greek word for *eternal* is *aīdios*, used in Romans 1:20 about God and in Jude 6 about demon imprisonment. Yet what about *aiōnios* in John 3:16? Certainly we do not question whether salvation is *eternal*! However, *aiōnios* means something much more wonderful than infinite time! Ancient Greeks used *aiōn* to mean *eon* or *age*. They also used the adjective *aiōnios* to mean *entirety*, such as *complete* or even *consummate*, but never infinite time. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs. So *aiōnios* is the perfect description of God's Word which has *everything* we need for life and godliness! And the *aiōnios* life promised in John 3:16 is not simply a ticket to *eternal* life in the future, but the invitation through faith to the *consummate* life beginning now!

The next seven words are *Sheol*, *Hadēs*, *Geenna*, *Tartaroō*, *Abyssos*, and *Limnē Pyr*. These words are often translated as *Hell*, the place of eternal punishment. However, *Hell* is ill-defined when compared with the Hebrew and Greek. For example, *Sheol* is the abode of deceased believers and unbelievers and should never be translated as *Hell*. *Hadēs* is a temporary place of punishment, Revelation 20:13-14. *Geenna* is the Valley of Hinnom, Jerusalem's refuse dump, a temporal judgment for sin. *Tartaroō* is a prison for demons, mentioned once in 2 Peter 2:4. *Abyssos* is a temporary prison for the Beast and Satan. Translators are also inconsistent because *Hell* is used by the King James Version 54 times, the New International Version 14 times, and the World English Bible zero times. Finally, *Limnē Pyr* is the Lake of Fire, yet Matthew 25:41 explains that these fires are prepared for the Devil and his angels. So there is reason to review our conclusions about the destinies of redeemed mankind and fallen angels.

The eleventh word, *eleēsē*, reveals the grand conclusion of grace in Romans 11:32. Please understand these eleven words. The original translation is unaltered and a highlighted note is added to 64 Old Testament and 200 New Testament verses. To help parallel study and Strong's Concordance use, apocryphal text is removed and most variant verse numbering is mapped to the English standard. We thank our sources at eBible.org, Crosswire.org, unbound.Biola.edu, Bible4u.net, and NHEB.net. The Aionian Bible is copyrighted with creativecommons.org/licenses/by/4.0/, allowing 100% freedom to copy and print, if respecting source copyrights. Check the Reader's Guide and read at AionianBible.org, with Android, and with TOR network. Why purple? King Jesus' Word is royal and purple is the color of royalty! All profits are given to CoolCup.org.



चुनाँचे उसने आदम को निकाल दिया और बाग — ए — 'अदन के मशरिक की तरफ कस्बियों को और चारों तरफ घूमने वाली शोलाजन तलवार को रख्खा, कि वह जिन्दगी के दरखत की गाह की हिफाजत करें।

पैदाइश 3:24

पैदाइश

1 खुदा ने सबसे पहले जमीन — ओ — आसमान को पैदा किया।

और खुदा ने उनको यह कह कर बरकत दी कि फलो और बढ़ो और इस समुन्दरों के पानी को भर दो, और परिन्दे जमीन पर बहुत अधिक वीरान और सुनसान थी और गहराओं के ऊपर हुआ। 24 और खुदा ने कहा कि जमीन जानदारों को, उनकी किस्म अन्धेरा था: और खुदा की स्थ पानी की सतह पर जुम्बिश करती थी। के मुताबिक, चौपाये और रेंगनेवाले जानदार और जंगली जानवर 3 और खुदा ने कहा कि रोशनी हो जा, और रोशनी हो गई। 4 और उनकी किस्म के मुताबिक पैदा करे, और ऐसा ही हुआ। 25 और खुदा ने देखा कि रोशनी अच्छी है, और खुदा ने रोशनी को अँधेरे से खुदा ने जंगली जानवरों और चौपायों को उनकी किस्म के मुताबिक जुदा किया। 5 और खुदा ने रोशनी को तो दिन कहा और अँधेरे को और जमीन के रेंगने वाले जानदारों को उनकी किस्म के मुताबिक रात। और शाम हुई और सुबह हुई तब पहला दिन हुआ। 6 और बनाया; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। 26 फिर खुदा ने कहा कि खुदा ने कहा कि पानियों के बीच फजा हो ताकि पानी, पानी से जदा हम इंसान को अपनी सूरत पर अपनी शब्दी की तरह बनाएँ और वह हो जाए। 7 फिर खुदा ने फजा को बनाया और फजा के नीचे के समुन्दर की मछलियों और आसमान के परिन्दों और चौपायों, और पानी को फजा के ऊपर के पानी से जुदा किया; और ऐसा ही हुआ। तमाम जमीन और सब जानदारों पर जो जमीन पर रेंगते हैं इश्खितयार 8 और खुदा ने फजा को आसमान कहा। और शाम हुई और सुबह रख्खों। 27 और खुदा ने इंसान को अपनी सूरत पर पैदा किया खुदा हुई — तब दूसरा दिन हुआ। 9 और खुदा ने कहा कि आसमान के की सूरत पर उसको पैदा किया — नर — ओ — नारी उनको पैदा नीचे का पानी एक जगह जमा हो कि खुशकी नज़र आए, और ऐसा किया। 28 और खुदा ने उनको बरकत दी और कहा कि फलो और ही हुआ। 10 और खुदा ने खुशकी को जमीन कहा और जो पानी बढ़ो और जमीन को भर दो और हक्कमत करो और समुन्दर की जमा हो गया था उसको समुन्दर; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। मछलियों और हवा के परिन्दों और कुल जानवरों पर जो जमीन 11 और खुदा ने कहा कि जमीन घास और बीजदार बृद्धियों को, और पर चलते हैं इश्खितयार रख्खों। 29 और खुदा ने कहा कि देखो, मैं फलदार दरखतों को जो अपनी — अपनी किस्म के मुताबिक फलें तमाम स्तर पर जमीन की कुल बीजदार सब्जी और हर दरखत और जो जमीन पर अपने आप ही में बीज रख्खें उगाए और ऐसा ही जिसमें उसका बीजदार फल हो, तुम को देता हूँ; यह तुम्हारे खाने को हुआ। 12 तब जमीन ने घास, और बृद्धियों को, जो अपनी हों। 30 और जमीन के कुल जानवरों के लिए, और हवा के कुल अपनी किस्म के मुताबिक बीज रख्खें और फलदार दरखतों को परिन्दों के लिए और उन सब के लिए जो जमीन पर रेंगने वाले हैं जिनके बीज उन की किस्म के मुताबिक उनमें हैं उगाया; और खुदा जिसमें जिन्दगी का दम है, कुल हरी बृद्धियाँ खाने को देता हूँ, और ने देखा कि अच्छा है। 13 और शाम हुई और सुबह हुई — तब ऐसा ही हुआ। 31 और खुदा ने सब पर जो उसने बनाया था नज़र तीसरा दिन हुआ। 14 और खुदा ने कहा कि फलक पर सितारे हों की, और देखा कि बहुत अच्छा है, और शाम हुई और सुबह हुई तब कि दिन को रात से अलग करें; और वह निशान और जमाने और छठा दिन हुआ।

दिनों और बरसों के फ्रक्के के लिए हों। 15 और वह फलक पर रोशनी के लिए हों कि जमीन पर रोशनी डालें, और ऐसा ही हुआ। 16 फिर खुदा ने दो बड़े चमकदार सितारे बनाएँ; एक बड़ा चमकदार सितारा, कि दिन पर हक्कम करे और एक छोटा चमकदार सितारा कि रात पर हक्कम करे और उसने सितारों को भी बनाया। 17 और खुदा ने उनको फलक पर रख्खा कि जमीन पर रोशनी डालें, 18 और दिन पर और रात पर हक्कम करें, और उजाले को अँधेरे से जुदा करें; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। 19 और शाम हुई और सुबह हुई — तब चौथा दिन हुआ। 20 और खुदा ने कहा कि पानी जानदारों को कसरत से पैदा करे, और परिन्दे जमीन के ऊपर फजा में उड़ें। 21 और खुदा ने बड़े बड़े दरियाँ जानवरों को, और हर किस्म के जानदार को जो पानी से बक्सरत पैदा हुए थे, उनकी किस्म के मुताबिक और हर किस्म के परिन्दों को उनकी किस्म के मुताबिक, पैदा किया; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। 22

और खुदा ने उनको यह कह कर बरकत दी कि फलो और बढ़ो और इस समुन्दरों के पानी को भर दो, और परिन्दे जमीन पर बहुत अधिक वीरान और सुनसान थी और गहराओं के ऊपर हुआ। 24 और खुदा ने कहा कि जमीन जानदारों को, उनकी किस्म अँधेरा था: और खुदा की स्थ पानी की सतह पर जुम्बिश करती थी। के मुताबिक, चौपाये और रेंगनेवाले जानदार और जंगली जानवर 3 और खुदा ने कहा कि रोशनी हो जा, और रोशनी हो गई। 4 और उनकी किस्म के मुताबिक पैदा करे, और ऐसा ही हुआ। 25 और खुदा ने देखा कि रोशनी अच्छी है, और खुदा ने रोशनी को अँधेरे से खुदा ने जंगली जानवरों और चौपायों को उनकी किस्म के मुताबिक जुदा किया। 5 और खुदा ने रोशनी को तो दिन कहा और अँधेरे को और जमीन के रेंगने वाले जानदारों को उनकी किस्म के मुताबिक रात। और शाम हुई और सुबह हुई तब पहला दिन हुआ। 6 और बनाया; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। 26 फिर खुदा ने कहा कि खुदा ने कहा कि पानियों के बीच फजा हो ताकि पानी, पानी से जदा हम इंसान को अपनी सूरत पर अपनी शब्दी की तरह बनाएँ और वह हो जाए। 7 फिर खुदा ने फजा को बनाया और फजा के नीचे के समुन्दर की मछलियों और आसमान के परिन्दों और चौपायों, और पानी को फजा के ऊपर के पानी से जुदा किया; और ऐसा ही हुआ। तमाम जमीन और सब जानदारों पर जो जमीन पर रेंगते हैं इश्खितयार 8 और खुदा ने फजा को आसमान कहा। और शाम हुई और सुबह रख्खों। 27 और खुदा ने इंसान को अपनी सूरत पर पैदा किया खुदा हुई — तब दूसरा दिन हुआ। 9 और खुदा ने कहा कि आसमान के की सूरत पर उसको पैदा किया — नर — ओ — नारी उनको पैदा नीचे का पानी एक जगह जमा हो कि खुशकी नज़र आए, और ऐसा किया। 28 और खुदा ने उनको बरकत दी और कहा कि फलो और ही हुआ। 10 और खुदा ने खुशकी को जमीन कहा और जो पानी बढ़ो और जमीन को भर दो और हक्कमत करो और समुन्दर की जमा हो गया था उसको समुन्दर; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। मछलियों और हवा के परिन्दों और कुल जानवरों पर जो जमीन 11 और खुदा ने कहा कि जमीन घास और बीजदार बृद्धियों को, और पर चलते हैं इश्खितयार रख्खों। 29 और खुदा ने कहा कि देखो, मैं फलदार दरखतों को जो अपनी — अपनी किस्म के मुताबिक फलें तमाम स्तर पर जमीन की कुल बीजदार सब्जी और हर दरखत और जो जमीन पर अपने आप ही में बीज रख्खें उगाए और ऐसा ही जिसमें उसका बीजदार फल हो, तुम को देता हूँ; यह तुम्हारे खाने को हुआ। 12 तब जमीन ने घास, और बृद्धियों को, जो अपनी हों। 30 और जमीन के कुल जानवरों के लिए, और हवा के कुल अपनी किस्म के मुताबिक बीज रख्खें और फलदार दरखतों को परिन्दों के लिए और उन सब के लिए जो जमीन पर रेंगने वाले हैं जिनके बीज उन की किस्म के मुताबिक उनमें हैं उगाया; और खुदा जिसमें जिन्दगी का दम है, कुल हरी बृद्धियाँ खाने को देता हूँ, और ने देखा कि अच्छा है। 13 और शाम हुई और सुबह हुई — तब ऐसा ही हुआ। 31 और खुदा ने सब पर जो उसने बनाया था नज़र तीसरा दिन हुआ। 14 और खुदा ने कहा कि फलक पर सितारे हों की, और देखा कि बहुत अच्छा है, और शाम हुई और सुबह हुई तब कि दिन को रात से अलग करें; और वह निशान और जमाने और छठा दिन हुआ।

2 तब आसमान और जमीन और उनके कुल लश्कर का बनाना खत्म हुआ। 2 और खुदा ने अपने काम को, जिसे वह करता था सातवें दिन खत्म किया, और अपने सारे काम से जिसे वह कर रहा था, सातवें दिन फारिगा हुआ। 3 और खुदा ने सातवें दिन को बरकत दी, और उसे मुक्तिप्राप्त ठहराया; क्यूँकि उसमें खुदा सारी कायानात से जिसे उसने पैदा किया और बनाया फारिगा हुआ। 4 यह है आसमान और जमीन की पैदाइश, जब वह पैदा हुए जिस दिन खुदावन्द खुदा ने जमीन और आसमान को बनाया; 5 और जमीन पर अब तक खेत का कोई पौधा न था और न मैदान की कोई सब्जी अब तक उगी थी, क्यूँकि खुदावन्द खुदा ने जमीन पर पानी नहीं बरसाया था, और न जमीन जोतने को कोई इंसान था। 6 बल्कि जमीन से कुहर उठती थी, और तमाम स्तर पर जमीन को सेराब करती थी। 7 और खुदावन्द खुदा ने जमीन की मिट्टी से इंसान को बनाया और उसके नथनों में जिन्दगी का दम फूँका इंसान जीती जान हुआ। 8 और

खुदावन्द खुदा ने मशरिक की तरफ अदन में एक बाग लगाया और 4 तब साँप ने 'औरत से कहा कि तुम हरणिज़ न मरोगो! 5 बल्कि इंसान को जिसे उसने बनाया था वहाँ रखवा। 9 और खुदावन्द खुदा खुदा जानता है कि जिस दिन तुम उसे खाओगे, तुम्हारी आँखें खुल ने हर दरखत को जो देखने में खुशनुमा और खाने के लिए अच्छा था जाएँगी, और तुम खुदा की तरह भले और बुरे के जानने वाले बन जमीन से उगाया और बाग के बीच में जिन्दगी का दरखत और भले जाओगे। 6 'औरत ने जो देखा कि वह दरखत खाने के लिए अच्छा और बुरे की पहचान का दरखत भी लगाया। 10 और अदन से एक और आँखों को रुशनुमा मालमू स्रोत है और अकल बख्ताने के दरिया बाग के सेगड़ करने को निकला और वहाँ से चार नदियों में लिए खबू हैं तो उसके फल में से लिया और खाया और अपने शौहर तकसीम हुआ। 11 पहली का नाम फैसन है जो हवीला की सारी को भी दिया और उसने खाया। 7 तब दोनों की आँखें खुल गईं और जमीन को जहाँ सोना होता है धेरे हुए है। 12 और इस जमीन का उनको मालमू हुआ कि वह नंगे हैं और उन्होंने अंजीर के पतों को सोना चोखा है। और वहाँ मोती और संग-ए-सुलेमानी भी हैं। 13 सी कर अपने लिए टंगियाँ बनाईं। 8 और उन्होंने खुदावन्द खुदा और दूसरी नदी का नाम जैहन है, जो कूश की सारी जमीन को धेरे की आवाज जो ठंडे बक्त बाग में फिरता था सुनी और आदम और हुए है। 14 और तीसरी नदी का नाम डिजला है जो अस्र के मशरिक उसकी बीबी ने अपने आप को खुदावन्द खुदा के सामने से बाग के को जाती है। और चौथी नदी का नाम फ़रात है। 15 और खुदावन्द दरखतों में छिपाया। 9 तब खुदावन्द खुदा ने आदम को पुकारा खुदा ने आदम को लेकर बाग — ए — 'अदन में रखवा के उसकी और उससे कहा कि तू कहाँ है? 10 उसने कहा, मैंने बाग में तेरी बागवानी और निगहबानी करे। 16 और खुदावन्द खुदा ने आदम को आवाज सुनी और मैं डरा क्यूँकि मैं नंगा था और मैंने अपने आप को हृक्षि दिया और कहा कि तू बाग के हर दरखत का फल बे रोक टोक छिपाया। 11 उसने कहा, तुझे किसने बताया कि तू नंगा है? क्या तूने खा सकता है। 17 लेकिन भले और बुरे की पहचान के दरखत का उस दरखत का फल खाया जिसके बारे में मैंने तुझ को हृक्षि दिया था कभी न खाना क्यूँकि जिस रोज़ तूने उसमें से खायेगा तू मर जायेगा। कि उसे न खाना? 12 आदम ने कहा कि जिस 'औरत को तूने मेरे 18 और खुदावन्द खुदा ने कहा कि आदम का अकेला रहना अच्छा साथ किया है उसने मुझे उस दरखत का फल दिया और मैंने खाया। नहीं मैं उसके लिए एक मददगार उसकी तरह बनाऊँगा। 19 और 13 तब खुदावन्द खुदा ने, 'औरत से कहा कि तुने यह क्या किया? खुदावन्द खुदा ने सब जंगली जानवर और हवा के सब परिदेश मिट्टी 'औरत ने कहा कि साँप ने मुझ को बहकाया तो मैंने खाया। 14 और से बनाए और उनको आदम के पास लाया कि देखे कि वह उनके खुदावन्द खुदा ने साँप से कहा, इसलिए कि तूने यह किया तू सब क्या नाम रखता है और आदम ने जिस जानवर को जो कहा वही चौपायें और जंगली जानवरों में ला'नती ठहरा; तू अपने पेट के उसका नाम ठहरा। 20 और आदम ने सब जंगली जानवरों और हवा के बल चलेगा, और अपनी उम्र भर खाक चाटेगा। 15 और मैं तेरे परिदेशों और सब जंगली जानवरों के नाम रख लेकिन आदम के और 'औरत के बीच और तेरी नसल और औरत की नसल के बीच लिए कोई मददगार उसकी तरह न मिला। 21 और खुदावन्द खुदा ने 'अदावत डालूँगा वह तेरे सिर को कुचलेगा और तू उसकी एड़ी पर आदम पर गहरी नीद भेजी और वह सो गया और उसने उसकी काटेगा। 16 फिर उसने 'औरत से कहा कि मैं तेरे दर्द — ए — हम्ल पसलियों में से एक को निकाल लिया और उसकी जगह गोश भर को बहत बढ़ाऊँगा तू दर्द के साथ बच्चे जनेगी और तेरी रगबत दिया। 22 और खुदावन्द खुदा उस पसली से जो उसने आदम में से अपने शैदार की तरफ होगी और वह तुझ पर हृक्षमत करेगा। 17 निकाली थी एक 'औरत बना कर उसे आदम के पास लाया। 23 और आदम से उसने कहा चूँकि तूने अपनी बीबी की बात मानी और और आदम ने कहा कि यह तो अब मेरी हड्डियों में से हड्डी, और मेरे उस दरखत का फल खाया जिस के बारे मैंने तुझे हृक्षि दिया था कि गोशत में से गोशत है, इसलिए वह 'औरत कहलाएँगी क्यूँकि वह मर्द उसे न खाना इसलिए जमीन तेरी बजह से ला'नती है। मशक्कत के से निकाली गई। 24 इसलिए आदमी अपने माँ बाप को छोड़ेगा और साथ तू अपनी उम्र भर उसकी पैदावार खाएगा 18 और वह तेरे लिए अपनी बीबी से मिला रहेगा और वह एक तन होंगे। 25 और आदम कट्टी और ऊँटकट्टरे उगाएँगी और तू खेत की सब्ज़ी खाएगा। 19 तू और उसकी बीबी दोनों नंगे थे और शर्माते न थे।

अपने मूँछ के पसीने की रोटी खाएगा जब तक कि जमीन में तू फिर

लौट न जाए इसलिए कि तू उससे निकाला गया है क्यूँकि तू खाक है और खाक में फिर लौट जाएगा। 20 और आदम ने अपनी बीबी का

नाम हब्बा रखवा, इसलिए कि वह सब जिन्दों की माँ है। 21 और खुदावन्द खुदा ने आदम और उसकी बीबी के लिए चमड़े के कुर्ते बना कर उनको पहनाए। 22 और खुदावन्द खुदा ने कहा, देखो

इसान भले और बुरे की पहचान में हम में से एक की तरह हो गया: कहा है कि तुम न तो उसे खाना और न छूना वरना मर जाओगे।

अब कहीं ऐसा न हो कि वह अपना हाथ बढ़ाए और जिन्दगी के इलाके में जा बसा। 17 और क्राइन अपनी बीवी के पास गया और दरखत से भी कुछ लेकर खाए और हमेशा जिन्दा रहे। 23 इसलिए वह हामिला हुई और उसके हनूक पैदा हुआ; और उसने एक शहर खुदावन्द खुदा ने उसको बाग — ए — 'अदन से बाहर कर दिया, बसाया और उसका नाम अपने बेटे के नाम पर हनूक रख दिया। 18 ताकि वह उस जमीन की जिसमें से वह लिया गया था, खेती करे। और हनूक से ईराद पैदा हुआ, और ईराद से महयाएल पैदा हुआ, 24 चुरौंचे उसने आदम को निकाल दिया और बाग — ए — 'अदन और महयाएल से मतूसाएल पैदा हुआ, और मतूसाएल से लमक के मशरिक की तरफ कस्बियों को और चारों तरफ धूमने वाली पैदा हुआ। 19 और लमक दो औरतें ब्याह लाया: एक का नाम शोलाजन तलवार को रख दिया, कि वह जिन्दगी के दरखत की राह अदा और दूसरी का नाम जिल्ला था। 20 और अदा के याबल पैदा हुआ: वह उनका बाप था जो खेमों में रहते और जानवर पालते हैं। 21 और उसके भाई का नाम यूबल था: वह बीन और बांसली बजाने वालों का बाप था। 22 और जिल्ला के भी तूबलकाइन पैदा हुआ: जो पीतल और लोहे के सब तेज हथियारों का बनाने वाला था; और नामा तूबलकाइन की बहन थी। 23 और लमक ने अपनी बीवियों से कहा कि ऐ अदा और जिल्ला मेरी बात सुओ; ऐ लमक की बीवियों, मेरी बात पर कान लगाओ: मैंने एक आदमी को जिसने मुझे जरूरी किया, मार डाला। और एक जवान को जिसने मेरे चोट लगाई, कत्ल कर डाला। 24 अगर क्राइन का बदला सात गुना लिया जाएगा, तो लमक का सतर और सात गुना। 25 और आदम फिर अपनी बीवी के पास गया और उसके एक और बेटा हुआ और उसका नाम सेत रख दिया: और वह कहने लगी कि खुदा ने हाबिल के बदले जिसको क्राइन ने कत्ल किया, मुझे दूसरा फर्जन्द दिया। 26 और सेत के यहाँ भी एक बेटा पैदा हुआ, जिसका नाम उसने अनूस रख दिया; उस बक्त से लोग यहोवा का नाम लेकर दुआ करने लगे।

4 और आदम अपनी बीवी हव्वा के पास गया, और वह हामिला

हुई और उसके क्राइन पैदा हुआ। तब उसने कहा, मुझे खुदावन्द से एक फर्जन्द मिला। 2 फिर क्राइन का भाई हाबिल पैदा हुआ; और हाबिल भेड़ बकरियों का चरवाहा और क्राइन किसान था। 3 कुछ दिन के बाद ऐसा हुआ कि क्राइन अपने खेत के फल का हादिया खुदावन्द के लिए लाया। 4 और हाबिल भी अपनी भेड़ बकरियों के कुछ पहलौंठे बच्चों का और कुछ उनकी बच्ची का हादिया लाया। और खुदावन्द ने हाबिल को और उसके हादिये को कुबल किया, 5 लेकिन क्राइन को और उसके हादिये को कुबल न किया। इसलिए क्राइन बहुत गुस्सा हुआ और उसका मुँह बिगड़ा। 6 और खुदावन्द ने क्राइन से कहा, तू क्यूँ गुस्सा हुआ? और तेरा मुँह क्यूँ बिगड़ा हुआ है? 7 अगर तू भला करे तो क्या तू मक्कल न होगा? और अगर तू भला न करे तो तेरा गुनाह दरवाजे पर ढुकका बैठा है और तेरा मुश्तक है, लेकिन तू उस पर गालिब आ। 8 और क्राइन ने अपने भाई हाबिल को कुछ कहा और जब वह दोनों खेत में थे तो ऐसा हुआ कि क्राइन ने अपने भाई हाबिल पर हमला किया और उसे कत्ल कर डाला। 9 तब खुदावन्द ने क्राइन से कहा कि तेरा भाई हाबिल कहाँ है? उसने कहा, मुझे मालूम नहीं; क्या मैं अपने भाई का मुहाफिज हूँ? 10 फिर उसने कहा कि तूने यह क्या किया? तेरे भाई का खून जमीन से मुझे को पुकारता है। 11 और अब तू जमीन की तरफ से ला"नती हुआ, जिसने अपना मुँह पसारा कि तेरे हाथ से तेरे भाई का खून ले। 12 जब तू जमीन को जोतेगा, तो वह अब तुझे अपनी पैदावार न देगी और जमीन पर तू खानाखराब और आवारा होगा। 13 तब क्राइन ने खुदावन्द से कहा कि मेरी सज्जा बदीश्त से बाहर है। 14 देख, आज तुमे मुझे रु — ए — जमीन से निकाल दिया है, और मैं तेरे सामने से गायब हो जाऊँगा; और जमीन पर खानाखराब और आवारा रहँगा, और ऐसा होगा कि जो कोई मुझे पाएगा कल्प कर डालेगा। 15 तब खुदावन्द ने उसे कहा, नहीं, बल्कि जो क्राइन को कल्प करे उससे सात गुना बदला लिया जाएगा। और खुदावन्द ने क्राइन के लिए एक निशान ठहराया कि कोई उसे पा कर मार न डाले। 16 इसलिए, क्राइन खुदावन्द के सामने से निकल गया और अदन के मशरिक की तरफ नूट के



ईसा ने कहा, “ऐ बाप, इन्हें मुआफ़ कर, क्यूंकि यह जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।”

उन्होंने पचीं डाल कर उस के कपड़े आपस में बाँट लिए।

लक्षा 23:34

यूहन्ना

“मैं पानी से बपतिस्मा देता हूँ, तुम्हारे बीच एक शख्स खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते। 27 यांनी मेरे बाद का आनेवाला, जिसकी जूटी

1 इब्तिदा में कलाम था, और कलाम खुदा के साथ था, और का फ़ीता मैं खोलने के लायक नहीं।” 28 ये बातें यरदन के पार कलाम ही खुदा था। 2 यहीं शूरू में खुदा के साथ था। 3 सब बैत्र'अन्नियाह में वाकें हुईं, जहाँ युहन्ना बपतिस्मा देता था। 29 चीज़ें उसके वसीले से पैदा हुईं, और जो कुछ पैदा हुआ है उसमें से दूसरे दिन उसने ईसा 'को अपनी तरफ आते देखकर कहा, “देखो, ये कोई चीज़ भी उसके बगैर पैदा नहीं हुई।” 4 उसमें जिन्दगी थी और खुदा का बर्बाद है जो दुनियाँ का गुमाह उठा ले जाता है। 30 ये वहीं हैं जो ज़िन्दगी आदमियों का नूर थी। 5 और नूर तारीकी में चमकता जिसके बारे मैंने कहा था, ‘एक शख्स मेरे बाद आता है, जो मुझ से है, और तारीकी ने उसे कुबूल न किया। 6 एक आदमी युहन्ना नाम मुकद्दम ठहरा है, क्यूंकि वो मुझ से पहले था।” 31 और मैं तो उसे आ मौजूद हुआ, जो खुदा की तरफ से भेजा गया था; 7 ये गवाही के पहचानता न था, मगर इसलिए पानी से बपतिस्मा देता हुआ आया लिए आया कि नूर की गवाही दे, ताकि सब उसके वसीले से ईमान कि वो इमाईल पर जाहिर हो जाए।” 32 और युहन्ना ने ये गवाही लाएँ। 8 वो खुद तो नूर न था, मगर नूर की गवाही देने आया था। 9 दी: “मैंने स्थ को कबूतर की तरह आसमान से उत्तरते देखा है, और हकीकी नूर जो हर एक आदमी को रौशन करता है, दुनियाँ में आने वो उस पर ठहर गया। 33 मैं तो उसे पहचानता न था, मगर जिसने को था। 10 वो दुनियाँ में था, और दुनियाँ उसके वसीले से पैदा हुई, मुझे पानी से बपतिस्मा देने को भेजा उसी ने मुझ से कहा, ‘जिस पर और दुनियाँ ने उसे न पहचाना।’ 11 वो अपने घर आया और और तू स्थ को उत्तरते और ठहरते देखे, वहीं स्थ — उल — कूदूस से उसके अपनों ने उसे कुबूल न किया। 12 लेकिन जितनों ने उसे बपतिस्मा देनेवाला है। 34 चुनाँचे मैंने देखा, और गवाही दी है कि ये कुबूल किया, उसने उन्हें खुदा के फर्जन्द बनने का हक्क बरखा, खुदा का बेटा है।” 35 दूसरे दिन फिर युहन्ना और उसके शारीरों में यांनी उन्हें जो उसके नाम पर ईमान लाते हैं। 13 वो न खून से, न से दो शख्स खड़े थे, 36 उसने ईसा पर जो जा रहा था निगाह करके जिसम की ख्वाहिश से, न इंसान के इरादे से, बल्कि खुदा से पैदा कहा, “देखो, ये खुदा का बर्बाद है!” 37 वो दोनों शारीर उसको हुए। 14 और कलाम मुजस्सिम हुआ फजल और सच्चाई से भरकर ये कहते सुनकर ईसा के पीछे हो लिए। 38 ईसा ने फिरकर और हमारे दरमियान रहा, और हम ने उसका ऐसा जलाल देखा जैसा बाप उन्हें पीछे आते देखकर उनसे कहा, “तुम क्या ढूँढते हो?” उन्होंने के इकलौते का जलाल। 15 युहन्ना ने उसके बारे में गवाही दी, उससे कहा, “ऐ रब्बी (यांनी ऐ उस्ताद), तू कहाँ रहता है?” 39 और पुकार कर कहा है, “ये वही है, जिसका मैंने जिक्र किया कि उसने उनसे कहा, ‘चलो, देख लोगे।’ पस उन्होंने आकर उसके जो मेरे बाद आता है, वो मुझ से मुकद्दम ठहरा क्यूंकि वो मुझ से रहने की जगह देखी और उस रोज उसके साथ रहे, और ये चार पहले था।” 16 क्यूंकि उसकी भरपूरी में से हम सब ने पाया, यांनी बजे के करीब था। 40 उन दोनों में से जो युहन्ना की बात सुनकर फजल पर फजल। 17 इसलिए कि शरीर अत तो मूसा के जरिए दी ईसा के पीछे हो लिए थे, एक शमैन पतरस का भाई अन्दियास गई, मगर फजल और सच्चाई ईसा मसीह के जरिए पहुँची। 18 था। 41 उसने पहले अपने सगे भाई शमैन से मिलकर उससे कहा, खुदा को किसी ने कभी नहीं देखा, इकलौता बेटा जो बाप की गोद “हम को छिस्तस, यांनी मसीह मिल गया।” 42 वो उसे ईसा के में है उसी ने जाहिर किया। 19 और युहन्ना की गवाही ये है, कि पास लाया ईसा ने उस पर निगाह करके कहा, “तू युहन्ना का बेटा जब यहाँ अगुवो ने येस्शलेम से काहिन और लावी ये पूछने को शमैन है; तू कैफा यांनी पतरस कहलाएगा।” 43 दूसरे दिन ईसा ने उसके पास भेजे, “तू कौन है?” 20 तो उसने इकरार किया, और गलीत में जाना चाहा, और फिलिप्पुस से मिलकर कहा, “मैं पीछे इन्कार न किया बल्कि, इकरार किया, ‘मैं तो मसीह नहीं हूँ।’ हो ले।” 44 फिलिप्पुस, अन्दियास और पतरस के शहर, बैतैसैदा 21 उन्होंने उससे पूछा, “फिर तू कौन है? क्या तू एलियाह है?” का रहने वाला था। 45 फिलिप्पुस से नतनएल से मिलकर उससे उसने कहा, “मैं नहीं हूँ।” “क्या तू बीबी है?” उसने जवाब कहा, जिसका जिक्र मूसा ने तैरत में और नवियों ने किया है, वो हम दिया, कि “नहीं।” 22 पस उन्होंने उससे कहा, “फिर तू है कौन? को मिल गया; वो यूसुफ का बेटा ईसा नासरी है।” 46 नतनएल ने ताकि हम अपने भेजने वालों को जवाब दें कि, तू अपने हक्क में उससे कहा, “क्या नासरत से कोई अच्छी चीज़ निकल सकती क्या कहता है?” 23 मैं जैसा यसायाह नबी ने कहा, वीराने में है?” फिलिप्पुस ने कहा, “चलकर देख ले।” 47 ईसा ने नतनएल एक पुकारने वाले की अवाज हूँ, ‘तुम खुदा बन्द की राह को सीधा को अपनी तरफ आते देखकर उसके हक्क में कहा, “देखो, ये फिल करो।’” 24 ये फरीसियों की तरफ से भेजे गए थे। 25 उन्होंने उससे हकीकत इसाईली है। इस में मक्क नहीं।” 48 नतनएल ने उससे ये सवाल किया, “अगर तू न मसीह है, न एलियाह, न बीबी, तो कहा, “तू मुझे कहाँ से जानता है?” ईसा ने उसके जवाब में कहा, फिर बपतिस्मा क्यूँ देता है?” 26 युहन्ना ने जवाब में उनसे कहा, “इससे पहले के फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के दरखत

के नीचे था, मैंने तुझे देखा।” 49 नतनएल ने उसको जवाब दिया, और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा?” 21 मगर उसने अपने “ऐ रब्बी, तू खुदा का बेटा है! तू बादशाह का बादशाह है!” 50 ईसा बदन के माक्रिस के बारे में कहा था। 22 “पास जब वो मुर्दी में से ने जवाब में उससे कहा, “मैंने जो तुझ से कहा, ‘तुझ को अंजीर के जी उठा तो उसके शागिर्दों को याद आया कि उसने ये कहा था; और दरखत के नीचे देखा, ‘क्या। तू इसीलिए ईमान लाया है? तू इनसे भी उन्हेंने किताब — ए — मुकद्दस और उस कौल का जो ईसा ने बढ़े — बड़े मोजिजे देखेगा।” 51 फिर उससे कहा, “मैं तुम से सच कहा था, यकीन किया।” 23 जब वो येस्शलेम में फसह के बक्त बहता हूँ, कि आसमान को खुला और खुदा के फरिश्तों को ऊपर ‘ईद में था, तो बहुत से लोग उन मोजिजों को देखकर जो वो दिखाता जाते और इन — ए — आदम पर उतरते देखेगे।”

था उसके नाम पर ईमान लाए। 24 लेकिन ईसा अपनी निस्बत उस

पर ऐतिहास न करता था, इसलिए कि वो सबको जानता था। 25 और इसकी ज़स्तर न रखता था कि कोई इंसान के हक्क में गवाही दे, क्यूंकि वो आप जानता था कि इंसान के दिल में क्या क्या क्या है।

2 फिर तीसरे दिन काना — ए — गलील में एक शादी हुई और ईसा की माँ वहाँ थी। 2 ईसा और उसके शागिर्दों की भी उस शादी में दा’वत थी। 3 और जब पर्य खत्म हो चुकी, तो ईसा की माँ ने उससे कहा, “उनके पास मय नहीं रही।” 4 ईसा ने उससे कहा, “ऐ माँ मुझे तुझ से क्या काम है? अभी मेरा बक्त नहीं आया है।” 5 उसकी माँ ने खादिमों से कहा, “जो कुछ ये तुम से कहे गो है, क्यूंकि हम जानते हैं कि तू खुदा की तरफ से उस्ताद होकर आया करो।” 6 वहाँ यहदियों की पाकी के दस्तर के मुखाफिक पत्थर के है, क्यूंकि जो मोजिजे तू दिखाता है कोई शब्द नहीं दिखा सकता, छें: मटके रख थे, और उनमें दो — दो, तीन — तीन मन की जब तक खुदा उसके साथ न हो।” 3 ईसा ने जवाब में उससे कहा, गुंजाइश थी। 7 ईसा ने उससे कहा, “मटकों में पानी भर दो।” पर “मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि जब तक कोई नए सिरे से पैदा न हो, उन्होंने उनको पूरा भर दिया। 8 फिर उसने उन से कहा, “अब वो खुदा की बादशाही को देख नहीं सकता।” 4 नीकुदेमुस ने उससे निकाल कर मरि मजलिस के पास ले जाओ।” पर वो ले गए। 9 कहा, “आदमी जब बूढ़ा हो गया, तो क्यूँकर पैदा हो सकता है? जब मजलिस के सरदार ने वो पानी चखा, जो मय बन गया था और क्या वो देखारा अपनी माँ के पेट में दाखिल होकर पैदा हो सकता जानता न था कि ये कहाँ से आई है (मगर खादिम जिन्होंने पानी भरा है?)” 5 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझ से सच कहता हूँ, जब तक था जानते थे), तो मजलिस के सरदार ने दुल्हा को बुलाकर उससे कोई आदमी पानी और स्फ से पैदा न हो, वो खुदा की बादशाही में कहा, 10 “हर शब्द पहले अच्छी मय पेश करता है और नाकिस दाखिल नहीं हो सकता। 6 जो जिसम से पैदा हुआ है जिसम है, और उस बक्त जब पीकर छक गए, मगर तने अच्छी मय अब तक रख जो स्फ से पैदा हुआ है स्फ है। 7 ताँ अज्जुब न कर कि मैंने तुझ से छोड़ी है।” 11 ये पहला मोजिजा ईसा ने काना — ए — गलील में कहा, ‘तुम्हें नए सिरे से पैदा होना ज़स्तर है। 8 हवा जिधर चाहती है दिखाकर, अपना जलात ज़ाहिर किया और उसके शागिर्द उस पर चलती है और तू उसकी आवाज सुनता है, मगर नहीं कि वो कहाँ से ईमान लाए। 12 ईसके बाद वो और उसकी माँ और भाई और उसके आती और कहाँ को जाती है। जो कोई स्फ से पैदा हुआ ऐसा ही शागिर्द कफरनहम को गए और वहाँ चन्द रोज़ रहे। 13 यहदियों की है।” 9 नीकुदेमुस ने जवाब में उससे कहा, “ये बातें क्यूँकर हो ‘ईद — ए — फसह नज़दीकी थी, और ईसा येस्शलेम को गया। 14 सकती है?” 10 ईसा ने जवाब में उससे कहा, “बनी — ईसाईन का उसने हैकल में बैल और भेड़ और कबूतर बेचने वालों को, और उस्ताद होकर क्या तू इन बातों को नहीं जानता? 11 मैं तुझ से सच सारीकों को बैठे पाया; 15 फिर ईसा ने रसियों का कोड़ा बना कर कहता हूँ कि जो हम जानते हैं वो कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है सब को बैठ — उल — मुकद्दस से निकाल दिया, उसने भेड़ों और उसकी गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही कुबल नहीं करते। 12 गाय — बैलों को बाहर निकाल कर हाँक दिया, पैसे बदलने वालों जब मैंने तुम से ज़मीन की बातें कही और तुम ने यकीन नहीं किया, के सिक्के बिखेर दिए और उनकी मेंजे उलट दी। 16 और कबूल तो अगर मैं तुम से आसमान की बातें कहूँ तो क्यूँकर यकीन करेगे? फरोशों से कहा, “इनको यहाँ से ले जाओ! मेरे आसमानी बाप के 13 आसमान पर कोई नहीं चढ़ा, सिवा उसके जो आसमान से उत्तर घर को तिजारत का घर न बनाओ।” 17 उसके शागिर्दों को याद यानी इन — ए — आदम जो आसमान मैं है। 14 और जिस तरह आया कि लिखा है, तेरे घर की गैरत मुझे खा जाएगी।” 18 पर मूँगा ने पीतल के सॉप्पको वीराने में ऊँचे पर चढ़ाया, उसी तरह ज़स्तर कुछ यहदी अगुवों ने जवाब में उनसे कहा, “तू जो इन कामों को है कि इन — ए — आदम भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए; 15 ताकि जो करता है, हमें कौन सा निशान दिखाता है?” 19 ईसा ने जवाब में कोई ईमान लाए उसमें हमेशा की जिन्दगी पाए।” (aiōnios g166) उससे कहा, “इस हैकल को ढा दो, तो मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर 16 “क्यूँकि खुदा ने दुनियों से ऐसी मुहब्बत रखी कि उसने अपना दूँगा।” 20 यहदी अगुवों ने कहा, छियालीस बरस में ये बना है, इकलौता बेटा बर्भा दिया, ताकि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक

न हो, बल्कि हमेशा की ज़िन्दगी पाए। (aiōnios g166) 17 क्यूंकि है, 2 (अगर चे ईमा आप नहीं बल्कि उसके शारिर्द बपतिस्मा देते खुदा ने बेटे को दुनियाँ में इसलिए नहीं भेजा कि दुनियाँ पर सजा का थे), 3 तो वो यहदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया। 4 हृक्षम करे, बल्कि इसलिए कि दुनियाँ उसके बसीले से नजात पाए। और उसको सामरिया से होकर जाना ज़स्त था। 5 पस वो सामरिया 18 जो उस पर ईमान लाता है उस पर सजा का हृक्षम नहीं होता, जो के एक शहर तक आया जो सूखार कहलाता है, जो उस कितै के उस पर ईमान नहीं लाता उस पर सजा का हृक्षम हो चुका; इसलिए नज़दीक है जो याकूब ने अपने बेटे यसुफ को दिया था; 6 और कि वो खुदा के इकलौते बेटे के नाम पर ईमान नहीं लाया। 19 याकूब का कुआँ वही था। चुनाँचे ईसा सफर से थका — माँदा और सजा के हृक्षम की बजह ये है कि नूर दुनियाँ में आया है, और होकर उस कुँए पर वूँही बैठ गया। ये छठे घंटे के करीब था। 7 आदमियों ने तारीकी को नूर से ज्यादा पसन्द किया इसलिए कि सामरिया की एक 'औरत पानी भरने आई। ईसा ने उससे कहा, "मुझे उनके काम बुरे थे। 20 क्यूंकि जो कोई बदी करता है वो नूर से पानी पिला" 8 क्यूंकि उसके शारिर्द शहर में खाना खरीदने को दुश्मनी रखता है और नूर के पास नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके गए थे। 9 उस सामरी 'औरत ने उससे कहा, "तू यहदी होकर मुझ कामों पर मलामत की जाए। 21 मगर जो सचाई पर 'अमल करता सामरी 'औरत से पानी क्यूँ मँगता है?" (क्यूंकि यहदी सामरियों से है वो नूर के पास आता है, ताकि उसके काम जाहिर हों कि वो खुदा किसी तरह का बर्ताव नहीं रखते।) 10 ईसा ने जवाब में उससे कहा, मैं किए गए हैं।" 22 इन बातों के बाद ईसा और शारिर्द यहदिया के "अगर तू खुदा की बालिश को जानती, और ये भी जानती कि वो मुल्क में आए, और वो बहाँ उनके साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा। कौन है जो तुझे से कहता है, 'मुझे पानी पिला, 'तो तू उससे मँगती 23 और युहन्ना भी 'एनोन में बपतिस्मा देता था जो यरदन नदी के और वो तुझे ज़िन्दगी का पानी देता।'" 11 'औरत ने उससे कहा, "ऐ पासथा, क्यूंकि बहाँ पानी बहत था और लोग आकर बपतिस्मा लेते रहुदावन्द! तेरे पास पानी भरने को तो कुछ है नहीं और कुआँ गहरा थे। 24 (क्यूंकि यहन्ना उस बक्त तक कैदखाने में डाला न गया था) है, फिर वो ज़िन्दगी का पानी तेरे पास कहाँ से आया? 12 क्या तू 25 पस युहन्ना के शारिर्दों की किसी यहदी के साथ पाकीजगी के हमारे बाप याकूब से बड़ा है जिसने हम को ये कुआँ दिया, और खुद बरे में बहस हैं। 26 उन्होंने युहन्ना के पास आकर कहा, "ऐ, उसने और उसके बेटों ने और उसके जानवरों ने उसमें से पिया?" रब्बी! जो शख्स यरदन के पार तेरे साथ था, जिसकी तूमे गवाही दी 13 ईसा ने जवाब में उससे कहा, "जो कोई इस पानी में से पीता है वो है, देख, वो बपतिस्मा देता है और सब उसके पास आते हैं।" 27 फिर प्यासा होगा, 14 मगर जो कोई उस पानी में से पिया जो मैं उसे युहन्ना ने जवाब में कहा, इंसान कुछ नहीं पा सकता, जब तक दूँगा, वो अब तक प्यासा न होगा! बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा, वो उसको आसमान से न दिया जाए। 28 तुम खुद मेरे गवाह हो कि मैंने 15 औरत ने उस से कहा, "जो कोई इस पानी में से पीता है वो उसमें एक चश्मा बन जाएगा जो हमेशा की ज़िन्दगी के लिए जारी कहा, मैं मसीह नहीं, मगर उसके आगे भेजा गया हूँ। 29 जिसकी रहेगा।" (aiōn g165, aiōnios g166) 15 औरत ने उस से कहा, "ऐ दुल्हन है वो दुल्हा है, मगर दुल्हा का दोस्त जो खुदा हुआ उसकी खुदावन्द! वो पानी मुझ को दे ताकि मैंने न प्यासी हूँ, न पानी भरने को सुनता है, दुल्हा की आवाज से बहुत खुश होता है; पस मेरी ये खुशी यहाँ तक आऊँ।" 16 ईसा ने उससे कहा, "जा, अपने शौहर को पूरी हो गई। 30 ज़स्त है कि वो बढ़े और मैं घटूँ। 31 "जो ऊपर यहाँ खुला ला।" 17 'औरत ने जवाब में उससे कहा, "मैं बे शौहर से आता है वो सबसे ऊपर है। जो ज़मीन से है वो ज़मीन ही से है हूँ।" ईसा ने उससे कहा, "तुमें खब्र कहा, मैं बे शौहर हूँ, 18 क्यूंकि और ज़मीन ही की कहता है 'जो आसमान से आता है वो सबसे तू पाँच शौहर कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है वो तेरा शौहर ऊपर है। 32 जो कुछ उस ने खुद देखा और सुना है उसी की गवाही नहीं; ये तुमें सच कहा।" 19 औरत ने उससे कहा, "ऐ खुदावन्द! देता है। तो भी कोई उस की गवाही क़बूल नहीं करता। 33 जिसने मुझे मालम होता है कि त न बही है। 20 हमारे जाप — दादा ने इस उसकी गवाही क़बूल की उसने इस बात पर मूहर कर दी, कि खुदा पहाड़ पर इबादत की, और तुम कहते हो कि वो जगह जहाँ पर सच्चा है। 34 क्यूंकि जिसे खुदा ने भेजा वो खुदा की बातें कहता है, इबादत करना चाहिए येस्शलेम में है।" 21 ईसा ने उससे कहा, "ऐ इसलिए कि वो स्थ नाप नाप कर नहीं देता। 35 बाप बेटे से मुहब्बत बहन, मेरी बात का यकीन कर, कि वो बक्त आता है कि तुम न तो रखता है और उसने सब कीज़े उसके हाथ में दे दी है। 36 जो बेटे पर इस पाहाड़ पर बाप की इबादत करेगे और न येस्शलेम में। 22 तुम ईमान लाता है हमेशा की ज़िन्दगी उसकी है; लेकिन जो बेटे की जिसे नहीं जानते उसकी इबादत करते हो; और हम जिसे जानते हैं नहीं मानता 'ज़िन्दगी को न देखगा बल्कि उसपर खुदा का ग़ज़ब उसकी इबादत करते हैं; क्यूंकि नजात यहदियों में से है। 23 मगर वो रहता है।" (aiōnios g166)

4 फिर जब खुदावन्द को मालम हुआ, कि फ़रीसियों ने सुना है कि ईसा युहन्ना से ज्यादा शारिर्द बनाता है और बपतिस्मा देता

इबादत स्थ और सच्चाई से करेगे, क्यूंकि खुदा बाप अपने लिए ऐसे ही इबादतघर ढूँढ़ता है। 24 खुदा स्थ है, और ज़स्त है कि उसके

इबादतघर स्थ और सच्चाई से इबादत करें।” 25 'औरत ने उससे उसके पास गया और उससे दरख्बास्त करने लगा, कि चल कर मेरे कहा, “मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रिस्टसु कहलाता है आने वाला बेटे को शिफा बछण क्यौंकि वो मरने को था। 48 इसा ने उससे कहा, है, जब वो आएगा तो हमें सब बातें बता देगा।” 26 इसा ने उससे “जब तक तुम निशान और 'अजीब काम न देखो, हरगिज ईमान न कहा, “मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।” 27 इतने में उसके लाओगे।” 49 बादशाह के मुलाजिम ने उससे कहा, “ऐ खुदावन्द! शारिर्द आ गए और ताओं ज्ञज्ञब करने लगे कि वो 'औरत से बातें कर मेरे बच्चे के मरने से पहले चल।” 50 इसा ने उससे कहा, “जा; रहा है, तोभी किसी ने न कहा, “तू क्या चाहता है?” या, “उससे तेरा बेटा जिन्दा है।” उस शश्वत ने उस बात का यकीन किया जो किस लिए बातें करता है।” 28 पस 'औरत अपना घडा छोड़कर इसा ने उससे कही और चला गया। 51 वो रास्ते ही में था कि उसके शहर में चली गई और लोगों से कहने लगी, 29 “आओ, एक नौकर उसे मिले और कहने लगे, “तेरा बेटा जिन्दा है।” 52 उसने आदमी को देखो, जिसने मेरे सब काम मुझे बता दिए। क्या मुम्किन उनसे पूछा, “उसे किस बक्त से आराम होने लगा था?” उन्होंने है कि मसीह यही है?” 30 वो शहर से निकल तर उसके पास आने कहा, “कल एक बजे उसका बुखार उतर गया।” 53 पस बाप जान लगे। 31 इतने में उसके शारिर्द उससे ये दरख्बास्त करने लगे, “ऐ गया कि वही बक्त था जब इसा ने उससे कहा, “तेरा बेटा जिन्दा रह्बी! कुछ खा ले।” 32 लेकिन उसने कहा, “मेरे पास खाने के हैं।” और वो खुद और उसका सारा घराना ईमान लाया। 54 ये दूसरा लिए ऐसा खाना है जिसे तु मनहीं जानते।” 33 पस शारिर्दों ने करिस्मा है जो इसा ने यहदिया से गलील में आकर दिखाया।

आपस में कहा, “क्या कोई उसके लिए कुछ खाने को लाया है?”

34 इसा ने उनसे कहा, “मेरा खाना, ये है, कि अपने भेजनेवाले की मर्जी के मुताबिक 'अमल करूँ और उसका काम पूरा करूँ।' 35

क्या तुम कहते नहीं, 'फसल के अने में अभी चार महीने बाकी हैं?' देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर नजर करो कि फसल पक गई है।” 36 और काटनेवाला मजदूरी पाता और हमेशा की ज़िन्दगी के लिए फल जमा करता है, ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर खुशी करें। (alēnios g166) 37

क्यूँकि इस पर ये मिसाल ठीक आती है, 'बोनेवाला और काटनेवाला और।' 38 मैंने तुम्हें वो खेत काटने के लिए भेजा जिस पर तुम ने मेहनत नहीं की, औरों ने मेहनत की और तुम उनकी मेहनत के फल में शरीक हुए।” 39 और उस शहर के बहुत से सामरी उस 'औरत के कहने से, जिसने गवाही दी, उसने मेरे सब काम मुझे बता दिए, उस पर ईमान लाए। 40 पस जब वो सामरी उसके पास आए, तो उससे दरख्बास्त करने लगे कि हमारे पास रह। चुनाँचे वो दो रोज वहाँ रहा। 41 और उसके कलाम के जरिए से और भी बहुत सारे ईमान लाए। 42 और उस औरत से कहा “अब हम तेरे कहने ही से ईमान नहीं लाते क्यूँकि हम ने खुद सुन लिया और जानते हैं कि ये हकीकत में दुनिया का मुन्जी है।” 43 फिर उन दो दिनों के बाद वो वहाँ से होकर गलील को गया। 44 क्यूँकि इसा ने खुद गवाही दी कि नबी अपने बतन में इज्जत नहीं पाता। 45 पस जब वो गलील में आया तो गलियों ने उसे कुबल किया, इसलिए कि जितने काम उसने येस्शलेम में 'ईद के बक्त किए थे, उन्होंने उनको देखा था क्यूँकि वो भी 'ईद में गए थे। 46 पस फिर वो काना — ए — गलील में आया, जहाँ उसने पानी को मय बनाया था, और बादशाह का एक मुलाजिम था जिसका बेटा कफरनहम में बीमार था। 47 वो ये सुनकर कि ईसा यहदिया से गलील में आ गया है,

5 इन बातों के बाद यहदियों की एक 'ईद हुई और ईसा येस्शलेम को गया। 2 येस्शलेम में भेड़ दरवाजे के पास एक हौज है जो

'इन्हाँ में बैत हस्ता कहलाता है, और उसके पाँच बरामदेह हैं। 3 इनमें बहुत से बीमार और अनधे और लंगड़े और कमज़ोर लोग जो पानी के हिलने के इंतज़ार में पड़े थे। 4 [क्यूँकि बक्त पर खुदावन्द का फरिशता हौज पर उतर कर पानी हिलाया करता था। पानी हिलते ही जो कोई पहले उतरता सो शिफा पाता, उसकी जो कुछ बीमारी क्यूँ न हो।] 5 वहाँ एक शश्वत था जो अठीस बरस से बीमारी में मुनिला था। 6 उसको 'ईसा ने पड़ा देखा और ये जानकर कि वो बड़ी मुद्द से इस हालत में है, उसने कहा, “क्या तू तन्दस्त होना चाहता है?” 7 उस बीमार ने उसे जवाब दिया, “ऐ खुदावन्द! मेरे पास कोई आदमी नहीं कि जब पानी हिलाया जाए तो मुझे हौज में उतर दे, बल्कि मेरे पहुँचते पहुँचते दूसरा मुझ से पहले उतर पड़ता है।” 8 'ईसा ने उससे कहा, “उठ, और अपनी चारपाई उठाकर चल फिर।” 9 वो शश्वत फैरैन तन्दस्त हो गया, और अपनी चारपाई उठाकर चलने फिरने लगा। 10 वो दिन सबत का था। पस यहदी अगुवे उससे जिसने शिफा पाई थी कहने लगे, “आज सबत का दिन है, तुझे चारपाई उठाना जायज़ नहीं।” 11 उसने उन्हें जवाब दिया, जिसने मुझे तन्दस्त किया, उरी ने मुझे फरमाया, “अपनी चारपाई उठाकर चल फिर।” 12 उन्होंने उससे पूछा, “वो कौन कौन से टल गया था। 14 इन बातों के बाद वो ईसा को हैकल में मिला; उसने उससे कहा, “देख, तू तन्दस्त हो गया है। फिर गुनाह न करना, ऐसा न हो कि तुझपर इससे भी ज्यादा आपक आए।” 15 उस आदमी ने जाकर यहदियों को खबर दी कि जिसने मुझे तन्दस्त किया वो ईसा है। 16 इसलिए यहदी ईसा को

सताने लगे, क्यूंकि वो ऐसे काम सबत के दिन करता था। 17 लेकिन क्यूंकि जो काम बाप ने मुझे पूरे करने को दिए, यार्नी यही काम जो ईसा ने उनसे कहा, “मेरा आसमानी बाप अब तक काम करता है, मैं करता हूँ, वो मेरे गवाह है कि बाप ने मुझे भेजा है। 37 और बाप और मैं भी काम करता हूँ।” 18 इस वजह से यहदी और भी ज्यादा जिसने मुझे भेजा है, उसी ने मेरी गवाही दी है। तुम ने कभी उसकी उसे कल्पना की कोशिश करने लगे, कि वो न फ़क्त सबत का आवाज़ सुनी है और न उसकी सूत देखी; 38 और उस के कलाम हृष्म तोड़ता, बल्कि खुदा को खास अपना बाप कह कर अपने को अपने दिलों में काईम नहीं रखते, क्यूंकि जिसे उसने भेजा है आपको खुदा के बराबर बनाता था 19 पस ईसा ने उनसे कहा, “मैं उसका यकीन नहीं करते। 39 तुम किताब — ए — मुकद्दस में ढूँढ़ते तुम से सच कहता हूँ कि बेटा आप से कुछ नहीं कर सकता, सिवा हो, क्यूंकि समझते हो कि उसमें हमेशा की जिन्दगी तुम्हें मिलती है, उसके जो बाप को करते देखता है; क्यूंकि जिन कामों को वो करता और ये वो है जो मेरी गवाही देती है; (aiōnios g166) 40 फिर भी तुम है, उन्हें बेटा भी उसी तरह करता है। 20 इसलिए कि बाप बेटे को जिन्दगी पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते। 41 मैं आदमियों ‘अज्ञाज रखता है, और जितने काम खुद करता है उसे दिखाता है; से ‘इज्जत नहीं चाहता। 42 लेकिन मैं तुमको जानता हूँ कि तुम में बल्कि इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम ताँज़ब करो। खुदा की मुहब्बत नहीं। 43 मैं अपने आसमानी बाप के नाम से आया 21 क्यूंकि जिस तरह बाप मुर्दों को उठाता और जिन्दा करता है, हूँ और तुम मुझे कुबूल नहीं करते, अगर कोई और अपने ही नाम से उसी तरह बेटा भी जिन्हें चाहता है जिन्दा करता है। 22 क्यूंकि बाप आए तो उसे कुबूल कर लोगे। 44 तुम जो एक दूसरे से ‘इज्जत किसी की ‘अदालत भी नहीं करता, बल्कि उसने ‘अदालत का सारा चाहते हो और वो ‘इज्जत जो खुदा — ए — वाहिद की तरफ से काम बेटे के सुपुर्द किया है; 23 ताकि सब लोग बेटे की ‘इज्जत होती है नहीं चाहते, क्यूंकर ईमान ला सकते हो? 45 ये न समझो करें जिस तरह बाप की ‘इज्जत करते हैं। जो बेटे की ‘इज्जत नहीं किए मैं बाप से तुम्हारी शिकायत करूँगा; तुम्हारी शिकायत करनेवाला करता, वो बाप की जिसने उसे भेजा ‘इज्जत नहीं करता। 24 मैं तुम से सच कहता हूँ कि वो तो है, यार्नी मूसा जिस पर तुम ने उम्मीद लगा रखती है। 46 क्यूंकि अगर तुम मूसा का यकीन करते तो मेरा भी यकीन करते, इसलिए कि उसने मेरे हक्क में लिखा है। 47 लेकिन जब तुम उसके लिखे हुए का यकीन नहीं करते, तो मेरी बात का क्यूंकर यकीन करोगे?”

6 इन बातों के बाद ‘ईसा गलीली की झील या’र्नी तिवरियास की झील के पार गया। 2 और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्यूंकि जो मोजिज़े वो बीमारों पर करता था उनको वो देखते थे। 3 ईसा पहाड़ पर चढ़ गया और अपने शागिर्दों के साथ वहाँ बैठा। 4 और यहदियों की ‘इंद — ए — फ़सह नज़दीकी थी। 5 पस जब ‘ईसा ने अपनी आँखें उठाकर देखा कि मेरे पास बड़ी भीड़ आ रही है, तो फ़िलिप्पस से कहा, “हम इनके खाने के लिए कहाँ से रोटियाँ खरीद लें?” 6 मगर उसने उसे आज्ञाने के लिए ये कहा, क्यूंकि वो आप जानता था कि मैं क्या करूँगा। 7 फ़िलिप्पस ने उसे जवाब दिया, “दो सौ दिन मज़दूरी की रोटियाँ इनके लिए काफी न होंगी, कि हर एक को थोड़ी सी मिल जाए।” 8 उसके शागिर्दों में से एक ने, यार्नी शमैन पतरस के भाई अन्द्रियास ने, उससे कहा, 9 “यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं, मगर ये इने लोगों में क्या हैं?” 10 ईसा ने कहा, “लोगों को बिठाओ।” और उस जगह बहुत धास थी। पस वो मर्द जो तकरीबन पाँच हजार थे बैठ गए। 11 ईसा ने वो रोटियाँ ली और शुक्र करके उन्हें जो बैठे थे बौंट दी, और इसी तरह मछलियों में से जिस कदर चाहते थे बौंट दिया। 12 जब वो सर हो चुके तो उसने अपने शागिर्दों से कहा, “बचे हुए बे इस्तेमाल खाने को जमा करो, ताकि कुछ जाया न हो।” 13 चुनाँचे उन्होंने जमा किया, और जौ की पाँच

रोटियों के टुकड़ों से जो खानेवालों से बच रहे थे बारह टोकरियाँ पर ईमान लाए वो कभी प्यासा ना होगा। 36 लेकिन मैंने तुम से कहा भरी 14 पस जो मोजिजा उसने दिखाया, “वो लोग उसे देखकर कि तुम ने मुझे देख लिया है फिर भी ईमान नहीं लाते। 37 जो कुछ कहने लगे, जो नबी दुनियाँ में अने बाला था हकीकत में यही है।” बाप मुझे देता है मेरे पास आ जाएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा 15 पस ईसा ये मालूम करके कि वो आकर मुझे बादशाह बनाने के उसे मैं हरणिज निकाल न दूँगा। 38 क्यौंकि मैं आसमान से इसलिए लिए पकड़ना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेला चला गया। 16 फिर नहीं उत्तरा हूँ कि अपनी मर्जी के मुवाफिक 'अमल करूँ, बल्कि जब शाम हुई तो उसके शारिर झील के किनारे गए, 17 और नाव में इसलिए कि अपने भेजनेवाले की मर्जी के मुवाफिक 'अमल करूँ। बैठकर झील के पार कफरनहम को चले जाते थे। उस बक्त अन्धेरा 39 और मेरे भेजनेवाले की मर्जी ये है, कि जो कुछ उसने मुझे दिया हो गया था, और ईसा अभी तक उनके पास न आया था। 18 और है मैं उसमें से कुछ खो न दूँ, बल्कि उसे आखिरी दिन फिर जिन्दा आँधी की बजह से झील में मैंजे उठने लगी। 19 पस जब वो खेते करूँ। 40 क्यौंकि मेरे बाप की मर्जी ये है, कि जो कोई बेटे को देखे — खेते तीन — चार मील के करीब निकल गए, तो उन्होंने ‘ईसा’ और उस पर ईमान लाए, और हमेशा की जिन्दगी पाए और मैं उसे को झील पर चलते और नाव के नजदीक आते देखा और डर गए। **आखिरी दिन फिर जिन्दा करूँ।** (aiōnios g166) 41 पस यहदी उस 20 मगर उसने उनसे कहा, “मैं हूँ, डरो मत।” 21 पस वो उसे नाव में पर बुद्बुदाने लगे, इसलिए कि उसने कहा, था, “जो रोटी आसमान चढ़ा लेने को राजी हुए, और फौरन वो नाव उस जगह जा पहुँची से उतरी वो मैं हूँ।” 42 और उन्होंने कहा, क्या ये युसूफ का बेटा जहाँ वो जाते थे। 22 दूसरे दिन उस भीड़ ने जो झील के पार खड़ी ‘ईसा’ नहीं, जिसके बाप और माँ को हम जानते हैं? अब ये क्यूँकर थी, ये देखा कि यहाँ एक के सिवा और कोई छोटी नाव न थी; और कहता है कि “मैं आसमान से उतरा हूँ।” 43 ईसा ने जबाब में उनसे ‘ईसा’ अपने शारिरों के साथ नाव पर सवार न हुआ था, बल्कि सिर्फ कहा, “आपस में न बुद्बुदाओ। 44 कोई मेरे पास नहीं आ सकता उसके शारिर चले गए थे। 23 (लेकिन कुछ छोटी नावें तिबरियास जब तक कि बाप जिसने मुझे भेजा है उसे खीचि न ले, और मैं से उस जगह के नजदीक आईं, जहाँ उन्होंने खुदावन्द के शुक करने उसे आखिरी दिन फिर जिन्दा करूँगा। 45 नवियों के सहीफों में ये के बाद रोटी खाइ थी।) 24 पस जब भीड़ ने देखा कि यहाँ न ‘ईसा’ लिखा है: ‘वो सब खुदा से तालीम पाए हुए लोग होंगे।’ जिस किसी है न उसके शारिर, तो वो खुद छोटी नावों में बैठकर ‘ईसा’ की ने बाप से सुना और सीखा है वो मेरे पास आता है — 46 ये नहीं कि तलाश में कफरनहम को आए। 25 और झील के पार उससे मिलकर किसी ने बाप को देखा है, मगर जो खुदा की तरफ से है उसी ने कहा, “ऐ रब्बी! तू यहाँ कब आया?” 26 ईसा ने उनके जबाब में बाप को देखा है। 47 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो ईमान लाता कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढ़ते कि है हमेशा की जिन्दगी उसकी है।” (aiōnios g166) 48 जिन्दगी की मोजिजे देखे, बल्कि इसलिए कि तुम रोटियाँ खाकर सेर हए। 27 रोटी मैं हूँ। 49 तुम्हारे बाप — दादा ने वीराने मैं भन्ना खाया और फानी खुराक के लिए मैंहनत न करो, बल्कि उस खुराक के लिए मर गए। 50 ये वो रोटी है कि जो आसमान से उतरती है, ताकि जो हमेशा की जिन्दगी तक बाकी रहती है जिसे इन — ए — आदमी उसमें से खाए और न मरे। 51 मैं हूँ वो जिन्दगी की रोटी जो आदम से उतरी। अगर कोई इस रोटी मैं से खाए तो हमेशा तक (aiōnios g166) 28 पस उन्होंने उससे कहा, “हम क्या करें ताकि जिन्दा रहेंगे, बल्कि जो रोटी मैं दुनियाँ की जिन्दगी के लिए दूँगा खुदा के काम अन्जाम दें?” 29 ईसा ने जबाब में उनसे कहा, “खुदा वो मेरा गोश्त है।” (aiōn g165) 52 पस यहदी ये कहकर आपस का काम ये है कि जिसे उसने भेजा है उस पर ईमान लाओ। 30 मैं झगड़ने लगे, “ये शब्द आपना गोश्त हमें क्यूँकर खाने को दे पस उन्होंने उससे कहा, “फिर त कौन सा निशान दिखाता है, ताकि सकता है?” 53 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि हम देखकर तेरा यकीन करें? तू कौन सा काम करता है? 31 हमारे जब तक तुम इन — ए — आदम का गोश्त न खाओ और उसका बाप — दादा ने वीराने मैं भन्ना खाया, चुनौते लिखा है, ‘उसने उन्हें का खून न पियो, तुम मैं जिन्दगी नहीं। 54 जो मेरा गोश्त खाता खाने के लिए आसमान से रोटी दी।’ 32 ईसा ने उनसे कहा, “मैं और मेरा खून पीता है, हमेशा की जिन्दगी उसकी है; और मैं उसे तुम से सच सच कहता हूँ, कि मूसा ने तो वो रोटी आसमान से तुम्हें आखिरी दिन फिर जिन्दा करूँगा।” (aiōnios g166) 55 क्यौंकि मेरा न दी, लेकिन मेरा बाप तुम्हें आसमान से हकीकी रोटी देता है। 33 गोश्त हकीकत में खाने की चीज और मेरा खून हकीकत में पीनी की क्यूँकि खुदा की रोटी वो है जो आसमान से उत्तरकर दुनियाँ को चीज है। 56 जो मेरा गोश्त खाता और मेरा खून पीता है, वो मुझे मैं जिन्दगी बख़्शती है।” 34 उन्होंने उससे कहा, ऐ खुदावन्द! ये रोटी काईर मरहता है और मैं उसमें। 57 जिस तरह जिन्दा बाप ने मुझे हम को हमेशा दिया कर।” 35 ईसा ने उनसे कहा, “जिन्दगी की भेजा, और मैं बाप के जरिए से जिन्दा हूँ, इसी तरह वो भी जो मुझे रोटी मैं हूँ; जो मेरे पास आए वो हरणिज भूखा न होगा, और जो मुझे खाएगा मैरे जरिए से जिन्दा रहेगा। 58 जो रोटी आसमान से उतरी

यही है, बाप — दादा की तरह नहीं कि खाया और मर गए; जो उसके बारे में चुपके — चुपके बहुत सी गुफ्तगु हुईं; कुछ कहते थे, ये रोटी खाएगा वो हमेशा तक जिन्दा रहेगा।” (aiōn g165) 59 ये वो नेक है। “और कुछ कहते थे, नहीं बल्कि वो लोगों को गुमराह बातें उसने कफरनहम के एक ‘इबादतखाने में तालीम देते बक्त करता है।’” 13 तो भी यहदियों के डर से कोई शख्स उसके बारे कही। 60 इसलिए उसके शाशिर्दि में से बहुतों ने सुनकर कहा, “ये में साफ साफ न कहता था। 14 जब ‘ईद के आधे दिन गुजर गए, कलाम नागवार है, इसे कौन सुन सकता है?’” 61 इसा ने अपने जी तो ‘इसा हैकल में जाकर तालीम देने लगा। 15 पस यहदियों ने में जानकर कि मेरे शाशिर्दि आपस में इस बात पर बुद्धिमते हैं, उनसे ताज्जब करके कहा, “इसको बगैर पढ़े क्यूंकि ‘इल्म आ गया?’” कहा, “क्या तुम इस बात से ठोकर खाते हो? 62 अगर तुम इन — 16 ईसा ने जबाब में उनसे कहा, ‘मेरी तालीम मेरी नहीं, बल्कि मेरे ए — आदम को ऊपर जाते देखोगे, जहाँ वो पहले था तो क्या होगा?’ भेजने वाले की है। 17 आगर कोई उसकी मर्जी पर चलना चाहे, तो 63 जिन्दा करने वाली तो स्थ है, जिसमें कुछ फ़ाइदा नहीं; जो इस तालीम की वजह से जान जाएगा कि खुदा की तरफ से है या मैं बातें मैंने तुम से कही हैं, वो स्थ है और जिन्दगी भी है। 64 मगर तुम अपनी तरफ से कहता हैं। 18 जो अपनी तरफ से कुछ कहता है, वो में से कुछ ऐसे हैं जो ईमान नहीं लाए।” क्यूंकि ईसा शूस्त से जानता अपनी ‘इज्जत चाहता है; लेकिन जो अपने भेजनेवाले की ‘इज्जत था कि जो ईमान नहीं लाते वो कौन है, और कौन मुझे पकड़वाएगा। चाहता है, वो सच्चा है और उसमें नारास्ती नहीं। 19 क्या मूसा ने 65 फिर उसने कहा, “इसी लिए मैंने तुम से कहा था कि मेरे पास तुम्हें शरीरी अत नहीं दी? तो भी तुम में शरीरी अत पर कोई ‘अमल नहीं कोई नहीं आ सकता जब तक बाप की तरफ से उसे ये तौफ़ीक न दी करता। तुम क्यूं मेरे कल्त की कोशिश में हो?” 20 लोगों ने जबाब जाए।” 66 इस पर उसके शाशिर्दि में से बहुत से लोग उल्टे फिर गए दिया, “तुझे में तो बदरह है! कौन रेरे कल्त की कोशिश में है?” 21 और इसके बाद उसके साथ न रहे। 67 पस ईसा ने उन बारह से ईसा ने जबाब में उनसे कहा, ‘मैंने एक काम किया, और तुम सब कहा, “क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?” 68 शमैन पतरस ने ताअःज्जब करते हो। 22 इस बारे में मूसा ने तुम्हें खतने का हुक्म उसे जबाब दिया, “ऐ खुदावन्द! हम किसके पास जाएँ? हमेशा की दिया है (हालांकि वो मूसा की तरफ से नहीं, बल्कि बाप — दादा से जिन्दगी की बातें तो तेरे ही पास हैं?) (aiōnios g166) 69 और हम चला आया है), और तुम सबत के दिन आदमी का खतना करते हो। ईमान लाए और जान गए हैं कि, खुदा का कुदूस तु ही है।” 70 ईसा 23 जब सबत को आदमी का खतना किया जाता है ताकि मूसा की ने उन्हें जबाब दिया, “क्या मैंने तुम बारह को नहीं चुन लिया? और शरीरी अत का हुक्म न टूटे; तो क्या मुझे से इसलिए नाराज हो कि तुम मैं से एक शख्स शैतान है।” 71 उसने ये शमैन इस्करियोती के मैंने सबत के दिन एक आदमी को बिल्कुल तन्दन्तुर कर दिया? बेटे यहदाह की मिस्त्रत कहा, क्यूंकि यहीं जो उन बारह मैं से था उसे 24 जाहिर के मुवाफिक फैसला न करो, बल्कि इन्साफ से फैसला पकड़वाने को था।

7 इन बातों के बाद ‘ईसा गलील में फिरता रहा क्यूंकि यहदिया में फिरना न चाहता था, इसलिए कि यहदी अग्रे उसके कल्त की कोशिश में थे 2 और यहदियों की ‘ईद — ए — खियाम नजदीक थी। 3 पस उसके भाइयों ने उनसे कहा, “यहाँ से रखाना होकर यहदिया को चला जा, ताकि जो काम तू करता है उन्हें रेरे शाशिर्दि भी देखो। 4 क्यूंकि ऐसा कोई नहीं जो मशहर होना चाहे और छिपकर काम करे। अगर तू ये काम करता है, तो अपने आपों दुनियाँ पर जाहिर कर।” 5 क्यूंकि उसके भाई भी उस पर ईमान न लाए थे। 6 पस ईसा ने उनसे कहा, “मेरा तो अभी बक्त नहीं आया, मगर तुम्हारे लिए सब बक्त है। 7 दुनियाँ तुम से ‘दुश्मनी नहीं रख सकती लेकिन मुझे से रखती है, क्यूंकि मैं उस पर गवाही देता हूँ कि उसके काम झोर है। 8 तुम ‘ईद में जाओ, मैं अभी इस ‘ईद में नहीं जाता, क्यूंकि अभी तक मेरा बक्त पूरा नहीं हुआ।” 9 ये बातें उनसे कहकर वो गलीली ही में रहा। 10 लेकिन जब उसके भाई ‘ईद में चले गए उस बक्त वो भी गया, खुले तौर पर नहीं बल्कि पोशीदा। 11 पस यहदी उसे ‘ईद में ये कहकर ढूँढ़ने लगे, “वो कहाँ है?” 12 और लोगों में

हूँ, फिर अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊँगा। 34 तुम मुझे दृढ़ोगे पर इल्जाम लगाने की कोई वजह निकालें। मगर ईसा झुक कर मगर न पाओगे, और जहाँ मैं हूँ तुम नहीं आ सकते।” 35 हमारे उंगली से जमीन पर लिखने लगा। 7 जब वो उससे सवाल करते यहदियों ने आपस में कहा, ये कहाँ जाएगा कि हम इसे न पाएँगे? ही रहे, तो उसने सधे होकर उनसे कहा, “जो तुम में बेगुनाह हो, क्या उनके पास जाएगा कि हम इसे न पाएँगे? क्या उनके पास वही पहले उसको पत्थर मारे।” 8 और फिर झुक कर जमीन पर जाएगा जो यूनानियों में अक्सर रहते हैं, और यूनानियों को तालीम उंगली से लिखने लगा। 9 वो ये सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक देगा? 36 ये क्या बात है जो उसने कही, “तुम मुझे तलाश करोगे एक — एक करके निकल गए, और ईसा अकेला रह गया और मगर न पाओगे, ‘और, ‘जहाँ मैं हूँ तुम नहीं आ सकते?’” 37 फिर ‘औरत वहीं बीच में रह गई। 10 ईसा ने सीधे होकर उससे कहा, “ऐ ईद के आखिरी दिन जो खास दिन है, ईसा खड़ा हुआ और पुकार 'औरत, ये लोग कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर सजा का हृकम कर कहा, “अगर कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पिए। 38 जो नहीं लगाया?” 11 उसने कहा, “ऐ खुदावन्द! किसी ने नहीं।” मुझ पर ईमान लाएगा उसके अन्दर से, जैसा कि किताब — ए — ईसा ने कहा, “मैं भी तुझ पर सजा का हृकम नहीं लगाता; जा, मुक़द्दस में आया है, ज़िन्दगी के पानी की नदियाँ जारी होंगी।” 39 फिर गुनाह न करना।” 12 ईसा ने फिर उनसे मुखातिब होकर कहा, उसने ये बात उस रुह के बारे में कही, जिसे वो पाने को थे जो उस “दुनियाँ का नूँ मैं हूँ, जो मेरी पैरवी करेगा वो अन्धेरे में न चलेगा, पर ईमान लाए; क्यौंकि स्वरूप अब तक न जाजिल न हुई थी, इसलिए कि बल्कि ज़िन्दगी का नूँ पाएगा।” 13 फरीसियों ने उससे कहा, “तू ईसा अभी अपने जलाल को न पहुँचा था। 40 पस भीड़ में से कुछ अपनी गवाही आप देता है, तेरी गवाही सच्ची नहीं।” 14 ईसा ने ने ये बातें सुनकर कहा, “बेशक यहीं वो नबी है।” 41 औरों ने जबाब में उनसे कहा, “अगर वे मैं अपनी गवाही आप देता हैं, तो भी कहा, ये मसीह है। “और कुछ न कहा, क्यौंकि क्या मरीह गलील से मेरी गवाही सच्ची है; क्यौंकि मुझे मालूम है कि मैं कहाँ से आता हूँ आएगा? 42 क्या किताब — ए — मुक़द्दस में से नहीं आया, कि या कहाँ को जाता हूँ। 15 तुम जिस्म के मुताबिक फैसला करते हो, मसीह दाऊद की नस्ल और बैतलहम के गाँव से आएगा, जहाँ का मैं किसी का फैसला नहीं करता। 16 और अगर मैं फैसला करूँ भी दाऊद था?” 43 पस लोगों में उसके बारे में इश्किलाफ़ हुआ। 44 तो मेरा फैसला सच है; क्यौंकि मैं अकेला नहीं, बल्कि मैं हूँ और और उनमें से कुछ उसको पकड़ना चाहते थे, मगर किसी ने उस पर मेरा बाप है जिसने मुझे भेजा है। 17 और तुम्हारी तौरें मैं भी लिखा हाथ न डाला। 45 पस प्यादे सरदार काहिनों और फरीसियों के पास है, कि दो आदमियों की गवाही मिलकर सच्ची होती है। 18 एक मैं आए; और उन्होंने उनसे कहा, “तुम उसे क्यूँ न लाए?” 46 प्यादों खुद अपनी गवाही देता हूँ, और एक बाप जिसने मुझे भेजा मेरी ने जबाब दिया कि, “ईसान ने कभी ऐसा कलाम नहीं किया।” 47 गवाही देता है।” 19 उन्होंने उनसे कहा, “तेरा बाप कहाँ है?” ईसा फरीसियों ने उन्हें जबाब दिया, “क्या तुम भी गुमराह हो गए? 48 ने जबाब दिया, “न तुम मुझे जानते हो न मेरे बाप को, अगर मुझे भला इश्किलाफ़ वालों या फरीसियों मैं से भी कोई उस पर ईमान जानते तो मेरे बाप को भी जानते।” 20 उसने हैकल में तालीम देते लाया? 49 मगर ये ‘आम लोग जो शरी’ अत से बाकिफ़ नहीं लान्ती बक्त ये बातें बैठ — उल — माल में कहीं; और किसी ने इसको न है।” 50 नीकुदेमुस ने, जो फहले उसके पास आया था, उनसे कहा, पकड़ा, क्यौंकि अभी तक उसका बक्त न आया था। 21 उसने फिर 51 “क्या हमारी शरी’ अत किसी शख्स को मुजरिम ठहराती है, जब उनसे कहा, “मैं जाता हूँ, और तुम मुझे दृढ़ोगे और अपने गुनाह तक पहले उसकी सुनकर जान न ले कि वो क्या करता है?” 52 मैं मरोगे।” 22 पस यहदियों ने कहा, क्या वो अपने आपको मार उन्होंने उसके जबाब में कहा, “क्या तू भी गलील का है? तलाश डालेगा, जो कहता है, “जहाँ मैं जाता हूँ, तुम नहीं आ सकते?” 23 कर और देख, कि गलील में से कोई नबी नाजिल नहीं होने का।” उसने उनसे कहा, “तुम नीचे के हो मैं ऊपर का हूँ, तुम दुनियाँ के हो 53 फिर उनमें से हर एक अपने घर चला गया।

8 तब ईसा जैतून के पहाड़ पर गया। 2 दूसरे दिन सुबह सबैरे ही गुनाहों में मरोगे; क्यौंकि अगर तुम ईमान न लाओगे कि मैं वही हूँ, तो अपने गुनाहों में मरोगे।” 25 उन्होंने उस से कहा, तू कौन है? वो फिर हैकल में आया, और सब लोग उसके पास आए और उन्हें तालीम देने लगा। 3 और फकीह और फरीसी ईसा ने उनसे कहा, “वही हूँ जो शूरू से तुम से कहता आया हूँ। 26 वो बैठकर उन्हें तालीम देने लगा। 4 और फकीह और फरीसी एक ‘औरत को लाए जो जिना मैं पकड़ी गई थी, और उसे बीच में मुझे तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कहना है और फैसला करना है; लेकिन खड़ा करके ईसा से कहा, “ऐ उस्ताद! ये ‘औरत जिना के ऐन बक्त पकड़ी गई है। 5 तौरें मैं मूसा ने हम को हृकम दिया है, कि जिसने मुझे भेजा वो सच्चा है, और जो मैंने उससे सुना वही दुनियाँ से कहता हूँ।” 27 वो न समझे कि हम से बाप के बारे में कहता है। 28 पस ईसा ने कहा, “जब तुम इब्न — ए — आदम को ऊँचे पर चढ़ाओगे तो जानोगे कि मैं वही हूँ, और अपनी तरफ से कुछ नहीं कहता है?” 6 उन्होंने उसे आज्ञामाने के लिए ये कहा, ताकि उस

करता, बल्कि जिस तरह बाप ने मुझे सिखाया उसी तरह ये बातें एक हैं जो उसे चाहता और फैसला करता है। 51 मैं तुम से सच कहता हूँ। 29 और जिसने मुझे भेजा वो मेरे साथ है; उसने मुझे कहता हूँ कि अगर कोई इंसान मेरे कलाम पर 'अमल करेगा, तो अकेला नहीं छोड़ा, क्यूँकि मैं हमेशा वही काम करता हूँ जो उसे हमेशा तक कभी मौत को न देखेगा।' (aiōn g165) 52 यहदियों ने पसन्द आते हैं।" 30 जब इसा ये बातें कह रहा था तो बहुत से लोग उससे कहा, "अब हम ने जान लिया कि तुझ में बदस्तू है! अब्रहाम उस पर इंसान लाए। 31 पस इसा ने उन यहदियों से कहा, जिन्होंने मर गया और नवी मर गए, मगर तू कहता है, 'अगर कोई मेरे कलाम उसका यकीन किया था, "अगर तुम कलाम पर काई रहोगे, तो पर 'अमल करेगा, तो हमेशा तक कभी मौत का मज़ा न चखेगा। हकीकत में मेरे शारीर ठहरेगे। 32 और सच्चाई को जानेगे और (aiōn g165) 53 हमारे बुजुर्ग अब्रहाम जो मर गए, क्या तू उससे बड़ा सच्चाई तुम्हें आजाद करेगी।" 33 उन्होंने उसे जवाब दिया, "हम हैं? और नवी भी मर गए। तू अपने आपको क्या ठहराता है?" 54 तो अब्रहाम की नस्ल से हैं, और कभी किसी की गुलामी में नहीं इसा ने जवाब दिया, "अगर मैं आप अपनी बड़ाई करूँ, तो मेरी रहे। तू क्यूँकर कहता है कि तुम आजाद किए जाओगे?" 34 इसा ने बड़ाई कछ नहीं; लेकिन मेरी बड़ाई मेरा बाप करता है, जिसे तुम उन्हें जवाब दिया, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई गुनाह कहते हो कि हमारा खुदा है। 55 तुम ने उसे नहीं जाना, लेकिन मैं करता है गुनाह का गुलाम है। 35 और गुलाम हमेशा तक घर में नहीं उसे जानता हूँ, और अगर कहूँ कि उसे नहीं जानता, तो तुम्हारी तरह रहता, बेटा हमेशा रहता है। (aiōn g165) 36 पस अगर बेटा तुम्हें झटा बनूँगा। मगर मैं उसे जानता और उसके कलाम पर 'अमल आजाद करेगा, तो तुम वाक़ाई आजाद होगे। 37 मैं जानता हूँ तुम करता हूँ। 56 तुम्हारा बाप अब्रहाम मेरा दिन देखने की उम्मीद पर अब्रहाम की नस्ल से हो, तभी मेरे कल्त की कोशिश में हो क्यूँकि बहुत खुश था, चुनाँचे उसने देखा और खुश हुआ।" 57 यहदियों ने मेरा कलाम तुम्हारे दिल में जगह नहीं पाता। 38 ऐसे जो अपने बाप उससे कहा, "तेरी उम्र तो अभी पचास बरस की नहीं, फिर क्या तुम के यहाँ देखा है वो कहता हूँ, और तुम ने जो अपने बाप से सुना अब्रहाम को देखा है?" 58 इसा ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच सच वो करते हो।" 39 उन्होंने जवाब में उससे कहा, हमारा बाप तो कहता हूँ, कि पहले उससे कि अब्रहाम पैदा हुआ मैं हूँ।" 59 पस अब्रहाम है। इसा ने उनसे कहा, "अगर तुम अब्रहाम के फर्जन्द उन्होंने उसे मारने को पत्थर उठाए, मगर इसा छिपकर हैकल से होते तो अब्रहाम के से काम करते। 40 लेकिन अब तुम मुझे जैसे निकल गया।

शरख को कल्त की कोशिश में हो, जिसने तुम्हें वही हक्क बात बताई जो खुदा से सनी; अब्रहाम ने तो ये नहीं किया था। 41 तुम अपने बाप के से काम करते हो।" उन्होंने उससे कहा, "हम हराम से पैदा नहीं हुए। हमारा एक बाप है यानी खुदा।" 42 इसा ने उनसे कहा, "अगर खुदा तुम्हारा होता, तो तुम मुझ से महबूबत रखते; इसलिए कि मैं खुदा में से निकला और आया हूँ, क्यूँकि मैं आप से नहीं आया बल्कि उसी ने मुझे भेजा। 43 तुम मेरी बातें क्यूँ नहीं समझते? इसलिए कि मेरा कलाम सुन नहीं सकते। 44 तुम अपने बाप इब्लीस से हो और अपने बाप की ख्वाहिशों को पूरा करना चाहते हो। वो शूरू ही से खूनी है और सच्चाई पर काई नहीं रहा, क्यूँकि उस में सच्चाई नहीं है। जब वो झटा बोलता है तो अपनी ही सी कहता है, क्यूँकि वो झटा है बल्कि झट का बाप है। 45 लेकिन मैं जो सच बोलता हूँ, इसी लिए तुम मेरा यकीन नहीं करते। 46 तुम में से कौन मुझ पर गुनाह साबित करता है? अगर मैं सच बोलता हूँ, तो मेरा यकीन क्यूँ नहीं करते? 47 जो खुदा से होता है वो खुदा की बातें सुनता है; तुम इसलिए नहीं सुनते कि खुदा से नहीं हो।" 48 यहदियों ने जवाब में उससे कहा, "क्या हम सच नहीं कहते, कि तू सामरी है और तुझ में बदस्तू है।" 49 इसा ने जवाब दिया, "मुझ में बदस्तू नहीं, मगर मैं अपने बाप की इज्जत करता हूँ, और तुम मेरी बैंझजती करते हो। 50 लेकिन मैं अपनी तारीफ नहीं चाहता; हाँ,

9 चलते चलते इसा ने एक आदमी को देखा जो पैदाइशी अंधा था। 2 उस के शारीरों ने उस से पूछा, "उस्ताद, यह आदमी अंधा क्यूँ पैदा हुआ? क्या इस का कोई गुनाह है या इस के बालिदैन का?" 3 इसा ने जवाब दिया, "न इस का कोई गुनाह है और न इस के बालिदैन का। यह इस लिए हुआ कि इस की जिन्दगी में खुदा का काम जाहिर हो जाए। 4 अभी दिन है कि हम जितनी देर तक दिन है उस का काम करते रहें जिस ने मुझे भेजा है। क्यूँकि रात आने वाली है, उस बक्त कोई काम नहीं कर सकेगा। 5 लेकिन जितनी देर तक मैं दुनियाँ मैं हूँ उतनी देर तक मैं दुनियाँ का नहू हूँ।" 6 यह कह कर उस ने जमीन पर थूक कर मिट्टी सानी और उस की आँखों पर लगा दी। 7 उस ने उस से कहा, "जा, शिलोख के हौज में नहा ले।" (शिलोख का मतलब 'भेजा हुआ' है।) अंधे ने जा कर नहा लिया। जब वापस आया तो वह देख सकता था। 8 उस के साथी और वह जिन्होंने पहले उसे भीख माँगते देखा था पूछने लगे, "क्या यह वही नहीं जो बैठा भीख माँगा करता था?" 9 बाज ने कहा, "हाँ, वही है।" औरों ने इन्कार किया, "नहीं, यह सिर्फ उस का हमशक्ल है।" लेकिन आदमी ने खुद इस्तर किया, "मैं वही हूँ।" 10 उन्होंने उस से सवाल किया, "तेरी आँखें किस तरह सही हुई?" 11 उस ने जवाब दिया, "वह आदमी जो इसा कहलाता है उस ने मिट्टी सान कर मेरी आँखें पर लगा दी। फिर उस

ने मुझे कहा, ‘शिलोख के हौज पर जा और नहाले।’ मैं वहाँ गया उस का खौफ मानता और उस की मर्जी के मुताबिक चलता है। 32 और नहाते ही मेरी आँखें सही हो गई। 12 उन्होंने पूछा, वह कहाँ शुरू ही से यह बात सुनेमें नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी अंधे की है? उसने कहा, मैं नहीं जानता। 13 तब वह सही हुए अंधे को आँखों को सही कर दिया हो। (aiōn g165) 33 अगर यह आदमी फरीसियों के पास ले गए। 14 जिस दिन ईसा ने मिट्ठी साम कर उस खुदा की तरफ से न होता तो कुछ न कर सकता।” 34 जवाब में की आँखों को सही किया था वह सबत का दिन था। 15 इस लिए उन्होंने उसे बताया, “तू जो गुनाह की हालत में पैदा हुआ है क्या तू फरीसियों ने भी उस से पूछ — ताछ की कि उसे किस तरह आँख हमारा उस्ताद बनना चाहता है?” यह कह कर उन्होंने उसे जमाअत की रैशनी मिल गई। आदमी ने जवाब दिया, “उस ने मेरी आँखों में से निकाल दिया। 35 जब ईसा को पता चला कि उसे निकाल पर मिट्ठी लगा दी, फिर मैंने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।” दिया गया है तो वह उस को मिला और पूछा, “क्या तू इन्हन्‌में 16 फरीसियों में से कुछ ने कहा, “यह शरबस खुदा की तरफ से नहीं — आदम पर ईमान रखता है?” 36 उस ने कहा, “खुदावन्द, वह है, क्यूँकि सबत के दिन काम करता है।” 17 फिर वह दुबारा उस कौन है? मुझे बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।” 37 ईसा ने आदमी से मुखातिब हुए जो पहले अंधा था, “तू खुद उस के बारे में जवाब दिया, “तू ने उसे देख लिया है बल्कि वह तुझ से बात कर क्या कहता है? उस ने तो तेरी ही आँखों को सही किया है।” 18 रहा है।” 38 उस ने कहा, “खुदावन्द, मैं ईमान रखता हूँ” और उसे यहदी अगुणों को यकीन नहीं आ रहा था कि वह सच में अंधा था सज्जा किया। 39 ईसा ने कहा, “मैं अदालत करने के लिए इस और फिर सही हो गया है। इस लिए उन्होंने उस के वालिदैन को दुनियाँ में आया हूँ, इस लिए कि अंधे देखें और देखने वाले अंधे हो बुलाया। 19 उन्होंने उन से पूछा, “क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही जाएँ।” 40 कुछ फरीसी जो साथ खड़े थे यह कुछ सुन कर पूछने जिस के बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा पैदा हुआ था? अब यह लगे, “अच्छा, हम भी अंधे हैं?” 41 ईसा ने उन से कहा, “आप किस तरह देख सकता है?” 20 उस के वालिदैन ने जवाब दिया, तुम अंधे होते तो तुम गुनाहगार न ठहरते। लेकिन अब चूँकि तुम “हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते बक्त दावा करते हो कि हम देख सकते हैं इस लिए तुम्हारा गुनाह काइम अंधा था। 21 लेकिन हमें मालम नहीं कि अब यह किस तरह देख रहता है।”

सकता है या कि किस ने इस की आँखों को सही किया है। इस से खुद पता करें, यह बालिग है। यह खुद अपने बारे में बता सकता है। 22 उस के वालिदैन ने यह इस लिए कहा कि वह यहदियों से डरते थे। क्यूँकि वह फैसला कर चुके थे कि जो भी ईसा को मसीह करार दे उसे यहदी जमाअत से निकाल दिया जाए। 23 यही वजह थी कि उस के वालिदैन ने कहा था, “यह बालिग है, इस से खुद पूछ लें।” 24 एक बार फिर उन्होंने सही हुए अंधे को बुलाया, “खुदा को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि यह आदमी गुनाहगार है।” 25 आदमी ने जवाब दिया, “मुझे क्या पता है कि वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता हूँ, पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख सकता हूँ।” 26 फिर उन्होंने उस से सवाल किया, उस ने रोते साथ क्या किया? “उस ने किस तरह तेरी आँखों को सही कर दिया?” 27 उस ने जवाब दिया, “मैं पहले भी आप को बता चुका हूँ और आप ने सुना नहीं। क्या आप भी उस के शारिर बनना चाहते हैं?” 28 इस पर उन्होंने उसे बुरा — भला कहा, “तू ही उस का शारिर है, हम तो मूसा के शारिर हैं।” 29 हम तो जानते हैं कि खुदा ने मूसा से बात की है, लेकिन इस के बारे में हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है।” 30 आदमी ने जवाब दिया, “अजीब बात है, उस ने मेरी आँखों को शिफा दी है और फिर भी आप नहीं जानते कि वह कहाँ से है। 31 हम जानते हैं कि खुदा गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उस की सुनता है जो

10 “मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो दरवाजे से भेड़ों के बाड़े में दाखिल नहीं होता बल्कि किसी ओर से कूद कर अन्दर घुस आता है वह चोर और डाकू है। 2 लेकिन जो दरवाजे से दाखिल होता है वह भेड़ों का चरवाहा है। 3 चौकीदार उस के लिए दरवाजा खोल देता है और भेड़ें उस की आवाज सुनती हैं। वह अपनी हर एक भेड़ का नाम ले कर उन्हें बुलाता और बाहर ले जाता है। 4 अपने पूरे गल्ले को बाहर निकालने के बाद वह उन के आगे आगे चलने लगता है और भेड़ें उस के पीछे पीछे चल पड़ती हैं, क्यूँकि वह उस की आवाज पहचानती हैं। 5 लेकिन वह किसी अजनबी के पीछे नहीं चलते गी बल्कि उस से भाग जाएँगी, क्यूँकि वह उस की आवाज नहीं पहचानती।” 6 ईसा ने उन्हें यह मिसाल पेश की, लेकिन वह न समझे कि वह उन्हें क्या बताना चाहता है। 7 इस लिए ईसा दुबारा इस पर बात करने लगा, “मैं तुम को सच बताता हूँ कि भेड़ों के लिए दरवाजा मैं हूँ।” 8 जितने भी मुझ से पहले आए वह चोर और डाकू है। लेकिन भेड़ों ने उन की न सुनी। 9 मैं ही दरवाजा हूँ। जो भी मेरे जरिए अन्दर आए उसे नजात मिलेगी। वह आता जाता और हरी चरागाहे पाता रहेगा। 10 चोर तो सिर्फ़ चोर करने, जबह करने और तबाह करने आता है। लेकिन मैं इस लिए आया हूँ कि वह जिन्दगी पाएँ, बल्कि कम्पत की जिन्दगी पाएँ। 11 अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। 12 मजदूर चरवाहे का किरदार अदा नहीं करता, क्यूँकि

भेड़े उस की अपनी नहीं होती। इस लिए जूँही कोई भेड़िया आता यह पैगाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलाम — ए — है तो मज़दूर उसे देखते ही भेड़ों को छोड़ कर भाग जाता है। नरीजे मुकद्दस को रुह नहीं किया जा सकता। 36 तो फिर तुम कुफ्र बकने में भेड़िया कुछ भेड़े पकड़ लेता और बाकियों को इधर उधर कर की बात कर्यूँ करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं खुदा का फर्जन्द हूँ? देता है। 13 वजह यह है कि वह मज़दूर ही है और भेड़ों की फिर आखिर बाप ने खुद मुझे खास करके दुनियाँ में भेजा है। 37 अगर मैं नहीं करता। 14 अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और अपने बाप के काम न करूँ तो मेरी बात न मानो। 38 लेकिन अगर और वह मुझे जानती है, 15 बिल्कुल उसी तरह जिस तरह बाप मुझे उस के काम करूँ तो बेशक मेरी बात न मानो, लेकिन कम से कम जानता है और मैं बाप को जानता हूँ। और मैं भेड़ों के लिए अपनी उन कामों की गवाही तो मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ जान देता हूँ। 16 मेरी और भी भेड़े हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। जस्ती जाओगे कि बाप मुझे मैं हूँ और मैं बाप मैं हूँ।” 39 एक बार फिर है कि उन्हें भी ले आऊँ। वह भी मेरी आवाज सुनेंगी। फिर एक ही उन्होंने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह उन के हाथ से गल्ला और एक ही गल्लाबान होगा। 17 मेरा बाप मुझे इस लिए निकल गया। 40 फिर ईसा दुबारा दरिया — ए — यर्दन के पार उस मुहब्बत करता है कि मैं अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ। जगह चला गया जहाँ युहन्ना शुरू में बपतिस्मा दिया करता था। 18 कोई मेरी जान मुझ से छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे अपनी वहाँ वह कुछ देर ठहरा। 41 बहुत से लोग उस के पास आते रहे। मर्जी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने का इक्तियार है और उसे वापस लेने उन्होंने कहा, “युहन्ना ने कभी कोई खुदाई करिश्मा न दिखाया, का भी। यह हृक्षम मुझे अपने बाप की तरफ से मिला है।” 19 लेकिन जो कुछ उस ने इसे के बारे में बयान किया, वह बिल्कुल इन बारों पर यहदियों में दुबारा फूट पड़ गई। 20 बहुतों ने कहा, सही निकला।” 42 और वहाँ बहुत से लोग ईसा पर ईमान लाए।

“यह बदस्ह के कब्जे में है, यह दीवाना है। इस की क्यूँ सुनें?” 21 लेकिन औरों ने कहा, “यह ऐसी बातें नहीं हैं जो ईसान बदस्ह के कब्जे में हो। क्या बदस्ह अँखों की आँखें सही कर सकती हैं?” 22 सदियों का मौसम था और ईसा बैत — उल — मुकद्दस की खास ‘ईद तज्दीद के दैरान येस्सलेम में था। 23 वह बैत — उल — मुकद्दस के उस बारामदेह में टहेल रहा था जिस का नाम सुलेमान का बरामदह था। 24 यहदी उसे घेर कर कहने लगे, आप हमें कब तक उलझन में रहेंगे? “आर आप मसीह हैं तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।” 25 ईसा ने जबाब दिया, “मैं तुम को बता चुका हूँ, लेकिन तुम को यकीन नहीं आया। जो काम मैं अपने बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह है। 26 लेकिन तुम ईमान नहीं रखते क्यूँकि तुम मेरी भेड़े नहीं हो। 27 मेरी भेड़े मेरी आवाज सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वह मेरे पीछे चलती है। 28 मैं उन्हें हमेशा की जिन्दगी देता हूँ, इस लिए वह कभी हलाक नहीं होगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न ले गा, (aiōn g165, aiōnios g166) 29 क्यूँकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे सपुर्द किया है और वही सब से बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता। 30 मैं और बाप एक हैं।” 31 यह सुन कर यहदी दुबारा पथर उठाने लगे ताकि ईसा पर पथराव करें। 32 उस ने उन से कहा, “मैं ने तुम्हें बाप की तरफ से कई खुदाई करिश्मे दिखाए हैं। तुम मुझे इन में से किस करिश्मे की वजह से पथराव कर रहे हो?” 33 यहदियों ने जबाब दिया, “हम तुम पर किसी अच्छे काम की वजह से पथराव नहीं कर रहे बल्कि कुफ्र बकने की वजह से। तुम जो सिर्फ़ ईसान हो खुदा होने का दावा करते हो।” 34 ईसा ने कहा, “क्या यह तुम्हारी शरीर अत मैं नहीं लिखा है कि ‘खुदा ने फरमाया, तुम खुदा हो?’ 35 उन्हें ‘खुदा’ कहा गया जिन तक

11 उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़ गया जिस का नाम लाज़र था। वह अपनी बहनों मरियम और मर्था के साथ बैत — अनियाह में रहता था। 2 यह वही मरियम थी जिस ने बाद में खुदावन्द पर खुबूँ डाल कर उस के पैर अपने बालों से खुशक किए थे। उसी का भाई लाज़र बीमार था। 3 चुनौंचे बहनों ने ईसा को खबर दी, “खुदावन्द, जिसे आप मुहब्बत करते हैं वह बीमार है।” 4 जब ईसा को यह खबर मिली तो उस ने कहा, “इस बीमारी का अन्जाम मौत नहीं है, बल्कि यह खुदा के जलाल के बासे हुआ है, ताकि इस से खुदा के फर्जन्द को जलाल मिले।” 5 ईसा मर्था, मरियम और लाज़र से मुहब्बत रखता था। 6 तो भी वह लाज़र के बारे में खबर मिलने के बाद दो दिन और वही ठहरा। 7 फिर उस ने अपने शागिर्दों से बात की, “आओ, हम दुबारा यहदिया चले जाएं।” 8 शागिर्दों ने एतराज़ किया, “उस्ताद, अभी अभी वहाँ के यहदी आप पर पथराव करने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना चाहते हैं?” 9 ईसा ने जबाब दिया, “क्या दिन में रोशनी के बारह घंटे नहीं होते? जो शश्व दिन के ब्रह्म चलता फिरता है वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएं। क्यूँकि वह इस दुनियाँ की रोशनी के जरिए देख सकता है। 10 लेकिन जो रात के ब्रह्म चलता है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्यूँकि उस के पास रोशनी नहीं है।” 11 फिर उस ने कहा, “हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जा कर उसे जगा दूँगा।” 12 शागिर्दों ने कहा, “खुदावन्द, अगर वह सो रहा है तो वह बच जाएगा।” 13 उन का ख्याल था कि ईसा लाज़र की दुनियाँवी नीद का ज़िक्र कर रहा है जबकि हकीकत में वह उस की मौत की तरफ इशारा कर रहा था। 14 इस लिए उस ने उन्हें साफ़ बता दिया, “लाज़र की मौत हो गई है। 15 और तुम्हारी

खातिर मैं खुश हूँ कि मैं उस के मरते बक्त वहाँ नहीं था, क्यूँकि खुदा का जलाल देखेगी?” 41 चुनौते उन्होंने पत्थर को हटा दिया। अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उस के पास जाएँ।” 16 तोमा ने फिर ईसा ने अपनी नज़र उठा कर कहा, “ऐ बाप, मैं तेरा शुक्र करता जिस का लकब जुडवाँ था अपने साथी शागिर्दों से कहा, “चलो, हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है। 42 मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी हम भी वहाँ जा कर उस के साथ मर जाएँ।” 17 वहाँ पहुँच कर ईसा सुनता है। लेकिन मैं ने यह बात पास खड़े लोगों की खातिर की, को मालूम हुआ कि लाज़र को कब्ज़े में रखे चार दिन हो गए हैं। 18 ताकि वह ईमान लाएँ कि तू ने मुझे भेजा है।” 43 फिर ईसा जोर से बैठ — अनियाह का येस्सलेम से फासिला तीन किलोमीटर से कम पुकार उठा, “लाज़र, निकल आ।” 44 और मुर्दा निकल आया। था, 19 और बहुत से यहदी मर्था और मरियम को उन के भाई के अभी तक उस के हाथ और पाँओं परिणामों से बैधे हुए थे जबकि उस बारे में तसल्ली देने के लिए आए हुए थे। 20 यह सुन कर कि ईसा का चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था। ईसा ने उन से कहा, “इस आ रहा है मर्था उसे मिलने गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही। 21 के कफ़न को खोल कर ईसे जाने दो।” 45 उन यहदियों में से जो मर्था ने कहा, “खुदावन्द, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता। मरियम के पास आए थे बहुत से ईसा पर ईमान लाए जब उन्होंने 22 लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी खुदा आप को जो भी माँगोगे वह देखा जो उस ने किया। 46 लेकिन कुछ फरीसियों के पास गए देगा।” 23 ईसा ने उसे बताया, “तेरा भाई जी उठेगा।” 24 मर्था और उन्हें बताया कि ईसा ने क्या किया है। 47 तब राहनुमा इमामों ने जबाब दिया, जी, “मुझे मालूम है कि वह कथायमत के दिन जी और फरीसियों ने यहदियों ने सदरे अदालत का जलसा बुलाया। उठेगा, जब सब जी उठेंगे।” 25 ईसा ने उसे बताया, “कथायमत और उन्होंने एक दूसरे से पूछा, “हम क्या कर रहे हैं? यह आदमी बहुत जिन्दगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह जिन्दा रहेगा, चाहे वह से खुदाई करिश्मे दिखा रहा है। 48 अगर हम उसे यहाँ छोड़ते तो पर भी जाए। 26 और जो जिन्दा है और मुझ पर ईमान रखता है वह आखिरकार सब उस पर ईमान ले आएँगे। फिर रोमी हाकिम आकभी नहीं मरेगा। मर्था, क्या तुझे इस बात का यकीन है?” (aión g165) 27 मर्था ने जबाब दिया, “जी खुदावन्द, मैं ईमान रखती हूँ कि देंगे।” 49 उन में से एक काइफ़ा था जो उस साल इमाम — ए — आप खुदा के फर्जन्द मरीह हैं, जिसे दुनियाँ में आना था।” 28 यह आजम था। उस ने कहा, “आप कुछ नहीं समझते 50 और इस का कह कर मर्था वापस चली गई और चुपके से मरियम को बुलाया, खयाल भी नहीं करते कि इस से पहले कि पूरी कौम हलाक हो जाए “उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे बुला रहे हैं।” 29 यह सुनते ही मरियम बेहतर यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर जाए।” 51 उस ने उठ कर ईसा के पास गई। 30 वह अभी गाँव के बाहर उसी जगह यह बात अपनी तरफ से नहीं की थी। उस साल के इमाम — ए — ठहरा था जहाँ उस की मुलाकात मर्था से हुई थी। 31 जो यहदी घर आजम की हैसियत से ही उस ने यह पेशीनगोई की कि ईसा यहदी में मरियम के साथ बैठे उसे तसल्ली दे रहे थे, जब उन्होंने देखा कि कौम के लिए मरेगा। 52 और न सिर्फ़ इस के लिए बल्कि खुदा के वह जलदी से उठ कर निकल गई है तो वह उस के पैछे हो लिए। बिखेरे हुए फर्जन्दों को जमा करके एक करने के लिए भी। 53 उस क्यूँकि वह समझ रहे थे कि वह मातम करने के लिए अपने भाई दिन से उन्होंने ईसा को कल्पना करने का इरादा कर लिया। 54 इस की कब्र पर जा रही है। 32 मरियम ईसा के पास पहुँच गई। उसे लिए उस ने अब से लालिया यहदियों के दरमियान बक्तव्य न गुजारा, देखते ही वह उस के पैरों में गिर गई और कहने लगी, “खुदावन्द, बल्कि उस जगह को छोड़ कर रेगिस्तान के करीब एक इलाके में अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।” 33 जब ईसा ने मरियम गया। वहाँ वह अपने शागिर्दों समेत एक गाँव बनाम इक्राईम में रहने और उस के लोगों को रोते देखा तो उसे दुःख हुआ। और उसने लगा। 55 फिर यहदियों की इद — ए — फसह कीब आ गई। ताअ़ज़ुब होकर 34 उस ने पूछा, “तुम ने उसे कहाँ रखा है?” देहात से बहुत से लोग अपने आप को पाक करवाने के लिए इद से उन्होंने जबाब दिया, “आँ खुदावन्द, और देख लें।” 35 ईसा “रो पहले पहले येस्सलेम पहुँचे। 56 वहाँ वह ईसा का पता करते और पड़ा। 36 यहदियों ने कहा, देखो, वह उसे कितना प्यारा था।” 37 हैकल में खड़े अपस में बात करते रहे, “क्या खुयाल है? क्या वह लेकिन उन में से कुछ ने कहा, इस आदमी ने अंधे को सही किया। इद पर नहीं आएगा?” 57 लेकिन राहनुमा इमामों और फरीसियों ने “क्या यह लाज़र को मरने से नहीं बचा सकता था?” 38 फिर ईसा हक्म दिया था, अगर किसी को मालूम हो जाए कि ईसा कहाँ है तो दुबारा बहुत ही मायूस हो कर कब्ज़े पर आया। कब्ज़े एक शारी जिस वह खबर दे ताकि हम उसे गिरफ्तार कर लें।

के मुँह पर पत्थर रखा गया था। 39 ईसा ने कहा, “पत्थर को हटा दो।” लेकिन मर्हम की बहन मर्था ने एतराज़ किया, “खुदावन्द, बदबू आएगी, क्यूँकि उसे यहाँ पड़े चार दिन हो गए हैं।” 40 ईसा ने उस से कहा, “क्या खाना बनाया गया। मर्था खाने वालों की खिदमत कर

12 फसह की इद में अभी छः दिन बाकी थे कि ईसा बैठ — अनियाह पहुँचा। यह वह जगह थी जहाँ उस लाज़र का घर था जिसे ईसा ने मुर्दों में से जिन्दा किया था। 2 वहाँ उस के लिए एक खास खाना बनाया गया। मर्था खाने वालों की खिदमत कर

रही थी जबकि लाज़र ईसा और बाकी मेहमानों के साथ खाने में गए और उसे यह खबर पहुँचाई। 23 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, शरीक था। 3 फिर मरियम ने आधा लीटर खालिस जटामासी का “अब वक्त आ गया है कि इन्हन — ए — आदम को जलाल मिले। बेशकीमती इन्हें ले कर ईसा के पैरों पर डाल दिया और उन्हें अपने 24 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जब तक गन्दुम का दाना जमीन में बालों से पोंछ कर खुशक किया। खुशबू पौधे घर में फैल गईं। 4 पिर कर मर न जाए वह अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर लेकिन ईसा के शारीरिक यहदाह इस्करियोती ने एतराज़ किया (बाद में जाता है कि वह बहुत सा फल लाता है। 25 जो अपनी जान को प्यार उसी ने ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया) उस ने कहा, 5 “इस करता है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनियाँ में अपनी जान से इन्होंने कीमत लगभग एक साल की मजदूरी के बराबर थी। इसे क्यूँ दुश्मनी रखता है वह उसे हमेशा तक बचाए रखेगा। (aiōnios g166)

नहीं बेचा गया ताकि इस के पैसे गरीबों को दिए जाते?” 6 उस ने 26 अगर कोई मेरी खिदमत करना चाहे तो वह मेरे पिछे हो ले, यह बात इस लिए नहीं की कि उसे गरीबों की फिक्र थी। असल में क्यूँकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा खादिम भी होगा। और जो मेरी खिदमत वह चोर था। वह शारीरिक का ख़जांची था और जमाशुदा पैसों में से करे मेरा बाप उस की इज्जत करेगा। 27 “अब मेरा दिल ध्वराता ले लिया करता था। 7 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे छोड़ दो! उस ने है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं कहूँ, ‘ऐ बाप, मुझे इस वक्त से बचाए मेरी दफनाने की तयारी के लिए यह किया है। 8 गरीब तो हमेशा रख?” नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ। 28 ऐ बाप, अपने नाम को तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहूँगा।” 9 इतने जलाल दे।” पस आसामान से आवाज़ आई कि मैंने उस को जलाल में यहदियों की बड़ी तहदाद को मालूम हुआ कि ईसा वहाँ है। वह न दिया है और भी टूँगा 29 मजमा के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने सिर्फ़ ईसा से मिलने के लिए आए बल्कि लाज़र से भी जिसे उस ने यह सुन कर कहा, बादल गरज रहे हैं। औरों ने ख़्याल पेश किया, मुर्दों में से जिन्दा किया था। 10 इस लिए राहनुमा इमामों ने लाज़र “कोई फरिश्ते ने उस से बांती की” 30 ईसा ने उन्हें बताया, “यह को भी कल्पना करने का शादा बनाया। 11 क्यूँकि उस की वजह से आवाज़ मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी। 31 अब दुनियाँ की बहुत से यहदी उन में से चले गए और ईसा पर ईमान ले आए थे। 12 अदालत करने का वक्त आ गया है, अब दुनियाँ पे हक्कमूल करने अगले दिन इंद के लिए आए हुए लोगों को पता चला कि ईसा वालों को निकाल दिया जाएगा। 32 और मैं खुद जमीन से ऊँचे पर येस्तातेम आ रहा है। एक बड़ा मजमा 13 खजूर की डालियाँ पकड़े चढ़ाए जाने के बाद सब को अपने पास बुला लूँगा।” 33 इन बातों शहर से निकल कर उस से मिलने आया। चलते चलते वह चिल्ला से उस ने इस तरफ़ इशारा किया कि वह किस तरह की मौत मरेगा। कर नहे लगा रहे थे, “होशाना! मुबारक है वह जो रब्ब के नाम से 34 मजमा बोल उठा, कलाम — ए — मुकद्दस से हमने सुना है कि आता है। इस्लाइल का बादशाह मुबारक है!” 14 ईसा को कही से मरीह हमेशा तक काईम रहेगा। तो फिर आप की यह कैसी बात है एक जवान गधा मिल गया और वह उस पर बैठ गया, जिस तरह कि “इन — ए — आदम को ऊँचे पर चढ़ाया जाना है?” आखिर कलाम — ए — मुकद्दस में लिखा है, 15 “ऐ सियून की बेटी, मत 35 ईसा ने जवाब दिया, डर! देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा है।” 16 उस “रोशनी थोड़ी देर और तुम्हारे पास रहेंगी। जितनी देर वह मौजूद है वक्त उस के शारीरिकों को इस बात की समझ न आई। लेकिन बाद में इस रोशनी में चलते रहे ताकि अंधेरा तुम पर छा न जाए। जो अंधेरे जब ईसा अपने जलाल को पहुँचा तो उन्हें याद आया कि लोगों ने मैं चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है। 36 रोशनी उस के साथ यह कुछ किया था और वह समझ गए कि कलाम — तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि ए — मुकद्दस में इस का जिक्र भी है। 17 जो मजमा उस वक्त ईसा तुम खुदा के फर्जन्द बन जाओ।” 37 अगर चेरे ईसा ने यह तमाम के साथ था जब उस ने लाज़र को मुर्दों में से जिन्दा किया था, वह खुदाई करिश्मे उन के सामने ही दिखाए तो भी वह उस पर ईमान न दूसरों को इस के बारे में बताता रहा था। 18 इसी वजह से इतने लोग लाए। 38 यूँ यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई, “ऐ रब्ब, कौन ईसा से मिलने के लिए आए थे, उन्होंने उस के इस खुदाई करिश्मे हमारे पैगाम पर ईमान लाया? और रब्ब की कुट्रट किस पर जाहिर के बारे में सुना था। 19 यह देख कर फरीसी आपस में कहने लगे, हूँ?” 39 चुनौते वह ईमान न ला सके, जिस तरह यसायाह नबी ने “आप देख रहे हैं कि बात नहीं बन रही। देखो, तमाम दुनियाँ उस कही और फरमाया है, 40 “खुदा ने उन की अँखों को अंथा किया के पीछे हो ली है।” 20 कुछ यूनानी भी उन में थे जो फ़सह की और उन के दिल को बेहिस्स कर दिया है, नहीं तो वो अपनी अँखों ईद के मौके पर इबादत करने के लिए आए हुए थे। 21 अब वह से देखेंगे और अपने दिल से समझेंगे, और मेरी तरफ रजू करें, और फ़िलिप्पस से मिलने आए जो गलील के बैत — सैदा से था। उन्होंने मैं उन्हे शिफा दूँ।” 41 यसायाह ने यह इस लिए फ़रमाया क्यूँकि उस ने कहा, “जनाब, हम ईसा से मिलना चाहते हैं।” 22 फ़िलिप्पस ने ने ईसा का जलाल देख कर उस के बारे में बात की। 42 तो भी बहुत अन्द्रियास को यह बात बताई और फिर वह मिल कर ईसा के पास से लोग ईसा पर ईमान रखते थे। उन में कुछ राहनुमा भी शामिल थे।

लेकिन वह इस का खुला इकरार नहीं करते थे, क्योंकि वह डरते थे नहीं।” 11 (ईसा को मालूम था कि कौन उसे दुश्मन के हवाले कि फरीसी हमें यहदी ज्याअत से निकाल देंगे। 43 असल में वह करेगा। इस लिए उस ने कहा कि सब के सब पाक — साफ नहीं खुदा की इज्जत के बजाए इंसान की इज्जत को ज्यादा अजीज़ है।) 12 उन सब के पैरों को धोने के बाद ईसा दुबारा अपना लिबास रखते थे। 44 फिर ईसा पुकार उठा, “जो मुझ पर ईमान रखता है वह पहन कर बैठ गया। उस ने सवाल किया, “क्या तुम समझते हो न सिर्फ मुझ पर बल्कि उस पर ईमान रखता है जिस ने मुझे भेजा है। कि मैं ने तुम्हारे लिए क्या किया है? 13 तुम मुझे ‘उस्ताद’ और 45 और जो मुझे देखता है वह उसे देखता है जिस ने मुझे भेजा है। ‘खुदावन्द’ कह कर मुखातिब करते हो और यह सही है, क्योंकि मैं 46 मैं रोशनी की तरह से इस दुनियाँ में आया हूँ ताकि जो भी मुझ पर यही कुछ है। 14 मैं तुम्हारे खुदावन्द और उस्ताद ने तुम्हारे पैर ईमान लाए वह अंधेरे में न रहे। 47 जो मेरी बातें सुन कर उन पर धोए। इस लिए अब तुम्हारा फर्ज़ भी है कि एक दूसरे के पैर धोया अपल नहीं करता मैं उसका इन्साफ नहीं करूँगा, क्योंकि मैं दुनियाँ करो। 15 मैंने तुम को एक नमूना दिया है ताकि तुम भी वही करो जो का इन्साफ करने के लिए नहीं आया बल्कि उसे नजात देने के मैं ने तुम्हारे साथ किया है। 16 मैं तुम को सच बताता हूँ कि गुलाम लिए। 48 तो भी एक है जो उस का इन्साफ करता है। जो मुझे रद् अपने मालिक से बड़ा नहीं होता, न पैगम्बर अपने भेजने वाले से। करके मेरी बातें कुबल नहीं करता मेरा पेश किया गया कलाम ही 17 अगर तुम यह जानते हो तो इस पर अमल भी करो, तभी तुम कथामत के दिन उस का इन्साफ करेगा। 49 क्योंकि जो कुछ मैं ने मुबारिक होगे। 18 मैं तुम सब की बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैंने बयान किया है वह मेरी तरफ से नहीं है। मेरे भेजने वाले बाप ही ने चुन लिया है उन्हें मैं जानता हूँ। लेकिन कलाम — ए — मुकद्दस मुझे हक्म दिया कि क्या कहना और क्या सुनाना है। 50 और मैं की उस बात का पूरा होना ज़स्तर है, जो मेरी रोटी खाता है उस ने जानता हूँ कि उस का हक्म हमेशा की ज़िन्दगी तक पहुँचता है। मुझ पर लात उठाई है। 19 मैं तुम को इस से पहले कि वह पेश आए यह अभी बता रहा हूँ, ताकि जब वह पेश आए तो तुम ईमान लाओ कि मैं वही हूँ। 20 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो शाख से उसे कुबल करता है। और जो मुझे कुबल करता है वह उसे कुबल करता है जिस ने मुझे भेजा है।” 21 इन अल्पाज्ञ के बाद ईसा बेहद दुर्वी हुआ और कहा, “मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम मैं से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।” 22 शारिर्द उलझन में एक दूसरे को देख कर सोचने लगे कि ईसा किस की बात कर रहा है। 23 एक शारिर्द जिसे ईसा मुहब्बत करता था उस के बिल्कुल करीब बैठा था। 24 पतरस ने उसे ईशारा किया कि वह उस से पूछे कि वह किस की बात कर रहा है। 25 उस शारिर्द ने ईसा की तरफ सर ढुका कर पूछा, “खुदावन्द, वह कौन है?” 26 ईसा ने जवाब दिया, “जिसे मैं गोटी का निवाला शोर्वे में डुबो कर ढूँ वही है।” फिर निवाले को डुबो कर उस ने शमैन इस्करियोती के बेटे यहदाह को दे दिया। 27 जैसे ही यहदाह ने यह निवाला ले लिया इल्लीस उस में बस गया। ईसा ने उसे बताया, “जो कुछ करना है वह जल्दी से कर ले।” 28 लेकिन मेज़ पर बैठे लोगों में से किसी को मालूम न हुआ कि ईसा ने यह क्यूँ कहा। 29 कुछ का ख्याल था कि चूँकि यहदाह खजांची था इस लिए वह उसे बता रहा है कि ईद के लिए ज़रूरी चीज़ें खरीद ले या गरीबों में कुछ बाँट दे। 30 चुनाँचे ईसा से यह निवाला लेते ही यहदाह बाहर निकल गया। रात का बक्तव्य था। 31 यहदाह के चले जाने के बाद ईसा ने कहा, “अब इन — ए — आदम ने जलाल पाया और खुदा ने उस में जलाल पाया है। 32 हाँ, चूँकि खुदा को उस में जलाल मिल गया है इस लिए खुदा अपने में फर्ज़न्द को जलाल देका। और वह यह पर पाक — साफ है। तुम पाक — साफ हो, लेकिन सब के सब

13 फसह की ईद अब शुरू होने वाली थी। ईसा जानता था कि

वह बक्तव्य आ गया है कि मुझे इस दुनियाँ को छोड़ कर बाप के पास जाना है। अगर चे उस ने हमेशा दुनियाँ में अपने लोगों से मुहब्बत रखी थी, लेकिन अब उस ने आखिरी हृद तक उन पर अपनी मुहब्बत का इजहार किया। 2 फिर शाम का खाना तयार हुआ। उस बक्तव्य इल्लीस शमैन इस्करियोती के बेटे यहदाह के दिल में ईसा को दुश्मन के हवाले करने का झारा डाल चुका था। 3 ईसा जानता था कि बाप ने सब कुछ मेरे हवाले कर दिया है और कि मैं खुदा से निकल आया और अब उस के पास वापस जा रहा हूँ। 4 चुनाँचे उस ने दस्तरखाना से उठ कर अपना चोपा उतार दिया और कमर पर तौलिया बाँध लिया। 5 फिर वह बासन में पानी डाल कर शारिर्दों के पैर धोने और बैंधे हुए तौलिया से पोंछ कर खुश करने लगा। 6 जब पतरस की बारी आई तो उस ने कहा, “खुदावन्द, आप मेरे पैर धोना चाहते हैं?” 7 ईसा ने जवाब दिया, “इस बक्तव्य त् नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन बाद मैं यह तेरी समझ में आ जाएगा।” 8 पतरस ने एतराज़ किया, “मैं कभी भी आप को मेरे पैर धोने नहीं दृग्ग!” ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरी कोई शराकत नहीं।” (aiōn g165) 9 यह सुन कर पतरस ने कहा, “तो फिर खुदावन्द, न सिर्फ मेरे पैर बल्कि मेरे हाथों और सर को भी धोएँ।” 10 ईसा ने जवाब दिया, “जिस शाख से नहा लिया है उसे सिर्फ अपने पैरों को धोने की ज़स्तर होती है, क्यूँकि वह पूरे तौर पर पाक — साफ है। तुम पाक — साफ हो, लेकिन सब के सब

जलाल फौरन देगा। 33 मेरे बच्चों, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे पास बाप को बेटे में जलाल मिल जाए। 14 जो कुछ तुम मेरे नाम में मुझ ठहरँगा। तुम मुझे तलाश करोगे, और जो कुछ मैं यहदियों को बता से चाहो वह मैं कहूँगा।” 15 “आर तुम मुझे मुहब्बत करते हो चुका हूँ वह अब तुम को भी बताता हूँ, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम तो मेरे हक्कमों के मुताबिक जिन्दगी गुजारोगे। 16 और मैं बाप से नहीं आ सकते। 34 मैं तुम को एक नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक गुजारिश कहूँगा तो वह तुम को एक और मददगार देगा जो हमेशा दूसरे से मुहब्बत रखो। जिस तरह मैं ने तुम से मुहब्बत रखी उसी तक तुम्हारे साथ रहेगा (aiōn g165) 17 यारी सच्चाई की रुह, जिसे तरह तुम भी एक दूसरे से मुहब्बत करो। 35 अगर तुम एक दूसरे से दुनियों पा नहीं सकती, क्यूँकि वह न तो उसे देखती न जानती है। मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे शारिर्द हो।” 36 पतरस लेकिन तुम उसे जानते हो, क्यूँकि वह तुम्हारे साथ रहती है और ने पृछा, खुदावन्द, “आप कहाँ जा रहे हैं?” इसा ने जवाब दिया आइन्दा तुम्हारे अन्दर रहेगी।” 18 “मैं तुम को यतीम छोड़ कर “जहाँ मैं जाता हूँ अब तो तू मेरे पीछे आ नहीं सकता लेकिन बाद में नहीं जाऊँगा बल्कि तुम्हारे पास वापस आऊँगा। 19 थोड़ी देर के तू मेरे पीछे आ जाएगा।” 37 पतरस ने सवाल किया, “खुदावन्द, मैं बाद दुनियाँ मुझे नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखते रहोगे। चूँकि मैं आप के पीछे अभी क्यूँ नहीं जा सकता? मैं आप के लिए अपनी जिन्दा हूँ इस लिए तुम भी जिन्दा रहोगे। 20 जब वह दिन आएगा तो जान तक देने को तयार हैं।” 38 लेकिन इसा ने जवाब दिया, “तू तुम जान लेंगे कि मैं अपने बाप मैं हूँ, तुम मुझ मैं हो और मैं तुम मैं। मेरे लिए अपनी जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता हूँ कि मुर्गा 21 जिस के पास मेरे हुक्म है और जो उन के मुताबिक जिन्दगी के बांग देने से पहले पहले तू तीन मर्तबा मुझे जानने से इन्कार कर गुजारता है, वही मुझे प्यार करता है। और जो मुझे प्यार करता चुका हैगा।”

14 “तुम्हारा दिल न घबराए। तुम खुदा पर ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान रखो। 2 मेरे आसमानी बाप के घर में बेशुमार मकान है। अगर ऐसा न होता तो क्या मैं तुम को बताता कि मैं तुम्हारे लिए जगह तथ्याकरने के लिए वहाँ जा रहा हूँ? 3 और आग मैं जा कर तुम्हारे लिए जगह तथ्याकरने के लिए वहाँ जा रहा हूँ? 4 “और जहाँ मैं जा रहा हूँ उस की राह तुम जानते हो।” 5 तोमा बोल उठा, “खुदावन्द, हमें मालूम नहीं कि आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम उस की राह किस तरह जानें?” 6 इसा ने जवाब दिया, “राह हक्क और जिन्दगी मैं हूँ। कोई मेरे वर्सीते के बाहर बाप के पास नहीं आ सकता। 7 अगर तुम ने मुझे जान लिया है तो इस का मतलब है कि तुम मेरे बाप को भी जान लोगे। और अब तुम उसे जानते हो और तुम ने उस को देख लिया है।” 8 फिलिप्पस ने कहा, “ऐ खुदावन्द, बाप को हमें दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफी है।” 9 इसा ने जवाब दिया, “फिलिप्पस, मैं इतनी देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इस के बावजूद तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा उस ने बाप को देखा है। तो फिर तू क्यूँकर कहता है, बाप को हमें दिखाएँ? 10 क्या तू ईमान नहीं रखता कि मैं बाप मैं हूँ और बाप मुझ मैं है? जो बातें मैं तुम को बताता हूँ वह मेरी नहीं बल्कि मुझ मैं रहने वाले बाप की तरफ से हैं। वही अपना काम कर रहा है। 11 मेरी बात का यकीन करो कि मैं बाप मैं हूँ और बाप मुझ मैं है। या कम से कम उन कामों की बिंबा पर यकीन करो जो मैंने किए हैं।” 12 “मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो मुझ पर ईमान रखे वह वही करेगा जो मैं करता हूँ। न सिर्फ़ यह बल्कि वह इन से भी बड़े काम करेगा, क्यूँकि मैं बाप के पास जा रहा हूँ। 13 और जो कुछ तुम मेरे नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि

15 “अंगू का हक्कीकी दरखत मैं हूँ और मेरा बाप बागबान है।

2 वह मेरी हर डाल को जो फल नहीं लाती काट कर फैक

देता है। लेकिन जो डाली फल लाती है उस की वह कॉट — छाँट की बजह से करेंगे, क्यूँकि वह उसे नहीं जानते जिस ने मुझे भेजा करता है ताकि ज्यादा फल लाए। 3 उस कलाम के बजह से जो मैं ने है। 22 अगर मैं आया न होता और उन से बात न की होती तो वह तुम को सुनाया है तुम तो पाक — साफ हो चुके हो। 4 मुझ में काई रुक्सरावार न ठहरते। लेकिन अब उन के गुनाह का कोई भी उत्तर रहो तो मैं भी तुम में काई रहँगा। जो डाल दरखत से कट गई है वह बाकी नहीं रहा। 23 जो मुझ से दुश्मनी रखता है वह मेरे बाप से भी फल नहीं ला सकती। बिल्कुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझ में दुश्मनी रखता है। 24 अगर मैं ने उन के दरमियान ऐसा काम न काई रही रहो तो फल नहीं ला सकते। 5 मैं ही अंगूर का दरखत किया होता जो किसी और ने नहीं किया तो वह कुसरावार न ठहरते। हूँ, और तुम उस की डालियाँ हो। जो मुझ में काई रहता है और मैं लेकिन अब उन्होंने ने सब कुछ देखा है और फिर भी मुझ से और मेरे उस में वह बहुत सा फल लाता है, क्यूँकि मुझ से अलग हो कर तुम बाप से दुश्मनी रखी है। 25 और ऐसा होना भी था ताकि कलाम — कुछ नहीं कर सकते। 6 जो मुझ में काई रही रहता और न मैं उस ए — मुकड़स की यह नबुव्वत पूरी हो जाए कि ‘उन्होंने कहा है 26 मैं उसे सूखी डाल की तरह बाहर फैक दिया जाता है। और लोग उन जब वह मददगार आएगा जिसे मैं बाप की तरफ से तुम्हारे पास का ढेर लगा कर उन्हें आग में झोके देते हैं जहाँ वह जल जाती है। भेज़ूँगा तो वह मेरे बारे में गवाही देगा। वह सच्चाई का स्थ है जो 7 अगर तुम मुझ में काई रहो और मैं तुम में तो जो जी चाहे माँगो, बाप में से निकलता है। 27 तुम को भी मेरे बारे में गवाही देना है, वह तुम को दिया जाएगा। 8 जब तुम बहुत सा फल लाते और यूँ मेरे क्यूँकि तुम शुस्से ही मेरे साथ रहे हो।”

शारीर्द साबित होते हो तो इस से मेरे बाप को जलाल मिलता है। 9 जिस तरह बाप ने मुझ से मुहब्बत रखी है उसी तरह मैं ने तुम से भी मुहब्बत रखी है। अब मेरी मुहब्बत मैं काई रही। 10 जब तुम मेरे हक्म के मुताबिक ज़िन्दगी गुजारते हो तो तुम मुझ में काई रहते हो। 11 मैं भी इसी तरह अपने बाप के अहकाम के मुताबिक चलता हूँ और यूँ उस की मुहब्बत मैं काई रहता हूँ। 11 मैं ने तुम को यह इस लिए बताया है ताकि मेरी खुशी तुम में हो बल्कि तुहारा दिल खुशी से भर कर छलक उठे।” 12 “मेरा हक्म यह है कि एक दूसरे को वैसे प्यार करो जैसे मैं ने तुम को प्यार किया है। 13 इस से बड़ी मुहब्बत है नहीं कि कोई अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे। 14 तुम मेरे दोस्त हो अगर तुम वह कुछ करो जो मैं तुम को बताता हूँ। 15 अब से मैं नहीं कहता कि तुम गुलाम हो, क्यूँकि गुलाम नहीं जानता कि उस का मालिक क्या करता है। इस के बजाए मैं ने कहा है कि तुम दोस्त हो, क्यूँकि मैं ने तुम को सब कुछ बताया है जो मैं ने अपने बाप से सुना है। 16 तुम ने मुझे नहीं चुना बल्कि मैं ने तुम को चुन लिया है। मैं ने तुम को मुकर्रर किया कि जा कर फल लाओ, ऐसा फल जो काई रहे। फिर बाप तुम को वह कुछ देगा जो तुम मेरे नाम से माँगोगे। 17 मेरा हक्म यही है कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो।” 18 अगर दुनियाँ तुम से दुश्मनी रखे तो यह बात जहन में रखो कि उस ने तुम से पहले मुझ से दुश्मनी रखी है। 19 अगर तुम दुनियाँ के होते तो दुनियाँ तुम को अपना समझ कर प्यार करती। लेकिन तुम दुनियाँ के नहीं हो। मैं ने तुम को दुनियाँ से अलग करके चुन लिया है। इस लिए दुनियाँ तुम से दुश्मनी रखती है। 20 वह बात याद करो जो मैं ने तुम को बताई कि गुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता। अगर उन्होंने मेरे मुझे सत्याहा है तो तुहें भी सत्याएँ। और अगर उन्होंने मेरे कलाम के मुताबिक ज़िन्दगी गुजारी तो वह तुम्हारी बातों पर भी अपल करेंगे। 21 लेकिन तुम्हारे साथ जो कुछ भी करेंगे, मेरे नाम

16 “मैं ने तुम को यह इस लिए बताया है ताकि तुम गुमराह न हो जाओ। 2 वह तुम को यहदी जमाअतों से निकाल देंगे, बल्कि वह वक्त भी अने बाल है कि जो भी तुम को मार डालेगा वह समझेगा, मैंने खुदा की खिदमत की है। 3 वह इस क्रिस्म की हरकतें इस लिए करेंगे कि उन्होंने न बाप को जाना है, न मुझे। 4 (जिस ने यह देखा है उस ने गवाही दी है और उस की गवाही सच्ची है।) । वह जानता है कि वह हकीकत बयान कर रहा है और उस की गवाही का मक्सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ।” 5 “लेकिन अब मैं उस के पास जा रहा हूँ जिस ने मुझे भेजा है। तो भी तुम मैं कोई मुझ से नहीं पूछता, ‘आप कहाँ जा रहे हैं?’ 6 इस के बजाए तुम्हारे दिल उदास हैं कि मैं ने तुम को ऐसी बातें बताई हैं। 7 लेकिन मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम्हारे लिए फाइदामन्द है कि मैं जा रहा हूँ। अगर मैं न जाऊँ तो मददगार तुम्हारे पास नहीं आएगा। लेकिन अगर मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। 8 और जब वह आएगा तो गुनाह, रास्तबाज़ी और अदालत के बारे में दुनियाँ की गलती को बेनिकाब करके यह जाहिर करेगा: 9 गुनाह के बारे में यह कि लोग मुझ पर ईमान नहीं रखते, 10 रास्तबाज़ी के बारे में यह कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे अब से नहीं देखोगे, 11 और अदालत के बारे में यह कि इस दुनियाँ के हाकिम की अदालत हो चुकी है।” 12 “मुझे तुम को बहुत कुछ बताना है, लेकिन इस वक्त तुम उसे बर्दाशत नहीं कर सकते। 13 जब सच्चाई का स्थ आएगा तो वह पूरी सच्चाई की तरफ तुम्हारी राहनुमाई करेगा। वह अपनी मर्जी से बात नहीं करेगा बल्कि सिर्फ वही कुछ कहेगा जो वह खुद सुनेगा। वही तुम को भी। मुस्तकबिल के बारे में बताएगा 14 और वह इस में मुझे जलाल देगा कि वह तुम को वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझ से मिला होगा। 15 जो कुछ भी बाप का है वह मेरा है। इस लिए मैं ने कहा, स्थ तुम को वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझ से

मिला होगा।” 16 “थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे। फिर बात बताई ताकि तुम मुझ में सलामती पाओ। दुनियाँ में तुम मुसीबत थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे।” 17 उस के कुछ में फँसे रहते हो। लेकिन हौसला रखो, मैं दुनियाँ पर गालिब आया शार्गिर्द अपस में बात करने लगे, इसा के यह कहने से क्या मुश्ठ है है।”

कि “थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे? और इस का क्या मतलब है, मैं बाप के पास जा रहा हूँ?” 18 और वह सोचते रहे, “यह किस किस्म की ‘थोड़ी देर’ है जिस का जिक्र वह कर रहे हैं? हम उन की बात नहीं समझते।” 19 इसा ने जान लिया कि वह मुझ से इस के बारे में सवाल करना चाहते हैं। इस लिए उस ने कहा, “क्या तुम एक दूसरे से पूछ रहे हो कि मेरी इस बात का क्या मतलब है कि ‘थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे?’” 20 मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम रो रो कर मातम करोगे जबकि दुनियाँ खुश होगी। तुम गम करोगे, लेकिन तुम्हारा गम खुशी में बदल जाएगा। 21 जब किसी औरत के बच्चा पैदा होने वाला होता है तो उसे गम और तकलीफ होती है क्यूँकि उस का वक्त आ गया है। लेकिन ज़ूँ ही बच्चा पैदा हो जाता है तो मौँ खुशी के मारे कि एक इंसान दुनियाँ में आ गया है अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है। 22 यही तुम्हारी हालत है। क्यूँकि अब तुम उदास हो, लेकिन मैं तुम से दुबारा मिलूँगा। उस वक्त तुम को खुशी होगी, ऐसी खुशी जो तुम से कोई छीन न लेगा। 23 उस दिन तुम मुझ से कुछ नहीं पछोगे। मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम में बाप से माँगोगे वह तुम को देगा। 24 अब तक तुम ने मेरे नाम में कुछ नहीं माँगा। माँगो तो तुम को मिलेगा। फिर तुम्हारी खुशी पूरी हो जाएगी।” 25 “मैं ने तुम को यह मिसालों में बताया है। लेकिन एक दिन आएगा जब मैं एसा नहीं करूँगा। उस वक्त मैं मिसालों में बात नहीं करूँगा बल्कि तुम को बाप के बारे में साफ साफ बता दूँगा। 26 उस दिन तुम मेरा नाम ले कर माँगोगे। मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि मैं ही तुम्हारी खातिर बाप से दरखास्त करूँगा। 27 क्यूँकि बाप खुद तुम को प्यार करता है, इस लिए कि तुम ने मुझे प्यार किया है और ईमान लाए हो कि मैं खुदा में से निकल आया हूँ। 28 मैं बाप में से निकल कर दुनियाँ में आया हूँ, और अब मैं दुनियाँ को छोड़ कर बाप के पास वापस जाता हूँ।” 29 इस पर उस के शार्गिर्दों ने कहा, “अब आप मिसालों में नहीं बल्कि साफ साफ बात कर रहे हैं। 30 अब हमें समझ आई है कि आप सब कुछ जानते हैं और कि इस की ज़स्तर नहीं कि कोई आप की पूछ — तात्त्व करे। इस लिए हम ईमान रखते हैं कि आप खुदा में से निकल कर आए हैं।” 31 इसा ने जवाब दिया, “अब तुम ईमान रखते हो? 32 देखो, वह वक्त आ रहा है बल्कि आ चुका है जब तुम तिर — बितर हो जाओगे। मुझे अकेला छोड़ कर हर एक अपने घर चला जाएगा। तो भी मैं अकेला नहीं हूँगा क्यूँकि बाप मैं साथ है। 33 मैं ने तुम को इस लिए यह

17 यह कह कर इसा ने अपनी नज़र आसमान की तरफ उठाई

और दुआ की, “ऐ बाप, वक्त आ गया है। अपने बेटे को जलाल दे ताकि बेटा तुझे जलाल दे। 2 क्यूँकि तू ने उसे तमाम ईसानीं पर इखियार दिया है ताकि वह उन सब को हमेशा की ज़िन्दगी दे जो तू ने उसे दिया है। (aiōnios g166) 3 और हमेशा की ज़िन्दगी यह है कि वह तुझे जान ले जो वाहिद और सच्चा खुदा है और ईसा मसीह को भी जान ले जिसे तू ने भेजा है। (aiōnios g166) 4 मैं ने तुझे जमीन पर जलाल दिया और उस काम को पूरा किया जिस की ज़िम्मेदारी तू ने मुझे दी थी। 5 और अब मुझे अपने हज़र जलाल दे, ऐ बाप, वही जलाल जो मैं दुनियाँ की पैदादेश से पहले तेरे साथ रखता था।” 6 “मैं ने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया जिन्हें तू ने दुनियाँ से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे ही थे। तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने ने तेरे कलाम के मुताबिक ज़िन्दगी गुजारी है। 7 अब उन्होंने जान लिया है कि जो कुछ भी तू ने मुझे दिया है वह तेरी तरफ से है। 8 क्यूँकि जो बातें तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है। नतीजे मैं उन्होंने ने यह बातें कबूल करके हकीकी तौर पर जान लिया कि मैं तुझ में से निकल कर आया हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तू ने मुझे भेजा है। 9 मैं उन के लिए दुआ करता हूँ, दुनियाँ के लिए नहीं बल्कि उन के लिए जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्यूँकि वह तेरे ही है। 10 जो भी मेरा है वह तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है। चुनाँचे मुझे उन में जलाल मिला है। 11 अब से मैं दुनियाँ में नहीं हूँगा। लेकिन यह दुनियाँ में रह गए हैं जबकि मैं तेरे पास आ रहा हूँ। कुदूस बाप, अपने नाम में उन्हें महफूज रख, उस नाम में जो तू ने मुझे दिया है, ताकि वह एक हो जैसे हम एक हैं। 12 जिती देर मैं उन के साथ रहा मैं ने उन्हें तेरा नाम में महफूज रखा, उसी नाम में जो तू ने मुझे दिया था। मैं ने यूँ उन की निगहबानी की कि उन में से एक भी हलाक नहीं हुआ सिवाए हलाकत के फर्जन्द के। यूँ कलाम की पेशीगोई पूरी ही है। 13 अब तो मैं तेरे पास आ रहा हूँ। लेकिन मैं दुनियाँ में होते हुए यह बयान कर रहा हूँ ताकि उन के दिल मेरी खुशी से भर कर छलक उठें। 14 मैं ने उन्हें तेरा कलाम दिया है और दुनियाँ ने उन से दुश्मनी रखी, क्यूँकि यह दुनियाँ के नहीं हैं, जिस तरह मैं भी दुनियाँ का नहीं हूँ। 15 मेरी दुआ यह नहीं है कि तू उन्हें दुनियाँ से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इब्लीस से महफूज रखे। 16 वह दुनियाँ के नहीं हैं जिस तरह मैं भी दुनियाँ का नहीं हूँ। 17 उन्हें सच्चाई के वसीले से मरम्भस — ओ — मुकद्दस कर। तेरा कलाम ही सच्चाई है। 18 जिस तरह तू ने मुझे दुनियाँ में भेजा है उसी तरह मैं ने भी उन्हें दुनियाँ में भेजा है। 19 उन की खातिर मैं अपने आप

को मख्सूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी सच्चाई के बसीले से मख्सूस ससर था। 14 काइफ़ा ही ने यहदियों को यह मशवरा दिया था कि — ओ — मुकद्दस किया जाए।” 20 “मेरी दुआ न सिर्फ़ इन ही के बेहतर यह है कि एक ही आदमी उम्रत के लिए मर जाए। 15 शमैन लिए है, बल्कि उन सब के लिए भी जो इन का पैगाम सुन कर मुझ पतरस किसी और शारिर्द के साथ ईसा के पीछे हो लिया था। यह पर ईमान लाएँगे 21 ताकि सब एक हों। जिस तरह तू ऐ बाप, मुझ में दूसरा शारिर्द इमाम — ए — आज्ञम का जानने वाला था, इस लिए है और मैं तुझ में हूँ उसी तरह वह भी हम में हों ताकि दुनियाँ यकीन वह ईसा के साथ इमाम — ए — आज्ञम के सहन में दाखिल हुआ। करे कि तू ने मुझे भेजा है। 22 मैं ने उन्हें वह जलाल दिया है जो तू ने 16 पतरस बाहर दरवाजे पर खड़ा रहा। फिर इमाम — ए — आज्ञम मुझे दिया है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक हैं, 23 मैं उन में का जानने वाला शारिर्द दुबारा निकल आया। उस ने दरवाजे की ओर तू मुझे मैं। वह कामिल तौर पर एक हों ताकि दुनियाँ जान ले निगरानी करने वाली औरत से बात की तो उसे पतरस को अपने साथ कि तू ने मुझे भेजा और कि तू ने उन से मुहब्बत रखी है जिस तरह अन्दर ले जाने की इजाजत मिली। 17 उस औरत ने पतरस से पूछा, मुझ से रखी है। 24 ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तू ने मुझे दिए हैं वह “तुम भी इस आदमी के शारिर्द हो कि नहीं?” उस ने जबाब दिया, भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल को देखे, वह “नहीं, मैं नहीं हूँ।” 18 ठन्डा थी, इस लिए गुलामों और पहरेदारों जलाल जो तू ने इस लिए मुझे दिया है कि तू ने मुझे दुनियाँ को बनाने ने लकड़ी के कोयलों से आग जलाई। अब वह उस के पास खड़े से पहले प्यार किया है। 25 ऐ रास्तबाज़, दुनियाँ तुझे नहीं जानती, ताप रहे थे। पतरस भी उन के साथ खड़ा ताप रहा था। 19 इतने लेकिन मैं तुझे जानता हूँ। और यह शारिर्द जानते हैं कि तू ने मुझे मैं इमाम — ए — आज्ञम ईसा की पूछ — ताछ करके उस के भेजा है। 26 मैं ने तेरा नाम उन पर जाहिर किया और इसे जाहिर शारिर्दों और तालीमों के बारे में पूछ — ताछ करने लगा। 20 ईसा करता रहँगा ताकि तेरी मुझ से मुहब्बत उन में हो और मैं उन में हूँ।” ने जबाब में कहा, “मैं ने दुनियाँ में खुल कर बात की है। मैं हमेशा

18 यह कह कर ईसा अपने शारिर्दों के साथ निकला और बादी

— ए — किंद्रोन को पार करके एक बाग में दाखिल हुआ। 2 यहदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करने वाला था वह भी इस जगह से वाकिफ़ था, कर्यूँकि ईसा वहाँ अपने शारिर्दों के साथ जाया करता था। 3 राहनुमा इमामों और फरीसियों ने यहदाह को रोमी फैजियों का दस्ता और बैत — उल — मुकद्दस के कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह मशा’लें, लालटैन और हथियार लिए बाग में पहुँचे। 4 ईसा को मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। चुरूँचे उस ने निकल कर उन से पूछा, “तुम किस को ढूँढ रहे हो?” 5 उन्होंने जबाब दिया, “ईसा ने उन्हें बताया, “मैं ही हूँ।” यहदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करना चाहता था, वह भी उन के साथ खड़ा था। 6 जब ईसा ने एलान किया, “मैं ही हूँ,” तो सब पीछे हट कर ज़मीन पर पिर पड़े। 7 एक और बार ईसा ने उन से सवाल किया, “तुम किस को ढूँढ रहे हो?” 8 उस ने कहा, “मैं तुम को बता चुका हूँ कि मैं ही हूँ।” अगर तुम मुझे ढूँढ रहे हो तो इन को जाने दो।” 9 चूँकि उस की यह बात पूरी हुई, “मैं ने उन में से जो तू ने मुझे दिए हैं एक को भी नहीं खोया।” 10 शमैन पतरस के पास तलवार थी। अब उस ने उसे मियान से निकाल कर इमाम — ए — आज्ञम के गुलाम का दहना कान उड़ा दिया (गुलाम का नाम मलखुस था) 11 लेकिन ईसा ने पतरस से कहा, “तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह प्याला न पियूँ जो बाप ने मुझे दिया है?” 12 फिर फौजी दस्ते, उन के अपसर और बैत — उल — मुकद्दस के यहदी पहरेदारों ने ईसा को गिरफ्तार करके बाँध लिया। 13 पहले वह उसे हन्ना के पास ले गए। हन्ना उस साल के इमाम — ए — आज्ञम काइफ़ा का

यहदी इबादतखानों और हैकल में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ तमाम यहदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदारी में तो मैं ने कुछ नहीं कहा। 21 आप मुझ से क्यूँ पूछ रहे हैं? उन से दर्यापात करें जिन्होंने मेरी बाते सुनी हैं। उन को मालूम है कि मैं ने क्या कुछ कहा है।” 22 “इस पर साथ खड़े हैकल के पहरेदारों में से एक ने ईसा के मुँह पर थप्पड़ मार कर कहा, क्या यह इमाम — ए — आज्ञम से बात करने का तरीका है जब वह तुम से कुछ पूछे?” 23 ईसा ने जबाब दिया, “अगर मैं ने बुरी बात की है तो साक्षित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तू ने मुझे क्यूँ मारा?” 24 फिर हन्ना ने ईसा को बँधी हुई हालत में इमाम — ए — आज्ञम काइफ़ा के पास भेज दिया। 25 शमैन पतरस अब तक आग के पास खड़ा ताप रहा था। इतने में दूसरे उस से पूछने लगे, “तुम भी उस के शारिर्द हो कि नहीं?” 26 फिर इमाम — ए — आज्ञम का एक गुलाम बोल उठा जो उस आदमी का रिशेदार था जिस का कान पतरस ने उड़ा दिया था, “क्या मैं ने तुम को बाग में उस के साथ नहीं देखा था?” 27 पतरस ने एक बार फिर इन्कार किया, और इन्कार करते ही मुर्गी की बाँग सुनाई दी। 28 फिर यहदी ईसा को काइफ़ा से ले कर रोमी गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियुम के पास पहुँच गए। अब सुबह हो चुकी थी और चैंकी यहदी फसह की ईंदे के खाने में शरीक होना चाहते थे, इस लिए वह महल में दाखिल न हुए, वर्णा वह नापाक हो जाते। 29 चुरूँचे पिलातुस निकल कर उन के पास आया और पूछा, “तुम इस आदमी पर क्या इल्जाम लगा रहे हो?” 30 उन्होंने जबाब दिया, “अगर यह मुजरिम न होता तो हम इसे आप के हवाले न करते।” 31 पिलातुस ने अगुवों से कहा, “फिर इसे ले जाओ और अपनी

शरई अदालतों में पेश करो।” लेकिन यहदियों ने एतराज किया, हो?” 10 पिलातुस ने उस से कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं “हमें किसी को सजा-ए-मौत देने की इजाजत नहीं।” 32 ईसा ने करते? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मस्लूब इस तरफ इशारा किया था कि वह किस तरह की मौत मेरेगा और करने का इख्तियार है?” 11 ईसा ने जवाब दिया, “आप को मुझ पर अब उस की यह बात पूरी ही है। 33 तब पिलातुस फिर अपने महल में इख्तियार न होता अगर वह आप को ऊपर से न दिया गया होता। गया। वहाँ से उस ने ईसा को बुलाया और उस से पूछा, “क्या तुम इस बजह से उस शब्द से ज्यादा संभान गुनाह हुआ है जिस ने मुझे यहदियों के बादशाह हो?” 34 ईसा ने पूछा, “क्या आप अपनी दुश्मन के हवाले कर दिया है।” 12 इस के बाद पिलातुस ने उसे तरफ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आप को मेरे बारे में छोड़ने की कोशिश की। लेकिन यहदी चीख चीख कर कहने लगे, बताया है?” 35 पिलातुस ने जवाब दिया, “क्या मैं यहदी हूँ?” “अगर आप इसे रिहा करें तो आप रोमी शहनशाह कैसर के दोस्त तुम्हारी अपनी कौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले किया साबित नहीं होंगे। जो भी बादशाह होने का दावा करे वह कैसर की है। तुम से क्या कुछ हुआ है?” 36 ईसा ने कहा, “मेरी बादशाही इस मुखालिफत करता है।” 13 इस तरह की बातें सुन कर पिलातुस ईसा दुनियाँ की नहीं है। अगर वह इस दुनियाँ की होती तो मेरे खादिम को बाहर ले आया। फिर वह इंसाफ की कुसीं पर बैठ गया। उस सर्जत जड़ — ओ — जहद करते ताकि मुझे यहदियों के हवाले न जगह का नाम “पच्चीकारी” था। (अरामी जबान में वह गब्बता किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं कहलाती थी।) 14 अब दोपहर के तक्रीबन बारह बज गए थे। उस है!” 37 पीलातुस ने कहा, “तो फिर तुम वार्कइ बादशाह हो?” दिन ईंद के लिए तैयारियाँ की जाती थीं, क्यूंकि अगले दिन ईंद का ईसा ने जवाब दिया, “आप सहीह कहते हैं, मैं बादशाह हूँ। मैं इसी आगाज था। पिलातुस बोल “उठा, लो, तुम्हारा बादशाह!” 15 मक्सद के लिए पैदा हो कर दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही लेकिन वह चिल्लते रहे, “ले जाँ इसे, ले जाँ इसे मस्लूब करो!” दृঁ। जो भी सच्चाई की तरफ से है वह मेरी सुनता है।” 38 पीलातुस पीलातुस ने सवाल किया, “क्या मैं तुम्हारे बादशाह को सलीब पर ने पूछा, “सच्चाई क्या है?” फिर वह दुबारा निकल कर यहदियों चढ़ाऊँ?” राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, “सिवा-ए-शहनशाह के के पास गया। उस ने एतान किया, “मुझे उसे मुज़िम ठहराने की हमारा कोई बादशाह नहीं है।” 16 फिर पिलातुस ने ईसा को उन के कोई वजह नहीं मिली। 39 “लेकिन तुम्हारी एक रस्म है जिस के हवाले कर दिया ताकि उसे मस्लूब किया जाए। 17 वह अपनी मुताबिक मुझे ईंद — ए — फ़सह के मौके पर तुम्हारे लिए एक सलीब उठाए शहर से निकला और उस जगह पहुँचा जिस का नाम कैटी को रिहा करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं यहदियों के खोपड़ी (अरामी जबान में गल्गुता) था। 18 वहाँ उन्होंने ने उसे बादशाह’ को रिहा कर दूँ?” 40 लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने सलीब पर चढ़ा दिया। साथ साथ उन्होंने ने ईसा के बाएँ और दाएँ लगे, “नहीं, इस को नहीं बल्कि बर — अब्बा को।” (बर — हाथ दो डाकू को मस्लूब किया। 19 पिलातुस ने एक तख्ती बनवा कर उसे ईसा की सलीब पर लगवा दिया। तख्ती पर लिखा था, ‘ईसा नासरी, यहदियों का बादशाह। 20 बहुत से यहदियों ने यह पढ़ लिया, क्यूंकि ईसा को सलीब पर चढ़ाए जाने की जगह शहर के करीब थी और यह जुम्ला अरामी, लतिनी और यूनानी जबानों में लिखा था। 21 यह देख कर यहदियों के राहनुमा इमामों ने एतराज किया, “यहदियों का बादशाह न लिखें बल्कि यह कि इस आदमी ने यहदियों का बादशाह होने का दावा किया।” 22 पिलातुस ने जवाब दिया, “जो कुछ मैं ने लिख दिया सो लिख दिया।” 23 ईसा को सलीब पर चढ़ाने के बाद फैजियों ने उस के कपड़े ले कर चार हिस्सों में बॉट लिए, हर फैजी के लिए एक हिस्सा। लेकिन चोगा बेजोड़ था। वह ऊपर से ले कर नीचे तक बुना हुआ एक ही टकड़े का था। 24 इस लिए फैजियों ने कहा, “आओ, इसे फाड़ कर तकसीम न करें बल्कि इस पर पचीं डालो।” यूँ कलाम — ए — मुकद्दस की यह पेशीगोड़ी पूरी ही है, “उन्होंने आपस में मेरे कपड़े बॉट लिए और मेरे लिबास पर पचीं डाला।” फैजियों ने यही कुछ किया। 25 ईसा की सलीब के करीब: उस की माँ, उस की खाला,

19 फिर पिलातुस ने ईसा को कोडे लगवाए। 2 फैजियों ने कैंटेदार टहनियों का एक ताज बना कर उस के सर पर रख दिया। उन्होंने उसे इश्वानी रंग का चोगा भी पहनाया। 3 फिर उस के सामने आ कर वह कहते, “ऐ यहदियों के बादशाह, आदाब!” और उसे थप्पड़ मारते थे। 4 एक बार फिर पिलातुस निकल आया और यहदियों से बात करने लगा, “देखो, मैं इसे तुम्हारे पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।” 5 फिर ईसा कैंटेदार ताज और इश्वानी रंग का लिबास पहने बाहर आया। पिलातुस ने उन से कहा, “लो यह है वह आदमी।” 6 उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उन के मुलाजिम चीखने लगे, “इसे मस्लूब करें, इसे मस्लूब करें।” 7 यहदियों ने इसरार किया, “हमारे पास शरीरी अत है और इस शरीरी अत के मुताबिक लाजिम है कि वह मारा जाए। क्यूंकि इस ने अपने आप को खुदा का फर्जन्द करार दिया है।” 8 यह सुन कर पिलातुस बहुत डर गया। 9 दुबारा महल में जा कर ईसा से पूछा, “तुम कहाँ से आए

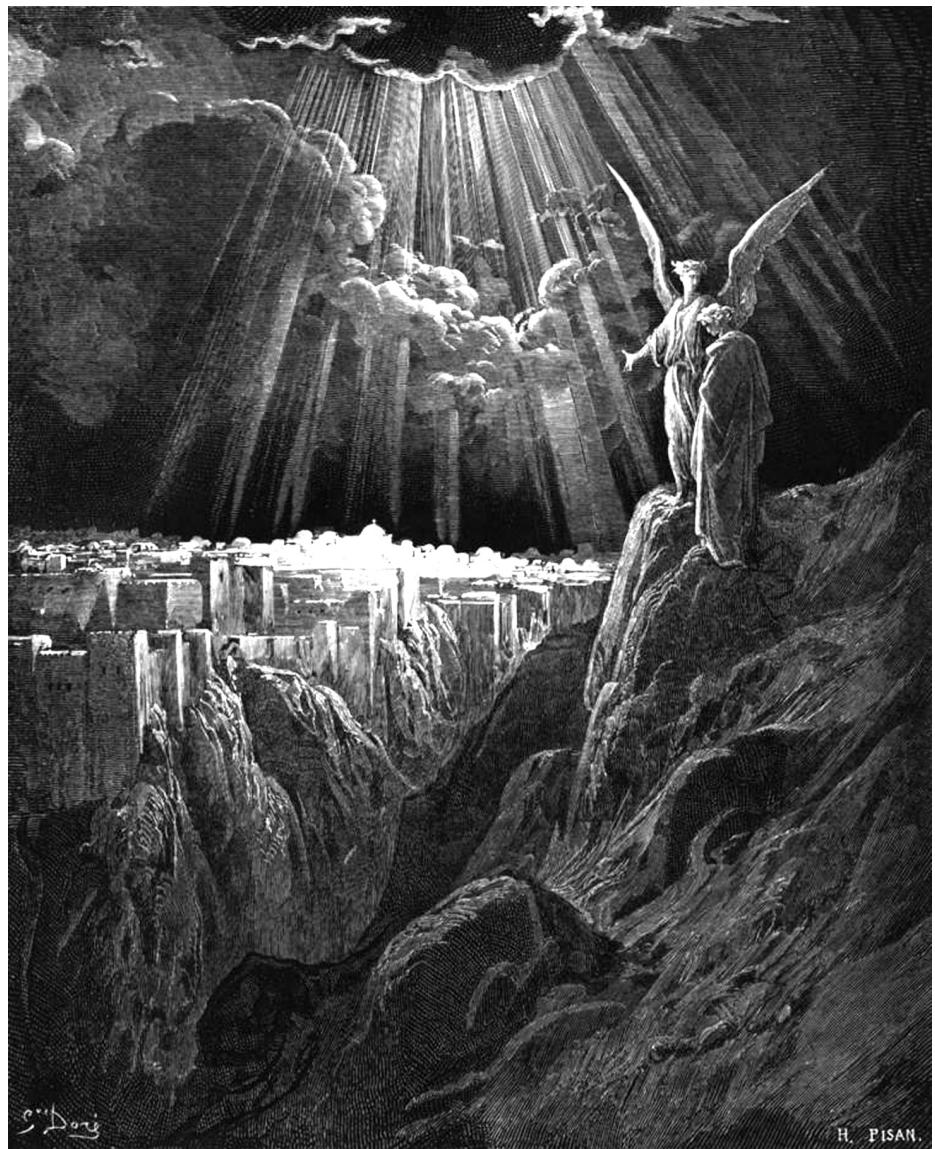
किलयुपास की बीवी मरियम और मरियम मगादलिनी खड़ी थी। **20** हफते का दिन गुजर गया तो इत्वार को मरियम मगादलिनी 26 जब ईसा ने अपनी माँ को उस शारिंद के साथ खड़े देखा जो उसे सुबह — सर्वै कब्र के पास आई। अभी अँधेरा था। वहाँ प्यारा था तो उस ने कहा, “ऐ खातून, देखें आप का बेटा यह है।” पहुँच कर उस ने देखा कि कब्र के मूँह पर का पत्थर एक तरफ 27 और उस शारिंद से उस ने कहा, “देख, तेरी माँ यह है।” उस हटाया गया है। 2 मरियम दौड़ कर शमैन पतरस और ईसा के प्यारे बक्त से उस शारिंद ने ईसा की माँ को अपने घर रखा। 28 इस के शारिंद के पास आई। उस ने खबर दी, “वह खुदावन्द को कब्र से ले बाद जब ईसा ने जान लिया कि मेरा काम मुकम्मल हो चुका है तो गए हैं, और हमें मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।” उस ने कहा, “मुझे प्यास लगी है।” (इस से भी कलाम — ए — 3 तब पतरस दूसरे शारिंद समेत कब्र की तरफ चल पड़ा। 4 दोनों मुकद्देस की एक पेशीनगोई पूरी हुई।) 29 वहाँ सिरके से भरा हुआ दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शारिंद ज्यादा तेज रफ्तार था। वह पहले एक बरतन रखा था, उन्होंने सिरके में स्पंज डुबोकर जूफ़े की डाली कब्र पर पहुँच गया। 5 उस ने झुक कर अन्दर झाँका तो कफन की पर रख कर उसके मूँह से लगाया। 30 यह सिरका पीने के बाद ईसा पट्टियाँ वहाँ पड़ी नजर आईं। लेकिन वह अन्दर न गया। 6 फिर बोल उठा, “काम मुकम्मल हो गया है।” और सर झुका कर उस ने शमैन पतरस उस के पीछे पहुँच कर कब्र में दाखिल हुआ। उस ने अपनी जान खुदा के सपुर्द कर दी। 31 फ़सह की तैयारी का दिन था भी देखा कि कफन का पट्टियाँ वहाँ पड़ी हैं 7 और साथ वह कपड़ा और अगले दिन ईंद का आगाज़ और एक खास सबत था। इस लिए भी जिस में ईसा का सर लिपटा हुआ था। यह कपड़ा तह किया गया यहदी नहीं चाहते थे कि मस्लब हुई लाशें अगले दिन तक सलीबों था और पट्टियों से अलग पड़ा था। 8 फिर दूसरा शारिंद जो पहले पर लटकी रहे। चुनाँचे उन्होंने निलातुस से गुजारिश की कि वह पहुँच गया था, वह भी दाखिल हुआ। जब उस ने यह देखा तो वह उन की टॉंगे तोड़वा कर उन्हें सलीबों से उतारने दे। 32 तब फ़ज़ियों ईमान लाया। 9 (लेकिन अब भी वह कलाम — ए — मुकद्देस की ने आ कर ईसा के साथ मस्लब किए जाने वाले आदमियों की टॉंगे नबुव्वत नहीं समझते थे कि उसे मुर्दों में से जी उठना है।) 10 फिर तोड़ दी, पहले एक की फिर दूसरे की। 33 जब वह ईसा के पास दोनों शारिंद घर वापस चले गए। 11 लेकिन मरियम रो रो कर कब्र आए तो उन्होंने न देखा कि उसकी मौत हो चुकी है, इस लिए उन्होंने के सामने खड़ी रही। और रोते हुए उस ने झुक कर कब्र में झाँका 12 ने उस की टॉंगे न तोड़ी। 34 इस के बजाए एक ने भाले से ईसा का तो क्या देखती है कि दो फ़रिश्ते सफेद लिबास पहने हुए वहाँ बैठे हैं पहलू छेद दिया। जख्म से फौरन खून और पानी बह निकला। 35 जहाँ पहले ईसा की लाश पड़ी थी, एक उस के सिरहाने और दूसरा (जिस ने यह देखा है उस ने गवाही दी है और उस की गवाही सच्ची उस के पैतृने थे। 13 उन्होंने मरियम से पूछा, “ऐ खातून, तू क्यूँ है। वह जानता है कि वह हकीकित बयान कर रहा है और उस की रो रही है?” उस ने कहा, “वह मेरे खुदावन्द को ले गए है, और गवाही का मक्कसद यह है कि आप भी ईमान लाएँ।) 36 यह यूँ हुआ मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।” 14 फिर उस ताकि कलाम — ए — मुकद्देस की यह नबुव्वत पूरी हो जाए, “उस ने पीछे मुढ़ कर ईसा को वहाँ खड़े देखा, लेकिन उस ने उसे न की एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।” 37 कलाम — ए — मुकद्देस पहचाना। 15 ईसा ने पूछा, “ऐ खातून, तू क्यूँ रो रही है, किस को मैं यह भी लिखा है, “वह उस पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने ने छेदा ढाँड़ रही है?” उसने बागबान समझ कर उस से कहा, मियाँ अगर है।” 38 बाद में अरिमतियाह के रहने वाले यूसुफ ने निलातुस से तने उपरोक्त यहाँ से उठाया हो तू मुझे बता दे कि उसे कहा रखा है ईसा की लाश उतारने की इजाजत माँगी। (यूसुफ ईसा का खुफिया ताकि मैं उसे ले जाऊँ 16 ईसा ने उस से कहा, “मरियम! उसने शारिंद था, क्यूँकि वह यहदियों से डरता था।) इस की इजाजत मुड़कर उससे इबरानी जबान में कहा “रब्बोनी ए उस्ताद” 17 ईसा मिलने पर वह आया और लाश को उतार लिया। 39 नीकुदेमुस भी ने कहा, “मुझे मत क्षु, क्यूँकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं साथ था, वह आदमी जो गुज़ेर दिगों में रात के बक्त ईसा से मिलने गया। लेकिन भाइयों के पास जा और उन्हें बता, मैं अपने बाप और आया था। नीकुदेमुस अपने साथ मुर और ऊद की तकरीबन 34 तुम्हारे बाप के पास वापस जा रहा हैं, अपने खुदा और तुम्हारे खुदा किलो खुश्क ले कर आया था। 40 उन्होंने ईसा की लाश को ले के पास।” 18 चुनाँचे मरियम मगादलिनी शारिंदों के पास गई और लिया और यहदी जनाजे की स्सूपात के मुताबिक उस पर खुश्क लगा उन्हें इतिला दी, ‘‘मैं ने खुदावन्द को देखा है और उस ने मुझे से यह कर उसे पट्टियों से लपेट दिया। 41 सलीबों के कीरीब एक बाग था बातें कहीं।” 19 उस इत्वार की शाम को शारिंद जमा थे। उन्होंने और बाग में एक नई कब्र थी जो अब तक इस्तेमाल नहीं की गई दरवाजों पर ताले लगा दिए थे क्यूँकि वह यहदियों से डरते थे। थी। 42 उस के कीरीब होने के बजह से उन्होंने ने ईसा को उस में रख अचानक ईसा उन के दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, “तुम्हारी दिया, क्यूँकि फ़सह की तयारी का दिन था और अगले दिन ईंद की सलामती हो,” 20 और उन्हें अपने हाथों और पहलू को दिखाया। युस्ताद होने वाली थी। 21 ईसा ने दुबारा

कहा, “तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे भेजा उसी तरह लिए उतार लिया था।” 8 दूसरे शागिर्द नाव पर सवार उस के पीछे मैं तुम को भेज रहा हूँ।” 22 फिर उन पर फँक कर उस ने फरमाया, आए। वह किनारे से ज्यादा दूर नहीं थे, तकरीबन सौ मीटर के “रुह — उल — कुदूस को पा लो। 23 अगर तुम किसी के गुमाहों फासिले पर थे। इस लिए वह मछलियों से भेरे जाल को पानी खीच को मुआफ करो तो वह मुआफ किए जाएँगे।” 24 बार शागिर्दों लकड़ी के कोयलों की आग पर मछलियाँ भीं जा रही हैं और साथ में से तोमा जिस का लकब जुड़वाँ था इसा के अने पर मौजूद न था। रोटी भी है। 10 इसा ने उन से कहा, “उन मछलियों में से कुछ 25 चुनाँचे दूसरे शागिर्दों ने उसे बताया, “हम ने खुदावन्द को देखा ले आओ जो तुम ने अभी पकड़ी है।” 11 शमैन पतरस नाव पर है।” लेकिन तोमा ने कहा, मुझे यकीन नहीं आता। “पहले मुझे उस गया और जाल को खुश्की पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी के हाथों में कीलों के निशान नजर आएँ और मैं उन में अपनी उंगली मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा। 12 इसा ने उन से डालूँ पहले मैं अपने हाथ को उस के पहलू के जख्म में डालूँ। फिर कहा, “आओ, खा लो।” किसी भी शागिर्द ने सवाल करने की ही मुझे यकीन आएगा।” 26 एक हफ्ता गुजर गया। शागिर्द दुबारा ज़रूरत न की कि “आप कौन हैं?” क्यौंकि वह तो जानते थे कि यह मकान में जमा थे। इस मर्तबा तोमा भी साथ था। अगरस्वे दरवाजों खुदावन्द ही है। 13 फिर इसा आया और रोटी ले कर उन्हें दी और पर ताले लगे थे फिर भी इसा उन के दरमियान आ कर खड़ा हुआ। इसी तरह मछली भी उन्हें खिलाई। 14 इसा के जी उठने के बाद यह उस ने कहा, “तुम्हारी सलामती हो!” 27 फिर वह तोमा से मुखातिब तीसी बार था कि वह अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ। 15 खाने के हुआ, “अपनी उंगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे पहलू बाद इसा शमैन पतरस से मुखातिब हुआ, “यहन्ना के बेटे शमैन, के जख्म में डाल और बेप्रिकाद हो बल्कि ईमान रख।” 28 क्या तू इन की निस्बत मुझ से ज्यादा मुहब्बत करता है? उस ने तोमा ने जवाब में उस से कहा, “ऐ मेरे खुदावन्द! ऐ मेरे खुदा!” 29 जवाब दिया, “जी खुदावन्द, आप तो जानते हैं कि यह अपने प्यार फिर इसा ने उसे बताया, “क्या तू इस लिए ईमान लाया है कि तू ने करता हूँ।” इसा बोला, “फिर मेरे भेड़ों को चरा।” 16 तब इसा मुझे देखा है? मुबारिक है वह जो मुझे देखे बांग्र मुझ पर ईमान लाते ने एक और मर्तबा पूछा, “शमैन यहन्ना के बेटे, क्या तू मुझ से है।” 30 इसा ने अपने शागिर्दों की मौजूदी में मजीद बहुत से ऐसे मुहब्बत करता है? उस ने जवाब दिया, “जी खुदावन्द, आप तो खुदाई करिस्मे दिखाए जो इस किताब में दर्ज नहीं हैं। 31 लेकिन जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।” इसा बोला, “फिर मेरी जितने दर्ज हैं उन का मक्सद यह है कि आप ईमान लाएँ कि इसा ही भेड़ों को चरा।” 17 तीसी दफ़ा इसा ने उस से पूछा, “शमैन मसीह यानी खुदा का फर्जन्द है और आप को इस ईमान के बसीले यहन्ना के बेटे, क्या तू मुझे प्यार करता है?” तीसी दफ़ा यह सवाल से उस के नाम से ज़िन्दगी हासिल हो।

21 इस के बाद इसा एक बार फिर अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ। जब वह तिबरियास यानी गलील की झील पर थे। यह यूँ हुआ। 2 कुछ शागिर्द शमैन पतरस के साथ जमा थे, तोमा जो जुड़वाँ कहलाता था, नतन — एल जो गलील के काना से था, जब्दी के दो बेटे और मजीद दो शागिर्द। 3 शमैन पतरस ने कहा, “मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।” दूसरों ने कहा, “हम भी साथ जाएँगे।” चुनाँचे वह निकल कर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस पूरी रात एक भी मछली हाथ न आई। 4 सुबह — सबै इसा झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन शागिर्दों को मालूम नहीं था कि वह इसा ही है। 5 उस ने उन से पूछा, “बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल गया?” 6 उस ने कहा, “अपना जाल नाव के दाँए हाथ डालो, फिर तुम को कुछ मिलेगा।” उन्होंने ऐसा किया तो मछलियों की इतनी बड़ी तहदाद थी कि वह जाल नाव तक न ला सके। 7 इस पर इसा के प्यारे शागिर्द ने पतरस से कहा, “यह तो खुदावन्द है।” यह सुनते ही कि खुदावन्द है शमैन पतरस अपनी चादर ओढ़ कर पानी में कूद पड़ा (उस ने चादर को काम करने के

सुनने से पतरस को बड़ा दुख हुआ। उस ने कहा, “खुदावन्द, आप को सब कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।” इसा ने उस से कहा, “मेरी भेड़ों को चरा।” 18 मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो तू खुद अपनी कमर बाँध कर जहाँ जी चाहता थम्पता फिरता था। लेकिन जब तू बढ़ा होगा तो तू अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर बाँध कर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं करेगा।” 19 (इसा की यह बात इस तरफ इशारा था कि पतरस किस की मौत से खुदा को जलात देगा)। फिर उस ने उसे बताया, “मेरे पीछे चल।” 20 पतरस ने मुड़ कर देखा कि जो शागिर्द इसा को प्यारा था वह उन के पीछे चल रहा है। यह वही शागिर्द था जिस ने शाम के खाने के दैरेन इसा की तरफ सर झुका कर पूछा था, “खुदावन्द, कौन आप को दुर्मन के हवाले करेगा?” 21 अब उसे देख कर पतरस ने इसा से सवाल किया, “खुदावन्द, इस के साथ क्या होगा?” 22 इसा ने जवाब दिया, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक जिन्दा रहे तो तुझे क्या? बस तू मेरे पीछे चलता रह।” 23 नरीजे में भाइयों में यह खुयाल फैल गया कि यह शागिर्द नहीं मरेगा। लेकिन इसा ने यह

बात नहीं की थी। उस ने सिर्फ यह कहा था, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िन्दा रहे तो तुझे क्या?” 24 यह वह शारीरिक है जिस ने इन बातों की गवाही दे कर इन्हें कलमबन्द कर दिया है। और हम जानते हैं कि उस की गवाही सच्ची है। 25 ईसा ने इस के अलावा भी बहुत कुछ किया। अगर उस का हर काम कलमबन्द किया जाता तो मेरे खयाल में पूरी दुनियाँ में यह किताबें रखने की गुन्जाइश न होती।



फिर मैंने शहर — ए — मुकद्दस नए येस्सलेम को आसमान पर से खुदा के पास से उतरते देखा, और वो उस दूर्लहन की तरह सजा था जिसने अपने शौहर के लिए सिंगार किया हो। फिर मैंने तख्त में से किरी को उनको ऊँची आवाज से ये कहते सना, “देव, खुदा का खेमा आदमियों के दर्मियान है। और वो उनके साथ सुकूनत करेगा, और वो उनके साथ रहेगा और उनका खुदा होगा।

मुकाशफा 21:2-3

मुकाशफा

19 इन बातों के बाद मैने आसमान पर गोया बड़ी जमा^{अत} मैने एक फरिरते को आफताब पर खड़े हुए देखा। और उसने बड़ी को ऊँची आवाज से ये कहते सुना, “हालेल्या! नजात और आवाज से चिल्ला कर आसमान में के सब उड़नेवाले परिन्दों से जलाल और कुद्रत हमारे खुदा की है। 2 क्यूँकि उसके फैसले कहा, “आओ, खुदा की बड़ी दावत में शरीक होने के लिए जमा हो सही है और दस्त हैं, इसलिए कि उसने उस बड़ी कस्बी का इन्साफ जाओ; 18 ताकि तुम बादशाहों का गोशत, और फौजी सरदारों का किया जिसने अपनी हरामकारी से दुनियाँ को खराब किया था, और गोशत, और ताकतवरों का गोशत, और घोड़ों और उनके सवारों का उससे अपने बन्दों के खून का बदला लिया।” 3 फिर दूसरी बार गोशत, और सब आदमियों का गोशत खाओ; चाहे आजाद हों चाहे उन्होंने कहा, “हल्लेलुइया! और उसके जलने का धुवाँ हमेशा गुलाम, चाहे छोटे हों चाहे बड़े।” 19 फिर मैने उस हैवान और उठता रहेगा।” (aiōn g165) 4 और चौबीसों बुज्जर्गों और चारों जमीन के बादशाहों और उनकी फौजों को, उस घोड़े के सवार और जानदारों ने गिर कर खुदा को सिज्दा किया, जो तख्त पर बैठा था उसकी फौज से जंग करने के लिए इकट्ठे देखा। 20 और वो हैवान और कहा, “आमीन! हल्लेलुइया!” 5 और तख्त में से ये आवाज और उसके साथ वो झाठा नबी पकड़ा गया, जिसने उसने हैवान की निकली, “ऐ उससे डरनेवाले बन्दो! हमारे खुदा की तम्जीद करो! छाप लेनेवालों और उसके बुत की इबादत करनेवालों को गुमराह किया था। वो दोनों आग की उस झील में जिन्दा डाले गए, जो और जोर की सी आवाज, और सख्त गरजने की सी आवाज सुनी: गंधक से जलती है। (Limnē Pyr g3041 g4442) 21 और बाकी उस “हल्लेलुइया! इसलिए के खुदाबन्द हमारा खुदा कादिर — ए — घोड़े के सवार की तलावर से, जो उसके पूँछ से निकली थी कल्ल मुतल्लिक बादशाही करता है। 7 आओ, हम खुबी करें और निहायत किए गए; और सब परिन्दे उनके गोशत से सेर हो गए।

शादमान हों, और उसकी बडाई करें; इसलिए कि बर्द की शादी आ पहुँची, और उसकी बीजी ने अपने आपको तैयार कर लिया; 8 और उसको चमकदार और साफ महीन कतानी कपड़ा पहनने का इखियार दिया गया,” क्यूँकि महीन कतानी कपड़ों से मुकद्दम लोगों की रास्तबाजी के काम मुद्राद हैं। 9 और उसने मुझ से कहा, “लिख, मुबारिक हैं वो जो बर्द की शादी की दावत में बुलाए गए हैं।” फिर उसने मुझ से कहा, “ये खुदा की सच्ची बातें हैं।” 10 और मैं उसे सिज्दा करने के लिए उसके पाँव पर गिरा। उसने मुझ से कहा, “खबरदार! ऐसा न कर। मैं भी तेरा और तेरे उन भाइयों का हमखिदमत हूँ, जो ईसा की गवाही देने पर काईम हैं। खुदा ही को सिज्दा कर।” क्यूँकि ईसा की गवाही नबुव्वत की रुह है। 11 फिर मैने आसमान को खुला हुआ, देखा, और क्या देखता हूँ कि एक सफेद घोड़ा है; और उस पर एक सवार है जो सच्चा और बरहक कहलाता है, और वो सच्चाई के साथ इन्साफ और लडाई करता है। 12 और उसकी आँखें आग के शोले हैं, और उसके सिर पर बहुत से ताज हैं। और उसका एक नाम लिखा हुआ है, जिसे उसके सिवा और कोई नहीं जानता। 13 और वो खुद की छिड़की हृदय पोशाक पहने हुए है, और उसका नाम कलाम — ए — खुदा कहलाता है। 14 और आसमान की फैजें सफेद घोड़ों पर सवार, और सफेद और साफ महीन कतानी कपड़े पहने हुए उसके पीछे पीछे हैं। 15 और कौमों के माने के लिए उसके पूँछ से एक तेज तलावर निकलती है; और वो लोहे की 'लाठी से उन पर हुक्मत करेगा, और कादिर — ए — मुतल्लिक खुदा के तख्त गज़ब की मय के हौज में अंगू

रैदेगा। 16 और उसकी पोशाक और रान पर ये नाम लिखा हुआ है: “बादशाहों का बादशाह और खुदाबन्दों का खुदाबन्द।” 17 फिर

20 फिर मैने एक फरिरते को आसमान से उतरते देखा, जिसके हाथ में अथाह गढ़े की कुंजी और एक बड़ी ज़रीर थी। (Abyssos g12) 2 उसने उस अज्जदहा, यानी पुराने साँप को जो इब्तीस और शैतान है, पकड़ कर हजार बरस के लिए बाँधा, 3 और उसे अथाह गढ़े में डाल कर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी, ताकि वो हजार बरस के पौरे होने तक क्रौमों को फिर गुमराह न करे। इसके बाद जर्स है कि थोड़े 'अस्से के लिए खोला जाए। (Abyssos g12) 4 फिर मैने तख्त देखे, और लोग उन पर बैठ गए और 'अदालत उनके सुपुर्द की गई; और उनकी स्थूलों को भी देखा जिनके सिर ईसा की गवाही देने और खुदा के कलाम की वजह से काटे गए थे, और जिन्होंने न उस हैवान की इबादत की थी न उसके बुत की, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी। वो जिन्दा होकर हजार बरस तक मसीह के साथ बादशाही करते रहे। 5 और जब तक ये हजार बरस पौरे न हो गए बाकी मुर्दि जिन्दा न हुए। पहली कथामत यही है। 6 मुबारिक और मुकद्दम वो है, जो पहली कथामत में शरीक हो। ऐसों पर दूसरी मौत का कुछ इखियार नहीं, बल्कि वो खुदा और मसीह के काहिन होंगे और उसके साथ हजार बरस तक बादशाही करेंगे। 7 जब हजार बरस पूरे हो चुकेंगे, तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। 8 और उन कौमों को जो जमीन की चारों तरफ होंगी, यानी जज और माजूज को गुमराह करके लडाई के लिए जमा करने को निकालें; उनका शमार समुन्दर की रेत के बराबर होगा। 9 और वो तमाम जमीन पर फैल जाएँगी, और मुकद्दमों की लश्करगाह और 'अजीज शहर को चारों तरफ से घेर

लैंगी, और आसमान पर से आग नाज़िल होकर उन्हें खा जाएगी। तुझे दुन्हन, यानी बर्रे की बीवी दिखाऊँ।” 10 और वो मुझे स्थ में 10 और उनका गुमराह करने वाला इल्लीस आग और गंधक की उस एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और शहर — ए — मुकद्दस झील में डाला जाएगा, जहाँ वो हैवान और झूटा नबी भी होगा; येस्खलेम को आसमान पर से खुदा के पास से उतरते दिखाया। 11 और रात दिन हमेशा से हमेशा तक 'अज्ञाब में रहेंगे। (aiōn g165, Limnē Pyr g3041 g4442) 11 फिर मैंने एक बड़ा सफेद तख्त और पत्थर, यानी उस यशब की सी थी जो बिल्लौर की तरह शकाफ उसको जो उस पर बैठा हुआ था देखा, जिसके सामने से जमीन और हो। 12 और उसकी शहरपनाह बड़ी और ऊँची थी, और उसके आसमान भाग गए, और उन्हें कहीं जगह न मिली। 12 फिर मैंने बारह दरवाजे और दरवाजों पर बारह फरिश्ते थे, और उन पर बनी छोटे बड़े सब मुर्दों को उस तख्त के सामने खड़े हुए देखा, और — इमाईल के बारह कबीलों के नाम लिखे हुए थे। 13 तीन दरवाजे किंतब खोली गई, यानी किंतब — ए — हयात; और जिस तरह मशरिक की तरफ थे, तीन दरवाजे शुमाल की तरफ, तीन दरवाजे उन किंतबों में लिखा हुआ था, उनके आमाल के मुताबिक मुर्दों जुनूब की तरफ, और तीन दरवाजे मगरिब की तरफ। 14 और उस का इन्साफ किया गया। 13 और समुन्दर ने अपने अन्दर के मुर्दों शहर की शहरपनाह की बारह बूनियादें थीं, और उन पर बर्रे के को दे दिया, और मौत और 'आलम — ए — अर्वाह ने अपने अन्दर बारह रस्लों के बारह नाम लिखे थे। 15 और जो मुझ से कह रहा के मुर्दों को दे दिया, और उनमें से हर एक के आमाल के मुताबिक शाहर की शहरपनाह के उसका इन्साफ किया गया। (Hadēs g86) 14 फिर मौत और 'आलम — ए — अर्वाह आग की झील में डाले गए। ये आग की झील बारबाई चौडाई के आखीरी मौत है, (Hadēs g86, Limnē Pyr g3041 g4442) 15 और जो शहर को उस गज से नापा, तो बारह हजार फरताँग जिस किसी का नाम किंतब — ए — हयात में लिखा हुआ न मिला, वो आग की झील में डाला गया। (Limnē Pyr g3041 g4442)

21 फिर मैंने एक नए आसमान और नई जमीन को देखा, क्यौंकि पहली आसमान और पहली जमीन जाती रही थी, और समुन्दर भी न रहा। 2 फिर मैंने शहर — ए — मुकद्दस नए येस्खलेम को आसमान पर से खुदा के पास से उतरते देखा, और वो उस दुन्हन की तरह सजा था जिसने अपने शैहर के लिए सिंगार किया हो। 3 फिर मैंने तख्त में से किसी को उनको ऊँची आवाज से ये कहते सुना, “देख, खुदा का खेमा आदमियों के दर्मियान है। और वो उनके साथ सुकून तकरेगा, और वो उनके साथ रहेगा और उनका खुदा होगा। 4 और उनकी आँखों के सब आँसू पोंछ देगा; इसके बाद न मौत रहेगी, और न मातम रहेगा, न आह — ओ — नाला न दर्द; पहली चीजें जाती रहीं।” 5 और जो तख्त पर बैठा हुआ था, उसने कहा, “देख, मैं सब चीजों को नया बना देता हूँ।” फिर उसने कहा, “लिख ले, क्यूंकि ये बातें सच और बरहक हैं।” 6 फिर उसने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गईं। मैं अल्फा और ओमेगा, यानी शुरू और आखिर हूँ। मैं प्यासे को आब — ए — हयात के चरमे से मुफ्त पिलाऊँगा। 7 जो गालिब आए वही इन चीजों का वारिस होगा, और मैं उसका खुदा हँगा और वो मेरा बेटा होगा। 8 मगर बूजदिलों, और बेर्मान लोगों, और घिनौने लोगों, और खुनियों, और हरामकारों, और जादूगरों, और बुत परस्तों, और सब झठों का हिस्सा आग और गन्धक से जलने वाली झील में होगा; ये दूसरी मौत है। (Limnē Pyr g3041 g4442) 9 फिर इन सात फरिश्तों में से जिनके पास प्याले थे, एक ने आकर मुझ से कहा, “इधर आ, मैं एक बड़े बिल्लौर की तरह चमकता हुआ आब — ए — हयात का एक दरिया दिखाया, जो खुदा और बर्रे के

तरब्ज से निकल कर उस शहर की सड़क के बीच में बहता था। 2 बातों में से कुछ निकाल डाले, तो खुदा उस जिन्दगी के दररब्ज और और दरिया के पार जिन्दगी का दररब्ज था। उसमें बारह किस्म के मुकद्दस शहर में से, जिनका इस किताब में जिक्र है, उसका हिस्सा फल आते थे और हर महीने में फलता था, और उस दररब्ज के पत्तों निकाल डालेगा। 20 जो इन बातों की गवाही देता है वो ये कहता है, से कौमों को शिफा होती थी। 3 और फिर लांनत न होगी, और “बेशक, मैं जल्द आने वाला हूँ।” आमीन! ऐ खुदावन्द ईसा आ! खुदा और बर्बे का तरब्ज उस शहर में होगा, और उसके बन्दे उसकी 21 खुदावन्द ईसा का फजल मुकद्दसों के साथ रहे। आमीन।

इबादत करेंगे। 4 और वो उसका मुँह देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। 5 और फिर रात न होगी, और वो चिरास और सूरज की रौशनी के मुहताज न होंगे, क्यैंकि खुदावन्द खुदा उनको रौशन करेगा और वो हमेशा से हमेशा तक बादशाही करेंगे। (aiōn g165) 6 फिर उसने मुझ से कहा, “ये बातें सच और बरहक हैं; चुनाँचे खुदावन्द ने जो नवियों की स्थों का खुदा है, अपने फरिश्ते को इसलिए भेजा कि अपने बन्दों को वो बातें दिखाएं जिनका जल्द होना ज़स्तर है।” 7 “और देख मैं जल्द आने वाला हूँ। मुबारिक है वो जो इस किताब की नवुव्वत की बातों पर 'अमल करता है।'” 8 मैं वही युहन्ना हूँ, जो इन बातों को सुनता और देखता था; और जब मैंने सुना और देखा, तो जिस फरिश्ते ने मुझे ये बातें दिखाई, मैं उसके पैर पर सिज्दा करने को गिरा। 9 उसने मुझ से कहा, खबरदार! ऐसा न कर, मैं भी तेरा और तेरे नवियों और इस किताब की बातों पर 'अमल करनेवालों का हम खिदमत हैं। खुदा ही को सिज्दा कर। 10 फिर उसने मुझ से कहा, इस किताब की नवुव्वत की बातों को छुपाए न रख; क्यैंकि वक्त नज़दीक है, 11 “जो बुराई करता है, वो बुराई ही करता जाए; और जो नजिस है, वो नजिस ही होता जाए; और जो रास्तबाज है, वो रास्तबाजी करता जाए; और जो पाक है, वो पाक ही होता जाए।” 12 “देख, मैं जल्द आने वाला हूँ; और हर एक के काम के मुताबिक देखे के लिए बदला मेरे पास है। 13 मैं अल्फा और ओमेगा, पहला और आखिर, इब्तिदा और इन्तिहा हूँ। 14 मुबारिक है वो जो अपने जामे धोते हैं, क्यैंकि जिन्दगी के दररब्ज के पास आने का इख्लियार पाएँगे, और उन दरवाजों से शहर में दाखिल होंगे। 15 मगर कुत्ते, और जादूगर, और हरामकार, और खूनी, और बुत परस्त, और झूठी बात का हर एक पसन्द करने और गढ़ने वाला बाह रहेगा। 16 मुझ ईसा ने, अपना फरिश्ता इसलिए भेजा कि कलीसियाओं के बारे में तुम्हरे आगे इन बातों की गवाही दे। मैं दाऊद की अस्त - ओ - नस्त और सुबह का चमकता हुआ सितारा हूँ।” 17 और स्त्र हौर दुल्हन कहती है, “आ!” और सुनेवाला भी कहे, “आ!” “आ!” और जो प्यासा हो वो आए, और जो कोई चाहे आब — ए — हयात मुफ्त ले। 18 मैं हर एक आदमी के आगे, जो इस किताब की नवुव्वत की बातें सुनता है, गवाही देता हूँ: अगर कोई आदमी इसमें कुछ बढ़ाए, तो खुदा इस किताब में लिखी ही है आफतें उस पर नाज़िल करेगा। 19 और अगर कोई इस नवुव्वत की किताब की

66 Verses

उर्दू at AionianBible.org

The Bible is a library of 66 books in the Protestant Canon written by 40 different men over a span of 1,500 years from 1435 BC to 65 AD with one consistent message. From the first page through the last, Jesus. Genesis promised our deliverer is coming, Jesus. Moses said our better prophet is coming, Jesus. Isaiah prophesied our Messiah will be a suffering servant, Jesus. John announced our Anointed One is here, Jesus. Jesus himself testified he is our Lord God, Yahweh. The gospels agree our conqueror of death has risen, Jesus. The Apostles witnessed our victor ascend to his throne in Heaven, Jesus. And Revelation promises Jesus' return for our final judgment. Are you ready? Read the Bible cover to cover at AionianBible.org and answer these questions. How did I get here? Why am I here? How do I determine right or wrong? How can I escape condemnation? What is my destiny? Begin with the primer verses below.

पैदाइश 9:8 और खुदा ने नहूं और उसके बेटों से कहा, 9:9 देखो, मैं खुद तुमसे और तुम्हारे बाद तुम्हारी नसल से, 9:10 और सब जानदारों से जो तुम्हारे साथ हैं, क्या परिस्तें क्या चौपाएं क्या ज़मीन के जानवर, या'नी ज़मीन के उन सब जानवरों के बारे में जो कश्ति से उतरे, 'अहद करता हूँ 9:11 मैं इस 'अहद को तुम्हारे साथ काईम रखूँगा कि सब जानदार तूफान के पानी से फिर हलाक न होंगे, और न कभी ज़मीन को तबाह करने के लिए फिर तूफान आएगा 9:12 और खुदा ने कहा कि जो अहद मैंने अपने और तुम्हारे बीच और सब जानदारों के बीच जो तुम्हारे साथ हैं, नसल — दर — नसल हमेशा के लिए करता हूँ, उसका निशान यह है कि 9:13 मैं अपनी कमान को बादल में रखता हूँ, वह मेरे और ज़मीन के बीच 'अहद का निशान होगी।

खुरु 14:13 तब मूसा ने लोगों से कहा, "डोरो मत, चुपचाप खड़े होकर खुदावन्द की नजात के काम को देखो जो वह आज तुम्हारे लिए करेगा। क्यूँकि जिन मिसियों को तुम आज देखते हो उनको फिर कभी हमेशा तक न देखोगे। 14:14 खुदावन्द तुम्हारी तरफ से जंग करेगा और तुम खामोश रहेगो।"

अह 20:26 और तुम मेरे लिए पाक बने रहना, क्यूँकि मैं जो खुदावन्द हूँ पाक हूँ; और मैंने तुम को और क्रौमों से अलग किया है ताकि तुम मेरे ही रहो।

गिन 6:24 'खुदावन्द तुझे बरकत दे और तुझे महफूज रखें। 6:25 "खुदावन्द अपना चेहरा तुझ पर जलवागर फरमाए, और तुझ पर मेहरबान रहे। 6:26 "खुदावन्द अपना चेहरा तेरी तरफ मुतवज्जिह करे, और तुझे सलामती बख्तो।

इस्त 18:18 मैं उनके लिए उन ही के भाइयों में से तेरी तरह एक नवी खड़ा करूँगा, और अपना कलाम उसके मुँह में डालूँगा, और जो कुछ मैं उसे हुक्म दूँगा वही वह उनसे कहेगा। 18:19 और जो कोई मेरी उन बातों की जिनकी वह मेरा नाम लेकर कहेगा न सुने, तो मैं उनका हिसाब उनसे लेंगा।

यशो 1:7 तू सिर्फ मज़बूत और निहायत दिलेर हो जा कि एहतियात रख कर उस सारी शरी' अत पर 'अमल करे जिसका हुक्म मेरे बन्दे मूसा ने तुझ को दिया; उस से न दहिने मुड़ना न बायें ताकि जहाँ कही तू जाये तुझे खूब कामयाबी हासिल हो। 1:8 शरी' अत की यह किताब तेरे मुँह से न हटे, बल्कि तुझे दिन और रात इसी का ध्यान हो ताकि जो कुछ उस में लिखा है उस सब पर तू एहतियात करके 'अमल कर सके; क्यूँकि तब ही तुझे कामयाबी की राह नसीब होगी और तू खूब कामयाब होगा। 1:9 क्या मैंने तुझको हुक्म नहीं दिया? इसलिए मज़बूत हो जा और हौसला रख; खौफ न खा और बेदिल न हो, क्यूँकि खुदावन्द तेरा खुदा जहाँ जहाँ तू जाए तेरे साथ रहेगा।"

कुजा 2:7 और वह लोग खुदावन्द की झिबादत यशू' अ के जीते जी और उन बुजुर्गों के जीते जी करते रहे, जो यशू' अ के बाद जिन्दा रहे और जिन्होंने खुदावन्द के सब बड़े काम जो उसने इसाईल के लिए किए देखे थे।

स्त 1:16 स्त ने कहा, “तू मिन्नत न कर कि मैं तुझे छोड़ूँ और तेरे पीछे से लौट जाऊँ; क्यूंकि जहाँ तू जाएगी मैं जाऊँगी और जहाँ तू रहेगी मैं रहूँगी, तेरे लोग मेरे लोग और तेरा खुदा मेरा खुदा होगा। 1:17 जहाँ तू मेरी मैं मस्संगी और वही दफन भी हूँगी; खुदाबन्द मुझ से ऐसा ही बल्कि इस से भी ज्यादा करे, अगर मौत के अलावा कोई और चीज़ मुझ को तुझ से जुदा न कर दे।”

1 समु 16:7 तब खुदाबन्द ने सम्प्रैल से कहा कि “तू उसके चेहरा और उसके कद की ऊँचाई को न देख इसलिए कि मैंने उसे ना पसंद किया है, क्यूंकि खुदाबन्द इंसान की तरह नज़र नहीं करता इसलिए कि इंसान ज़ाहिरी सूरत को देखता है, पर खुदाबन्द दिल पर नज़र करता है।”

2 समु 7:22 इसलिए तू ऐ खुदाबन्द खुदा, बुजुर्ग है, क्यूंकि जैसा हमने अपने कानों से सुना है उसके मुताबिक कोई तेरी तरह नहीं और तेरे 'अलावह कोई खुदा नहीं।

1 सला 2:3 और जो मूसा की शरी'अत में लिखा है, उसके मुताबिक खुदाबन्द अपने खुदा की हिदायत को मानकर उसके रास्तों पर चल; और उसके कानून पर और उसके फरमानों और हक्मों और शहादतों पर 'अमल कर, ताकि जो कुछ तू करे और जहाँ कहीं तू जाए, सब में तुझे कामयाबी हो,

2 सला 22:19 चूँकि तेरा दिल नर्म है, और जब तू ने वह बात सुनी जो मैंने इस मकाम और इसके बशिन्दों के हक में कही कि वह तबाह हो जाएँगे और लान्ती भी ठहरेंगे, तो तू ने खुदाबन्द के आगे 'आजिज़ी की और अपने कपड़े फाड़े और मेरे आगे रोया; इसलिए मैंने भी तेरी सुन ली, खुदाबन्द फरमाता है।

1 तवा 29:17 ऐ मेरे खुदा, मैं यह भी जानता हूँ कि तू दिल को ज़ॅच्टा है, और रास्ती में तेरी खुशनूटी है। मैंने तो अपने दिल की रास्ती से यह सब कुछ रजामंदी से दिया, और मुझे तेरे लोगों को जो यहाँ हाजिर है, तेरे सामने खुशी खुशी देते देख कर खुशी हासिल हूँ।

2 तवा 7:14 तब अगर मेरे लोग जो मेरे नाम से कहलाते हैं खाक्सार बनकर दुआ करें और मेरे दीदार के तालिब हों और अपनी बुरी रास्तों से फिरें तो मैं आसमान पर से सुनकर उनका गुनाह मु'आफ करूँगा और उनके मुल्क को बहाल कर दूँगा।

एज़ा 7:10 इसलिए कि 'एज़ा आमादा हो गया था कि खुदाबन्द की शरी'अत का तालिब हो, और उस पर 'अमल करे और इधाईल में आइन और अहकाम की तालीम दे।

नहे 6:3 इसलिए मैंने उनके पास कासिदों से कहला भेजा कि मैं बड़े काम में लगा हूँ और आ नहीं सकता; मेरे इसे छोड़कर तुम्हरे पास आने से ये काम क्यूँ बन्द रहें?

आस्त 4:14 क्यूंकि अगर तू इस वक्त खामोशी अस्तियार करे तो छुटकारा और नजात यहदियों के लिए किसी और जगह से आएगी, लेकिन तू अपने बाप के खानादान के साथ हलाक हो जाएगी। और क्या जाने कि तू ऐसे ही वक्त के लिए बादशाहत को पहुँची है?”

अर्थ 19:25 लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ाने वाला ज़िन्दा है। और आखिर कार ज़मीन पर खड़ा होगा।

जबूर 23:1 खुदाबन्द मेरा चौपान है, मुझे कमी न होगी। 23:2 वह मुझे हरी हरी चरागाहों में बिठाता है; वह मुझे राहत के चश्मों के पास ले जाता है; 23:3 वह मेरी जान को बहाल करता है। वह मुझे अपने नाम की खातिर सदाकत की राहों पर ले चलता है। 23:4 बल्कि चाहे मौत के साथी की वादी में से मेरा गुजर हो, मैं किसी बला से नहीं डस़ंगा, क्यूंकि तू मेरे साथ है; तेरे 'असा और तेरी लाती से मुझे तसल्ली है। 23:5 तू मेरे दुश्मनों के सामने मेरे आगे दस्तरखान बिछाता है; तूने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा प्याला लबरेज होता है। 23:6 यकीनन भलाई और रहमत उम्र भर मेरे साथ साथ रहेंगी; और मैं हमेशा खुदाबन्द के घर में सकूनत करूँगा।

अम्मा 3:5 सरे दिल से खुदाबन्द पर भरोसा कर, और अपनी समझ पर इमिनान न कर। 3:6 अपनी सब राहों में उसको पहचान, और वह तेरी रहनुमाई करेगा।

वाइज़ 3:10 मैंने उस सख्त दुख को देखा, जो खुदा ने बनी आदम को दिया है कि वह मशक्कत में मुबिला रहें। 3:11 उसने हर एक चीज़ को उसके वक्त में ख़बू बनाया और उसने अबद्यित को भी उनके दिल में जागृज़ीन किया है; इसलिए कि इंसान उस काम को जो खुदा शुरू से आखिर तक करता है दरियाप्त नहीं कर सकता।

गजलुल 2:4 वह मुझे मरयाने के अंदर लाया, और उसकी मुहब्बत का झँडा मेरे ऊपर था।

यसा 9:6 इसलिए हमारे लिए एक लड़का तबल्लुद हआ और हम को एक बेटा बरखा गया, और सल्तनत उसके कंधे पर होगी, उसका नाम 'अजीब सलाहकार खुदा' — ए — कादिर अब्दियत का बाप, सलामती का शहजादा होगा। 9:7 उसकी सल्तनत के इक्बाल और सलामती की कुछ इन्तिहा न होगी, वह दाऊद के तखत और उसकी ममलुकत पर आज से हमेशा तक हक्मरान रहेगा और 'अदालत और सदाकत से उसे कथाम ब्रह्मेगा रब्ब — उल — अफवाज की गाय्यूरी ये करेगी।

यर्म 1:4 तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हआ, और उसने फरमाया, 1:5 “इससे पहले कि मैंने तुझे बत्र में खलक किया, मैं तुझे जानता था और तेरी पैदाइश से पहले मैंने तुझे खास किया, और कौमों के लिए तुझे नबी ठहराया।” 1:6 तब मैंने कहा, हाय, खुदावन्द खुदा! देख, मैं बोल नहीं सकता, क्यूंकि मैं तो बच्चा हूँ। 1:7 लेकिन खुदावन्द ने मुझे फरमाया, यूँ न कह कि मैं बच्चा हूँ; क्यूंकि जिस किसी के पास मैं तुझे भेजँगा तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे फरमाऊँगा तू कहेगा। 1:8 तू उनके चेहरों को देखकर न डर क्यूंकि खुदावन्द फरमाता है मैं तुझे छुड़ाने को तेरे साथ हूँ। 1:9 तब खुदावन्द ने अपना हाथ बढ़ाकर मेरे मुँह को छुआ; और खुदावन्द ने मुझे फरमाया देख मैंने अपना कलाम तेरे मुँह में डाल दिया। 1:10 देख, आज के दिन मैंने तुझे कौमों पर, और सल्तनतों पर मुकर्रर किया कि उखाड़े और ढाए, और हलाक करे और गिराए, और तामीर करे और लगाए।

नोहा 3:21 मैं इस पर सोचता रहता हूँ, इसीलिए मैं उम्मीदवार हूँ। 3:22 ये खुदावन्द की शफकत है, कि हम फना नहीं हुए, क्यूंकि उसकी रहमत ला ज़बात है। 3:23 वह हर सुबह ताजा है; तेरी वफादारी 'अज़ीम है

हिज़ि 36:26 और मैं तुम को नया दिल बरबँगा और नई स्हुरुआत करना चाहता हूँ। 36:27 और मैं अपनी स्हुरुआत बातिन में डालूँगा, और तुम्हारे जिस्म में से शब्द दिल को निकाल डालूँगा और गोश्ट का दिल तुम को 'इनायत करूँगा। 36:27 और मैं अपनी स्हुरुआत बातिन में डालूँगा, और तुम सेअपने कानून की पैरवी कराऊँगा और तुम मेरे हृकों पर 'अमल करोगे और उनको बजा लाओगे।

दानि 3:16 सदरक और मीसक और 'अबदनजू' ने बादशाह से 'अर्ज किया कि "ऐ नबूकदनजर, इस हक्म में हम तुझे जबाब देना ज़स्ती नहीं समझते। 3:17 देख, हमारा खुदा जिसकी हम इबादत करते हैं, हम को आग की जलती भट्टी से छुड़ाने की कुदरत रखता है, और ऐ बादशाह वही हम को तेरे हाथ से छुड़ाएगा। 3:18 और नहीं, तो ऐ बादशाह तुझे मालूम हो कि हम तेरे मालूदों की इबादत नहीं करेंगे, और उस सोने की मूरत को जो तूने खड़ी की है सिज्दा नहीं करेंगे।

होसी 6:6 क्यूंकि मैं कुर्बानी नहीं बल्कि रहम पसन्द करता हूँ और खुदा शनासी को सोखतनी कुर्बानियों से ज्यादा चाहता हूँ।

यूए 2:28 'और इसके बाद मैं हर फर्द — ए — बशर पर अपना स्हुरुआत करूँगा, और तुम्हारे बेटे बेटियाँ नबूब्बत करेंगे; तुम्हारे बूढ़े ख्वाब और जावान रोया देखेंगे। 2:29 बल्कि मैं उन दिनों में गुलामों और लौडियों पर अपना स्हुरुआत करूँगा। 2:30 और मैं ज़मीन — ओ — आसामान में 'अजायब जाहिर करूँगा, यानी खुन और आग और धूर्घे के खम्बे। 2:31 इस से पहले कि खुदावन्द का खाँफ़ानाक रोज़ — ए — अज़ीम आए, सूरज तारीक और चाँद खून हो जाएगा। 2:32 और जो कोई खुदावन्द का नाम लेगा नजात पाएगा, क्यूंकि कोह — ए — सिय्यून और येस्सलेम में, जैसा खुदावन्द ने फरमाया है बच निकलने वाले होंगे, और बाकी लोगों में वह जिनको खुदावन्द बुलाता है।

आमू 5:24 लेकिन 'अदालत को पानी की तरह और सदाकत को बड़ी नहर की तरह जारी रख।

अब्द 1:15 क्यूंकि सब कौमों पर खुदावन्द का दिन आ पहुँचा है। जैसा तू ने किया है, वैसा ही तुझ से किया जाएगा। तेरा किया तेरे सिर पर आएगा।

यूना 2:6 मैं पहाड़ों की गहराई तक गर्क हो गया ज़मीन के रास्ते हमेशा के लिए मुझ पर बंद हो गए; तो भी ऐ खुदावन्द मेरे खुदा तूने मेरी जान पाताल से बचाई। 2:7 जब मेरा दिल बेताब हुआ, तो मैं ने खुदावन्द को याद किया; और मेरी दुआ तेरी मुकद्दस हैकल में तेरे सामने पहुँची 2:8 जो लोग झटे मालूदों को मानते हैं, वह शफकत से महस्म हो जाते हैं। 2:9 मैं हम्द करता हुआ तेरे सामने कुर्बानी पेश करूँगा; मैं अपनी नद्दें अदा करूँगा नजात खुदावन्द की तरफ से है।"

मीका 6:8 ऐ इंसान, उसने तुझ पर नेकी जाहिर कर दी है; खुदावन्द तुझ से इसके सिवा क्या चाहता है कि तू इन्साफ़ करे और रहमदिली को 'अज्ञाज रखें, और अपने खुदा के सामने फरोतनी से चले?

नाहम 1:2 खुदावन्द गयर्यू और इन्तकाम लेनेवाला खुदा है; हाँ खुदावन्द इन्तकाम लेने वाला और कहहार है; खुदावन्द अपने मुखालिफ़ों से इन्तकाम लेता है और अपने दुश्मनों के लिए कहर को कायम रखता है। 1:3 खुदावन्द कहर करने में धीमा और कुदरत में बढ़कर है, और मुजरिम को हरगिज बरी न करेगा। खुदावन्द की राह गिर्दबाद और आँधी में है, और बादल उसके पाँव की गर्द हैं।

हबक 3:17 अगरचे अंजीर का दरखत न फूले, और डाल में फल न लरें, और जैतून का फल जाय' हो जाए, और खेतों में कुछ पैदावार न हो, और भेड़खाने से भेड़े जाती रहें, और तरबेलों में जानवर न हों; 3:18 तोरी मैं खुदावन्द से खुश रहौँगा, और अपनी नजात बरखा खुदा से खुश बनत रहूँगा। 3:19 खुदावन्द खुदा, मेरी ताकत है; वह मेरे पैर हिरनी के से बना देता है, और मुझे मेरी ऊँची जगहों में चलाता है।

सफन 3:17 खुदावन्द तेरा खुदा, जो तुझ में है, कादिर है, वही बचा लेगा; वह तेरी बजह से शादमान होकर खुशी करेगा; वह अपनी मुहब्बत में मसस्तर रहेगा; वह गाते हुए तेरे लिए शादमानी करेगा।

हज्जी 1:4 “क्या तुम्हरे लिए मफूज़ घरों में रहने का बक्त है, जब कि यह घर वीरान पड़ा है? 1:5 और अब रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: तुम अपने चाल चलन पर गौर करो। 1:6 तुम ने बहुत सा बोया, पर थोड़ा काटा। तुम खाते हो, पर असदा नहीं होते; तुम पीते हो, लेकिन प्यास नहीं बुझती। तुम कपड़े पहनते हो, पर गर्म नहीं होते; और मजदूर अपनी मजदूरी सूखबदार थेली में जमा करता है। 1:7 “रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: कि अपने चाल चलन पर गौर करो।

जकर 12:10 और मैं दाऊद के घराने और येस्शलेम के बाशिन्दों पर फजल और मुनाजात की स्ह नाज़िल करूँगा, और वह उस पर जिसको उन्होंने छेदा है नजर करेंगे और उसके लिए मातम करेंगे जैसा कौई अपने एकलौते के लिए करता है और उसके लिए तल्ख काम होंगे जैसे कोई अपने पहलौठे के लिए होता है।

मला 4:2 लेकिन तुम पर जो मेरे नाम की ताजीम करते हो, आफताब — ए — सदाकत ताली' अ होगा, और उसकी किरनों में शिफा होगी; और तुम गावखाने के बछड़ों की तरह कृदो — फँदेगे। 4:3 और तुम शरीरों को पायमाल करेंगे, क्यूँकि उस रोज़ वह तुम्हरे पाँव तले की राख होंगे, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है।

मत्ती 28:18 ईसा ने पास आ कर उन से बातें की और कहा “आस्मान और जमीन का कुल इजित्यार मुझे दे दिया गया है। 28:19 पस तुम जा कर सब कौमों को शारिर बनाओ और उन को बाप और बेटे और स्त्री — उल — कृदूस के नाम से बपतिस्मा दो। 28:20 और उन को ये तालीम दो, कि उन सब बातों पर अमल करें जिनका मैंने तुम को हृक्ष दिया; और देखो, मैं दुनिया के आखिर तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।” (aiōn g165)

मरकुस 1:14 फिर यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद ईसा गलील में आया और खुदा की खुशखबरी का ऐलान करने लगा। 1:15 और उसने कहा कि “बक्त पूरा हो गया है और खुदा की बादशाही नजदीक आ गई है, तौबा करो और खुशखबरी पर ईमान लाओ।” 1:16 गलील की झील के किनारे — किनारे जाते हुए, शमैन और शमैन के बाई अन्दियास को झील में जाल डालते हुए देखा, क्यूँकि वो मछली पकड़ने वाले थे। 1:17 और ईसा ने उन से कहा, “मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को आदमी पकड़ने वाला बनाऊँगा।” 1:18 वो फैरन जाल छोड़ कर उस के पीछे हो लिए।

लका 4:18 “खुदावन्द का स्त्र मुझ पर है, इसलिए कि उसने मुझे गरीबों को खुशखबरी देने के लिए मसह किया; उसने मुझे भेजा है कैदियों को रिहाई और अन्धों को बीनाई पाने की खबर सूनाऊँ, कुचले हुओं को आजाद करें।

यूहन्ना 3:16 “क्यूँकि खुदा ने दुनियाँ से ऐसी मुहब्बत रखी है कि उसने अपना इकलौता बेटा बख्शा दिया, ताकि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक न हो, बल्कि हमेशा की जिन्दगी पाए। (aiōnios g166) 3:17 क्यूँकि खुदा ने बेटे को दुनियाँ में इसलिए नहीं भेजा कि दुनियाँ पर सजा का हृक्ष करे, बल्कि इसलिए कि दुनियाँ उसके बसीले से नजात पाए।

आमाल 1:7 उसने उनसे कहा, “उन बक्तों और मी'आदों का जानना, जिन्हें बाप ने अपने ही इजित्यार में रख्खा है, तुम्हारा काम नहीं। 1:8 लेकिन जब स्त्र — उल — कृदूस तुम पर नजिल होगा तो तुम ताकत पाओगे; और येस्शलेम और तमाम यहदिया और सामरिया में, बल्कि जमीन के आखीर तक मेरे गवाह होगे।”

रोमियो 11:32 इसलिए कि खुदा ने सब को नाफरमानी में गिरफ्तार होने दिया ताकि सब पर रहम फरमाए। (eleēsē g1653) 11:33 वाह! खुदा की दौलत और हिक्मत और इल्म क्या ही अजीम है उसके फैसले किस कदर पहुँच से बाहर हैं और उसकी राहें क्या ही बेनिशान हैं। 11:34 खुदावन्द की अक्ल को किसने जाना? या कौन उसका सलाहकार हूआ? 11:35 या किसने फहले उसे कुछ दिया है, जिसका बदला उसे दिया जाए? 11:36 क्यूँकि उसी की तरफ से, और उसी के बरीले से और उसी के लिए सब चीजें हैं, उसकी बडाई हमेशा तक होती रहे आपीन। (aiōn g165)

1 कुरिन्थियों 6:9 क्या तुम नहीं जानते कि बदकार खुदा की बादशाही के बारिस न होंगे धोखा न खाओ न ह्रामकार खुदा की बादशाही के बारिस होंगे न बुतपरस्त, न जिनाकार, न अद्याश, न लौडे बाज, 6:10 न चोर, न लालची, न शराबी, न गालियाँ बकने वाले, न जालिम, 6:11 और कुछ तुम में ऐसे ही थे भी, 'मगर तुम खुदावन्द ईसा मसीह के नाम से और हमारे खुदा के स्वर्ग से धूल गए और पाक हुए और रास्तबाज भी ठहरे।

2 कुरिन्थियों 5:17 इसलिए अगर कोई मसीह में है तो वो नया मख्लूक है पूरानी चीजें जाती रहीं; देखो वो नई हो गईं। 5:18 और वो सब चीजें खुदा की तरफ से हैं कि जिसने मसीह के बरीले से अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया और मेल मिलाप की खिदमत हमारे सुपुर्द की। 5:19 मतलब ये है कि खुदा ने मसीह में हो कर अपने साथ दुनिया का मेल मिलाप कर लिया और उन की तकरीरों को उनके जिम्मे न लगाया और उसने मेल मिलाप का पैगाम हमें सौंप दिया। 5:20 पस हम मसीह के एल्ची हैं और गोया हमारे बरीले से खुदा इल्टिमास करता है; हम मसीह की तरफ से मिन्त करते हैं कि खुदा से मेल मिलाप कर लो। 5:21 जो गुनाह से वाकिफ न था; उसी को उसने हमारे वास्ते गुनाह ठहराया ताकि हम उस में हो कर खुदा के रास्तबाज हो जाएँ।

गलातियों 1:6 मैं ताअ-ज्जुब करता हूँ कि जिसने तुम्हें मसीह के फज्जल से बुलाया, उससे तुम इस कदर जल्द फिर कर किसी और तरह की खुशबूबरी की तरफ माइल होने लगे, 1:7 मगर वो दूसरी नहीं; अलबत्ता कुछ ऐसे हैं जो तुम्हें उलझा देते और मसीह की खुशबूबरी को बिगाड़ना चाहते हैं।

इफिसियों 2:1 और उसने तुम्हें भी जिन्दा किया जब अपने कुसरों और गुनाहों की वजह से मुर्दा थे। 2:2 जिनमें तुम पहले दुनियाँ की रविश पर चलते थे, और हवा की 'अमलदारी' के हाकिम याँनी उस रुद्ध की पैरवी करते थे जो अब नाफरमानी के फरजन्दों में तासीर करती है। (aiōn g165) 2:3 इनमें हम भी सबके सब पहले अपने जिस्म की छवाहिसों में जिन्दगी गुजारते और जिस्म और 'अक्ल के द्वारा' पुरे करते थे, और दूसरों की तरह फिरत गजब के फर्जन्द थे। 2:4 मगर खुदा ने अपने रहम की दौलत से, उस बड़ी मुहब्बत की वजह से जो उसने हम से की, 2:5 कि अगर्वे हम अपने गुनाहों में मुर्दा थे तो भी उसने हमें मसीह के साथ जिन्दा कर दिया आपको खुदा के फज्जल ही से नजात मिली है 2:6 और मसीह ईसा में शामिल करके उसके साथ जिलाया, और असमानी मुकामों पर उसके साथ बिठाया। 2:7 ताकि वो अपनी उस महरबानी से जो मसीह ईसा में हम पर है, आनेवाले जमानों में अपने फज्जल की अजीम दौलत दिखाए। (aiōn g165) 2:8 क्यूँकि तुम को ईमान के बरीले फज्जल ही से नजात मिली है; और ये तुम्हारी तरफ से नहीं, खुदा की बाल्खिश है, 2:9 और न आमाल की वजह से है, ताकि कोई फँसु न करे। 2:10 क्यूँकि हम उसकी कारीगरी हैं, और ईसा मसीह में उन नेक आमाल के वास्ते पैदा हुए जिनको खुदा ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया था।

फिलिप्पियों 3:7 लेकिन जितनी चीजें मेरे नफ़ेँ की थीं उन्हीं को मैंने मसीह की खातिर नुकसान समझा लिया है। 3:8 बल्कि मैंने अपने खुदावन्द मसीह 'ईसा की पहचान की बड़ी खबी की वजह से सब चीजों का नुकसान उठाया और उनको क़डा समझता हूँ ताकि मसीह को हासिल करूँ 3:9 और उस में पाया जाऊँ, न अपनी उस रास्तबाजी के साथ जो शरी'अत की तरफ से है, बल्कि उस रास्तबाजी के साथ जो मसीह पर ईमान लाने की वजह से है और खुदा की तरफ से ईमान पर मिलती है;

कुलुस्सियों 1:15 खुदा को देखा नहीं जा सकता, लेकिन हम मसीह को देख सकते हैं जो खुदा की सूरत और कायनात का पहलौठा है। 1:16 क्यूँकि खुदा ने उसी में सब कुछ ऐदा किया, चाहे अस्मान पर हो या जमीन पर, आँखों को नजर आए या न नजर आएँ, चाहे शाही तख्त, कब्वी, हक्मरान या इख्लियार बाले हों। सब कुछ मसीह के जरिए और उसी के लिए पैदा हुआ। 1:17 वही सब चीजों से पहले है और उसी में सब कुछ काईम रहता है। 1:18 और वह बदन यानी अपनी जमाअत का सर भी है। वही शुभआत है, और चूँकि पहले वही मुर्दों में से जी उठा इस लिए वही उन में से पहलौठा भी है ताकि वह सब बातों में पहले हो। 1:19 क्यूँकि खुदा को पसन्द आया कि मसीह में उस की पूरी मामूरी सुखन तके 1:20 और वह मसीह के जरिए सब बातों की अपने साथ सुलह करा ले, चाहे वह जमीन की हों चाहे अस्मान की। क्यूँकि उस ने मसीह के सलीब पर बहाए गए खून के बरीले से सुलह — सलामती काईम की।

1 थिस्सलुनीकियों 4:1 गरज ऐ भाइयों!, हम तुम से दरखास्त करते हैं और खुदावन्द ईसा में तुम्हें नसीहत करते हैं कि जिस तरह तुम ने हम से मुनासिब चाल चलने और खुदा को खुश करने की तालीम पाई और जिस तरह तुम चलते थी हो उसी तरह और तरब्की करते जाओ। 4:2 क्यूँकि तुम जानते हो कि हम ने तुम को खुदावन्द ईसा की तरफ से क्या क्या हक्म पहुँचाए। 4:3 चुनाँचे खुदा की मर्जी ये है कि तुम पाक बनो, यानी हरामकारी से बचे रहो। 4:4 और हर एक तुम में से पाकीजगी और इज्जत के साथ अपने ज़र्फ़ को हासिल करना जाने। 4:5 न शुरी खवाहिश के जोश से उन कौपों की तरह जो खुदा को नहीं जानती

2 थिस्सलुनीकियों 3:6 ऐ भाइयों! हम अपने खुदावन्द 'ईसा मसीह के नाम से तुम्हें हक्म देते हैं कि हर एक ऐसे भाई से किनारा करो जो बे काइदा चलता है और उस रिवायत पर अमल नहीं करता जो उस को हमारी तरफ से पहुँची। 3:7 क्यूँकि आप जानते हो कि हमारी तरह किस तरह बनना चाहिए इसलिए कि हम तुम में बे काइदा न चलते थे। 3:8 और किसी की रोटी मुफ्त न खाते थे, बल्कि मेहनत और मशक्कत से रात दिन काम करते थे ताकि तुम में से किसी पर बोझ न डालें। 3:9 इसलिए नहीं कि हम को इस्तियार न था बल्कि इसलिए कि अपने आपको तुम्हारे बास्ते नम्मा ठहराएँ ताकि तुम हमारी तरह बनो 3:10 और जब हम तुम्हारे पास थे उम वक्त भी तुम को ये हक्म देते थे; कि जिसे मेहनत करना मन्जूर न हो वो खाने भी न पाए।

1 तीमुथियुस 2:1 पस मैं सबसे पहले ये नसीहत करता हूँ, कि मुनाजातें, और दृआँ और, इल्लिजाँ और शुभ्रगुजारियों सब आदमियों के लिए की जाएँ। 2:2 बादशाहों और सब बडे मरतबे वालों के वास्ते इसलिए कि हम कमाल दीनदारी और सन्जीदारी से चैन सुकून के साथ ज़िन्दगी गुजारें। 2:3 ये हमारे मुन्जी खुदा के नज़दीक 'उम्दा' और पसन्दीदा है। 2:4 वो चाहता है कि सब आदमी नजात पाएँ, और सच्चाई की पहचान तक पहुँचे। 2:5 क्यूँकि खुदा एक है, और खुदा और इसान की बीच में दर्मियानी भी एक यानी मर्सीह ईसा जो इसान है।

2 तीमुथियुस 2:8 'ईसा मसीह को याद रख जो मुर्दों में से जी उठा है और दाऊद की नस्त से है मेरी उस खुशखबरी के मुवाफिक। 2:9 जिसके लिए मैं बदकार की तरह दुःख उठाता हूँ यहाँ तक कि कैद हूँ मगर खुदा का कलाम कैद नहीं। 2:10 इसी वजह से मैं नेक लोगों की खातिर सब कुछ सहता हूँ ताकि वो भी उस नजात को जो मर्सीह 'ईसा मैं है अबदी जलाल समेत हासिल करें। (aiōnios g166)

तीतुस 2:11 क्यूँकि खुदा का वो फजल जाहिर हुआ है, जो सब आदमियों की नजात का जरिया है, 2:12 और हमें तालीम देता है ताकि बेदीनी और दुनियावी ख्वाहिशों का इन्कार करके इस मौजूदा जहान में परहेजगारी और रास्तबाजी और दीनदारी के साथ ज़िन्दगी गुजारें; (aiōn g165) 2:13 और उस मुबारिक उमीद यानी अपने बुर्जुग खुदा और मुन्जी ईसा मसीह के जलाल के जाहिर होने के मुन्तजिर रहें। 2:14 जिस ने अपने आपको हमारे लिए दे दिया, ताकि फिदया होकर हमें हर तरह की बेदीनी से छुड़ाले, और पाक करके अपनी खास मिल्कियत के लिए ऐसी उम्मत बनाए जो नेक कामों में सरगर्म हो।

फिलेमोन 1:3 फजल और इमीनान हमारे बाप खुदा और खुदावन्द 'ईसा मसीह की तरफ से तुम्हें हासिल होता रहे। 1:4 मैं तेरी उस मुहब्बत का और ईमान का हाल सुन कर, जो सब मुकद्दसों के साथ और खुदावन्द ईसा पर है। 1:5 हमेशा अपने खुदा का शुक्र करता हूँ, और अपनी दृआओं में तुझे याद करता हूँ। 1:6 ताकि तेरे ईमान की शिरकत तुम्हारी हर खबी की पहचान में मर्सीह के वास्ते मूँ अस्सिर हो। 1:7 क्यूँकि ऐ भाइ! मुझे तेरी मुहब्बत से बहुत खुशी और तसल्ली हुई, इसलिए कि तेरी वजह से मुकद्दसों के दिल ताजा हुए हैं।

इङ्गानियों 1:1 पुराने ज़माने में खुदा ने बाप — दादा से हिस्सा — ब — हिस्सा और तरह — ब — तरह नवियों के ज़रिए कलाम करके, 1:2 इस ज़माने के आखिर में हम से बेटे के ज़रिए कलाम किया, जिसे उसने सब चीजों का वारिस ठहराया और जिसके बसीले से उसने आलम भी पैदा किए। (aiōn g165) 1:3 वो उसके जलाल की रोशनी और उसकी जात का नक्श होकर सब चीजों को अपनी कुदरत के कलाम से संभालता है। वो गुनाहों को धोकर 'आलम — ए — बाला पर खुदा की दहनी तरफ जा बैठा,

याकूब 1:16 ऐ, मेरे प्यारे भाइयों धोखा न खाना। 1:17 हर अच्छी बखिश और कामिल इनाम ऊपर से है और नूरों के बाप की तरफ से मिलता है जिस में न कोई तबदीली हो सकती है और न गरदिश के वजह से उस पर साया पड़ता है। 1:18 उसने अपनी मर्जी से हमें कलाम — ऐ — हक के बसीले से पैदा किया ताकि उसकी मुखालिफत में से हम एक तरह के फल हो।

1 पतरस 3:18 इसलिए कि मर्सीह ने भी यानी रास्तबाज ने नारास्तों के लिए, गुनाहों के बाँध एक बार दुःख उठाया ताकि हम को खुदा के पास पहुँचा एँ; वो जिसके ऐतबार से मारा गया, लेकिन स्थू के ऐतबार से तो ज़िन्दा किया गया।

2 पतरस 1:3 क्यूँकि खुदा की इलाही कुदरत ने वो सब चीजें जो ज़िन्दगी और दीनदारी के मूलाँल्लिक हैं, हमें उसकी पहचान के बसीले से 'इनायत की, जिसने हम को अपने खास जलाल और नेकी के ज़रिए से बुलाया। 1:4 जिनके ज़रिए उसने हम से कीमती और निहायत

बड़े वादे किए; ताकि उनके वसीते से तुम उस खराबी से छूटकर, जो दुनिया में बुरी रखाहिश की वजह से है, ज्ञात — ए — इलाही में शरीक हो जाओ।

1 यहून्ना 2:1 ऐ मेरे बच्चों! ये बातें मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ तुम गुनाह न करो; और अगर कोई गुनाह करे, तो बाप के पास हमारा एक मददगार मौजूद है, यानी ईसा मसीह रास्तबाज़; 2:2 और वही हमारे गुनाहों का कफ़ारा है, और न सिर्फ़ हमारे ही गुनाहों का बल्कि तमाम दुनिया के गुनाहों का भी।

2 यहून्ना 1:7 क्यैंकि बहुत से ऐसे गुमराह करने वाले दुनिया में निकल खड़े हुए हैं, जो 'ईसा मसीह के मुजस्सिम होकर आने का इकरार नहीं करते। गुमराह करनेवाला मुखालिफ़ — ए — मसीह यही है।

3 यहून्ना 1:4 मेरे लिए इससे बढ़कर और कोई खुशी नहीं कि मैं अपने बेटों को हक पर चलते हुए सुनूँ।

यहदाह 1:3 ऐ प्यारों! जिस वक्त मैं तुम को उस नजात के बारे में लिखने में पूरी कोशिश कर रहा था जिसमें हम सब शामिल हैं, तो मैंने तुम्हें ये नवीहत लिखना जरूर जाना कि तुम उस ईमान के बासे मेहनत करो जो मुकद्दसों को एक बार सौंपा गया था। 1:4 क्यैंकि कुछ ऐसे शब्दस चुपके से हम में आ पिले हैं, जिनकी इस सज्जा का झिक्र पाक कलाम में पहले से लिखा गया था: ये बेदीन हैं, और हमारे खुदा के फज़ल को बुरी आदतों से बदल डालते हैं, और हमारे वाहिद मालिक और खुदावन्द ईसा मसीह का इन्कार करते हैं।

मुकाशफा 3:19 मैं जिन जिन को 'अजीज रखता हूँ, उन सब को मलामत और हिदायत करता हूँ; पस सरगर्म हो और तैबा कर। 3:20 देख, मैं दरवाजे पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; अगर कोई मेरी आवाज सुनकर दरवाजा खोलेगा, तो मैं उसके पास अन्दर जाकर उसके साथ खाना खाऊँगा और वो मेरे साथ। 3:21 जो गालिब आए मैं उसे अपने साथ तख्त पर बिठाऊँगा, जिस तरह मैं गालिब आकर अपने बाप के साथ उसके तख्त पर बैठ गया। 3:22 जिसके कान हों वो सुने कि रुह कलीसियाओं से क्या फरमाता है।"

रीडर्स गाईड

उद्देश्य at AionianBible.org/Readers-Guide

The Aionian Bible republishes public domain and Creative Common Bible texts that are 100% free to copy and print. The original translation is unaltered and notes are added to help your study. The notes show the location of eleven special Greek and Hebrew Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and for all mankind, and the nature of afterlife destinies.

Who has the authority to interpret the Bible and examine the underlying Hebrew and Greek words? That is a good question! We read in 1 John 2:27, "*As for you, the anointing which you received from him remains in you, and you do not need for anyone to teach you. But as his anointing teaches you concerning all things, and is true, and is no lie, and even as it taught you, you remain in him.*" Every Christian is qualified to interpret the Bible! Now that does not mean we will all agree. Each of us is still growing in our understanding of the truth. However, it does mean that there is no infallible human or tradition to answer all our questions. Instead the Holy Spirit helps each of us to know the truth and grow closer to God and each other.

The Bible is a library with 66 books in the Protestant Canon. The best way to learn God's word is to read entire books. Read the book of Genesis. Read the book of John. Read the entire Bible library. Topical studies and cross-referencing can be good. However, the safest way to understand context and meaning is to read whole Bible books. Chapter and verse numbers were added for convenience in the 16th century, but unfortunately they can cause the Bible to seem like an encyclopedia. The Aionian Bible is formatted with simple verse numbering, minimal notes, and no cross-referencing in order to encourage the reading of Bible books.

Bible reading must also begin with prayer. Any Christian is qualified to interpret the Bible with God's help. However, this freedom is also a responsibility because without the Holy Spirit we cannot interpret accurately. We read in 1 Corinthians 2:13-14, "*And we speak of these things, not with words taught by human wisdom, but with those taught by the Spirit, comparing spiritual things with spiritual things. Now the natural person does not receive the things of the Spirit of God, for they are foolishness to him, and he cannot understand them, because they are spiritually discerned.*" So we cannot understand in our natural self, but we can with God's help through prayer.

The Holy Spirit is the best writer and he uses literary devices such as introductions, conclusions, paragraphs, and metaphors. He also writes various genres including historical narrative, prose, and poetry. So Bible study must spiritually discern and understand literature. Pray, read, observe, interpret, and apply. Finally, "*Do your best to present yourself approved by God, a worker who does not need to be ashamed, properly handling the word of truth.*" 2 Timothy 2:15. "*God has granted to us his precious and exceedingly great promises; that through these you may become partakers of the divine nature, having escaped from the corruption that is in the world by lust. Yes, and for this very cause adding on your part all diligence, in your faith supply moral excellence; and in moral excellence, knowledge; and in knowledge, self-control; and in self-control patience; and in patience godliness; and in godliness brotherly affection; and in brotherly affection, love. For if these things are yours and abound, they make you to be not idle nor unfruitful to the knowledge of our Lord Jesus Christ,*" 2 Peter 1:4-8.

ଲଗତ

ଉଦ୍‌ଦୃ ଅଟ AionianBible.org/Glossary

The Aionian Bible un-translates and instead transliterates eleven special words to help us better understand the extent of God's love for individuals and all mankind, and the nature of afterlife destinies. The original translation is unaltered and a note is added to 64 Old Testament and 200 New Testament verses. Compare the meanings below to the Strong's Concordance and Glossary definitions.

Abyssos g12

Greek: proper noun, place

Usage: 9 times in 3 books, 6 chapters, and 9 verses

Meaning:

Temporary prison for special fallen angels such as Apollyon, the Beast, and Satan.

aīdios g126

Greek: adjective

Usage: 2 times in Romans 1:20 and Jude 6

Meaning:

Lasting, enduring forever, eternal.

aiōn g165

Greek: noun

Usage: 127 times in 22 books, 75 chapters, and 102 verses

Meaning:

A lifetime or time period with a beginning and end, an era, an age, the completion of which is beyond human perception, but known only to God the creator of the aiōns, Hebrews 1:2. Never meaning simple endless or infinite chronological time in Greek usage. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs.

aiōnios g166

Greek: adjective

Usage: 71 times in 19 books, 44 chapters, and 69 verses

Meaning:

From start to finish, pertaining to the age, lifetime, entirety, complete, or even consummate. Never meaning simple endless or infinite chronological time in Koine Greek usage. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs.

eleēsē g1653

Greek: verb, aorist tense, active voice, subjunctive mood, 3rd person singular

Usage: 1 time in this conjugation, Romans 11:32

Meaning:

To have pity on, to show mercy. Typically, the subjunctive mood indicates possibility, not certainty. However, a subjunctive in a purpose clause is a resulting action as certain as the causal action. The subjunctive in a purpose clause functions as an indicative, not an optative. Thus, the grand conclusion of grace theology in Romans 11:32 must be clarified. God's mercy on all is not a possibility, but a certainty. See ntgreek.org.

Geenna g1067

Greek: proper noun, place

Usage: 12 times in 4 books, 7 chapters, and 12 verses

Meaning:

Valley of Hinnom, Jerusalem's trash dump, a place of ruin, destruction, and judgment in this life, or the next, though not eternal to Jesus' audience.

Hades g86

Greek: proper noun, place

Usage: 11 times in 5 books, 9 chapters, and 11 verses

Meaning:

Synonomous with Sheol, though in New Testament usage Hades is the temporal place of punishment for deceased unbelieving mankind, distinct from Paradise for deceased believers.

Limnē Pyr g3041 g4442

Greek: proper noun, place

Usage: Phrase 5 times in the New Testament

Meaning:

Lake of Fire, final punishment for those not named in the Book of Life, prepared for the Devil and his angels, Matthew 25:41.

Sheol h7585

Hebrew: proper noun, place

Usage: 66 times in 17 books, 50 chapters, and 64 verses

Meaning:

The grave or temporal afterlife world of both the righteous and unrighteous, believing and unbelieving, until the general resurrection.

Tartaroō g5020

Greek: proper noun, place

Usage: 1 time in 2 Peter 2:4

Meaning:

Temporary prison for particular fallen angels awaiting final judgment.



Mesopotamia

Haran

Damascus

Mediterranean
Sea

Babylon

Salem

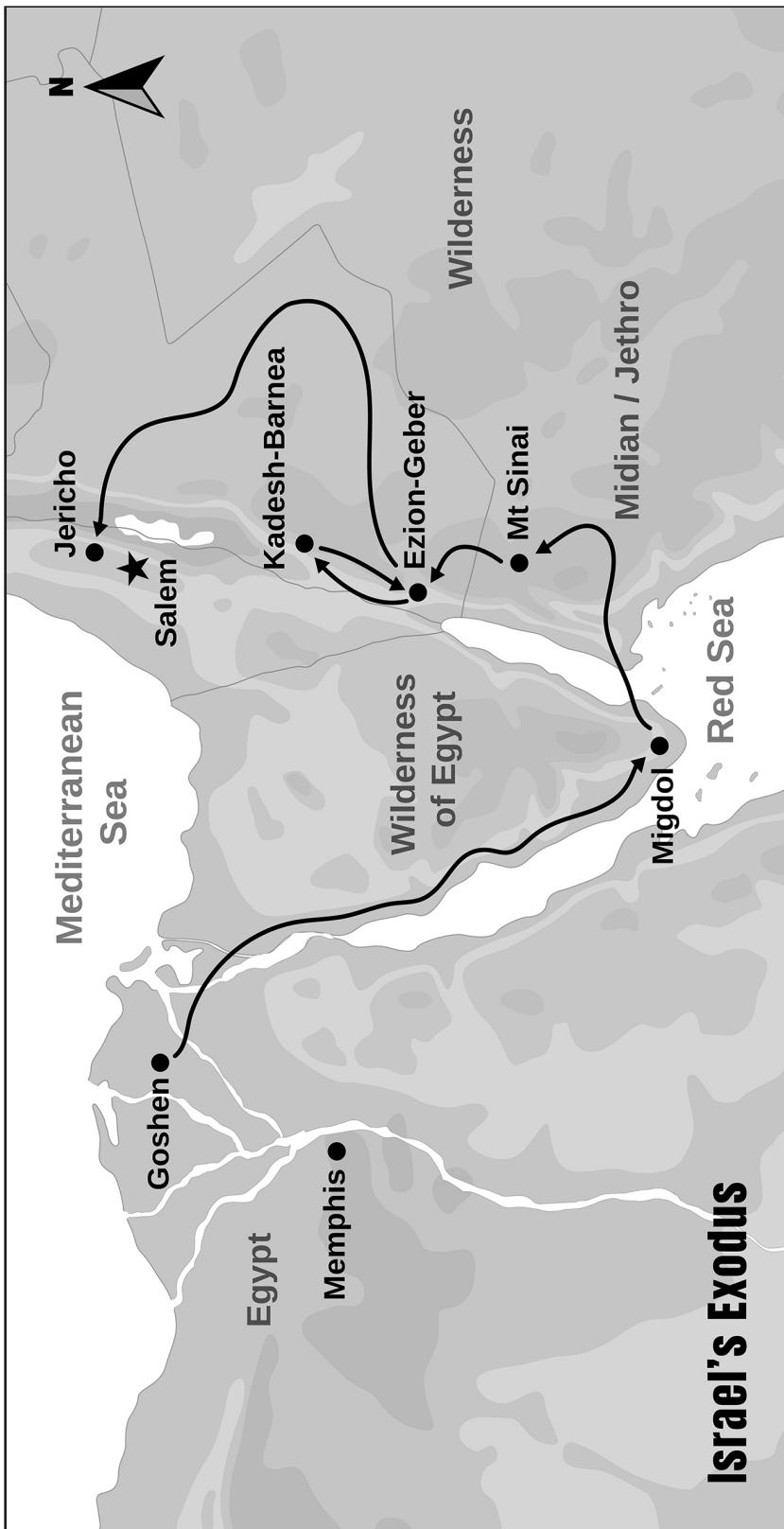
Egypt

Persian
Gulf

Abraham's Journey

यह ईमान का काम था कि अब्राहम ने खुदा की सुनी जब उस ने उसे बुला कर कहा कि वह एक ऐसे मुल्क में जाएं जो उसे बात में मीरास में मिलेगा। है,
वह अपने मुल्क को छोड़ कर रवाना हुआ, हातोंकि उसे मालमूत न था कि वह कहाँ जा रहा है। - इतनिये 11:8

Israel's Exodus



और जब मिस्र-अैरन ने उम्म लोगों को जाने की इच्छा रखी तो खुला इनको मिलितियों के मुल्क के रस्ते से नहीं ले गया, आपचे उपर से न-वर्दीक पहता; कर्विंग खुदा ने कहा,
ऐसा न हो कि यह लोग लाडाई— शिराई देख कर पछानें लों और मिथ को लौट जाएँ। - खक्स 13:17



Mediterranean Sea

Sidon
Tyre
Caesarea-Philippi

Galilee
Capernaum
Bethsaida

Cana
Nazareth

Sychar

Samaria

Ephraim

Jerusalem ★
Bethany

Bethlehem

Judea

► Egypt

Decapolis

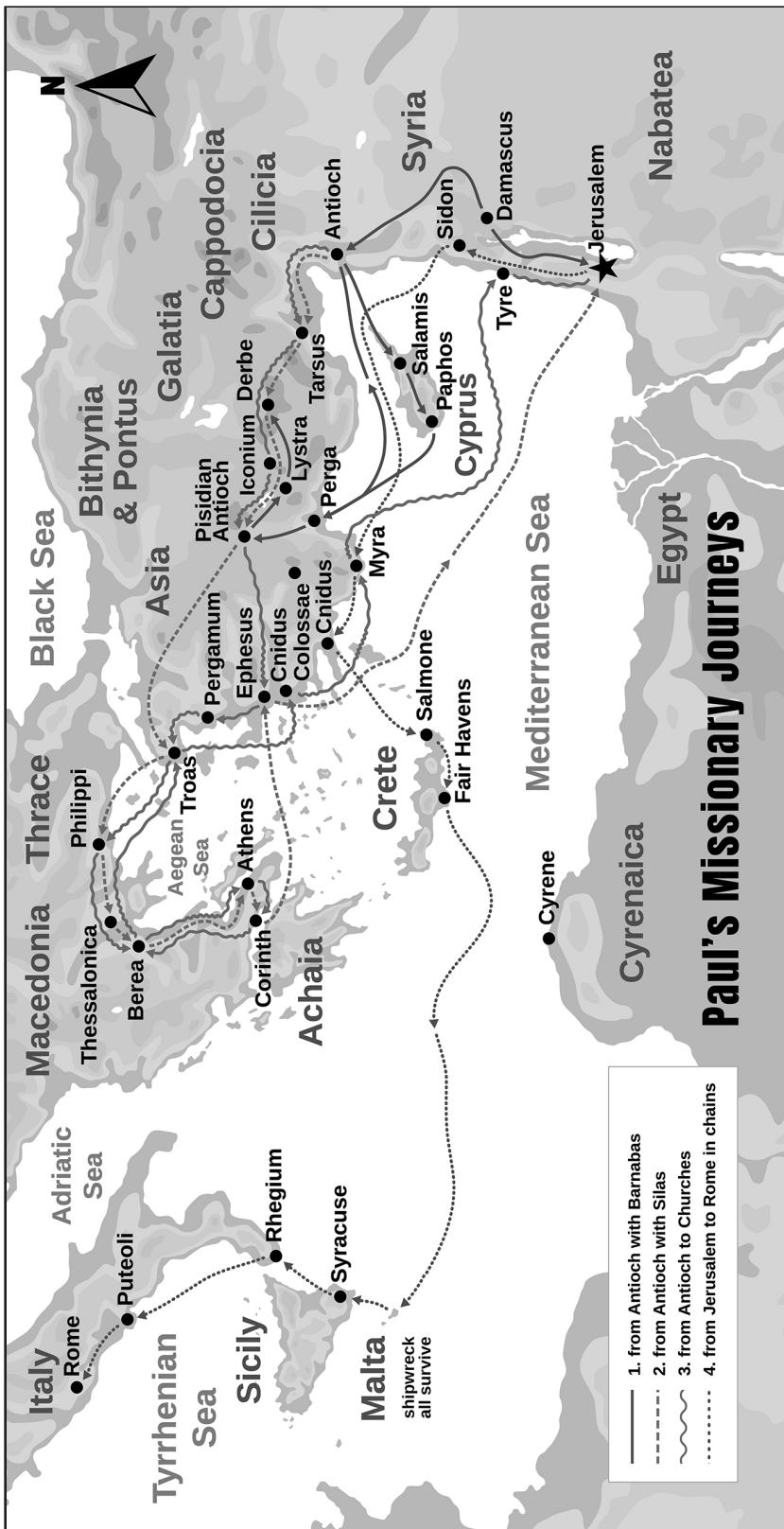
Peraea

Jericho

Jesus' Journeys

कथैक इन — ए आदम भी इसलिए नहीं आया कि खिदमत ले बल्कि इसलिए कि खिदमत करे और अपनी जान बहुरों के बदले फिदया में दे। - मरकुरा 10:45

Paul's Missionary Journeys



पौलस की तरफ से जो ईसा मसीह का बनावट है और रस्ल होने के लिए बुलाया गया और खुदा की उम खुशखबरी के लिए अलग किया गया - रेमियो 1:1

Creation 4004 B.C.

Adam and Eve created	4004
Tubal-cain forges metal	3300
Enoch walks with God	3017
Methuselah dies at age 969	2349
God floods the Earth	2349
Tower of Babel thwarted	2247
Abraham sojourns to Canaan	1922
Jacob moves to Egypt	1706
Moses leads Exodus from Egypt	1491
Gideon judges Israel	1245
Ruth embraces the God of Israel	1168
David installed as King	1055
King Solomon builds the Temple	1018
Elijah defeats Baal's prophets	896
Jonah preaches to Nineveh	800
Assyrians conquer Israelites	721
King Josiah reforms Judah	630
Babylonians capture Judah	605
Persians conquer Babylonians	539
Cyrus frees Jews, rebuilds Temple	537
Nehemiah rebuilds the wall	454
Malachi prophesies the Messiah	416
Greeks conquer Persians	331
Seleucids conquer Greeks	312
Hebrew Bible translated to Greek	250
Maccabees defeat Seleucids	165
Romans subject Judea	63
Herod the Great rules Judea	37

(The Annals of the World, James Usher)



Jesus Christ born 4 B.C.

New Heavens and Earth



- Christ returns for his people
- 1956 Jim Elliot martyred in Ecuador
- 1830 John Williams reaches Polynesia
- 1731 Zinzendorf leads Moravian mission
- 1614 Japanese kill 40,000 Christians
- 1572 Jesuits reach Mexico
- 1517 Martin Luther leads Reformation
- 1455 Gutenberg prints first Bible
- 1323 Franciscans reach Sumatra
- 1276 Ramon Llull trains missionaries
- 1100 Crusades tarnish the church
- 1054 The Great Schism
- 997 Adalbert martyred in Prussia
- 864 Bulgarian Prince Boris converts
- 716 Boniface reaches Germany
- 635 Alopen reaches China
- 569 Longinus reaches Alodia / Sudan
- 432 Saint Patrick reaches Ireland
- 397 Carthage ratifies Bible Canon
- 341 Ulfilas reaches Goth / Romania
- 325 Niceae proclaims God is Trinity
- 250 Denis reaches Paris, France
- 197 Tertullian writes Christian literature
- 70 Titus destroys the Jewish Temple
- 61 Paul imprisoned in Rome, Italy
- 52 Thomas reaches Malabar, India
- 39 Peter reaches Gentile Cornelius
- 33 Holy Spirit empowers the Church

(Wikipedia, Timeline of Christian missions)

Resurrected 33 A.D.

What are we? ►			Genesis 1:26 - 2:3	
How are we sinful? ►			Romans 5:12-19	
Where are we?			Innocence	
			Eternity Past	Creation 4004 B.C.
Who are we? ►	God	Father	John 10:30 God's perfect fellowship	Genesis 1:31 God's perfect fellowship with Adam in The Garden of Eden
		Son		
		Holy Spirit		
	Mankind	Living	Genesis 1:1 No Creation No people	Genesis 1:31 No Fall No unholy Angels
		Deceased believing		
		Deceased unbelieving		
	Angels	Holy		
		Imprisoned		
		Fugitive		
		First Beast		
		False Prophet		
		Satan		
Why are we? ►			Romans 11:25-36, Ephesian 2:7	

Mankind is created in God's image, male and female He created us

Sin entered the world through Adam and then death through sin

When are we?



Fallen				Glory				
Fall to sin No Law	Moses' Law 1500 B.C.	Christ 33 A.D.	Church Age Kingdom Age	New Heavens and Earth				
1 Timothy 6:16 Living in unapproachable light				Acts 3:21 Philippians 2:11 Revelation 20:3				
John 8:58 Pre-incarnate		John 1:14 Incarnate	Luke 23:43 Paradise	God's perfectly restored fellowship with all Mankind praising Christ as Lord in the Holy City				
Psalm 139:7 Everywhere		John 14:17 Living in believers						
Ephesians 2:1-5 Serving the Savior or Satan on Earth								
Luke 16:22 Blessed in Paradise								
Luke 16:23, Revelation 20:5,13 Punished in Hades until the final judgment				Matthew 25:41 Revelation 20:10				
Hebrews 1:14 Serving mankind at God's command								
2 Peter 2:4, Jude 6 Imprisoned in Tartarus								
1 Peter 5:8, Revelation 12:10 Rebelling against Christ Accusing mankind				Lake of Fire prepared for the Devil and his Angels				
		Revelation 20:13 Thalaasa						
		Revelation 19:20 Lake of Fire						
		Revelation 20:2 Abyss						

For God has bound all over to disobedience in order to show mercy to all

मुकर्र

उद्ध at AionianBible.org/Destiny

The Aionian Bible shows the location of eleven special Greek and Hebrew Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and for all mankind, and the nature of after-life destinies. The underlying Hebrew and Greek words typically translated as *Hell* show us that there are not just two after-life destinies, Heaven or Hell. Instead, there are a number of different locations, each with different purposes, different durations, and different inhabitants. Locations include 1) Old Testament *Sheol* and New Testament *Hadēs*, 2) *Geenna*, 3) *Tartaroō*, 4) *Abyssos*, 5) *Limnē Pyr*, 6) *Paradise*, 7) *The New Heaven*, and 8) *The New Earth*. So there is reason to review our conclusions about the destinies of redeemed mankind and fallen angels.

The key observation is that fallen angels will be present at the final judgment, 2 Peter 2:4 and Jude 6. Traditionally, we understand the separation of the Sheep and the Goats at the final judgment to divide believing from unbelieving mankind, Matthew 25:31-46 and Revelation 20:11-15. However, the presence of fallen angels alternatively suggests that Jesus is separating redeemed mankind from the fallen angels. We do know that Jesus is the helper of mankind and not the helper of the Devil, Hebrews 2. We also know that Jesus has atoned for the sins of all mankind, both believer and unbeliever alike, 1 John 2:1-2. Deceased believers are rewarded in Paradise, Luke 23:43, while unbelievers are punished in Hades as the story of Lazarus makes plain, Luke 16:19-31. Yet less commonly known, the punishment of this selfish man and all unbelievers is before the final judgment, is temporal, and is punctuated when Hades is evacuated, Revelation 20:13. So is there hope beyond Hades for unbelieving mankind? Jesus promised, "*the gates of Hades will not prevail*," Matthew 16:18. Paul asks, "*Hades where is your victory?*" 1 Corinthians 15:55. John wrote, "*Hades gives up*," Revelation 20:13.

Jesus comforts us saying, "*Do not be afraid*," because he holds the keys to *unlock* death and Hades, Revelation 1:18. Yet too often our Good News sounds like a warning to "*be afraid*" because Jesus holds the keys to *lock* Hades! Wow, we have it backwards! Hades will be evacuated! And to guarantee hope, once emptied, Hades is thrown into the Lake of Fire, never needed again, Revelation 20:14.

Finally, we read that anyone whose name is not written in the Book of Life is thrown into the Lake of Fire, the second death, with no exit ever mentioned or promised, Revelation 21:1-8. So are those evacuated from Hades then, "*out of the frying pan, into the fire?*" Certainly, the Lake of Fire is the destiny of the Goats. But, do not be afraid. Instead, read the Bible's explicit mention of the purpose of the Lake of Fire and the identity of the Goats, "*Then he will say also to those on the left hand, 'Depart from me, you cursed, into the consummate fire which is prepared for... the devil and his angels,'*" Matthew 25:41. Bad news for the Devil. Good news for all mankind!

Faith is not a pen to write your own name in the Book of Life. Instead, faith is the glasses to see that the love of Christ for all mankind has already written our names in Heaven. "*If the first fruit is holy, so is the lump*," Romans 11:16. Though unbelievers will suffer regrettable punishment in Hades, redeemed mankind will never enter the Lake of Fire, prepared for the devil and his angels. And as God promised, all mankind will worship Christ together forever, Philippians 2:9-11.

Disciple All Nations

पस एम जा कर सब कौमों को शारीर बनाओ और उन को बाप और बेटे और स्त्र — उत्तर — कुरुक्षेत्र के नाम से अपतिष्ठा दो। — मर्ति 28:19

